ISBN: 978-93-5659-325-1

प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (बाँदा जनपद के विशेष संदर्भ में)

राजीव अग्रवाल
रमाकान्त तिवारी
वीरेन्द्र कुमार

प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल:एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ० राजीव अग्रवाल

डीन–शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

रमाकान्त तिवारी

एम०ए०(हिन्दी), एम०एड०

वीरेन्द्र कुमार

बी०ए०, बी०एड०

प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (बाँदा जनपद के विशेष संदर्भ में)

राजीव अग्रवाल

रमाकान्त तिवारी

वीरेन्द्र कुमार

E-Book संस्करण: 2022

मूल्य: 99

ISBN: 978-93-5659-325-1

प्रकाशक:

वीरेन्द्र कुमार

ग्राम –बगैहा, पोस्ट–घुरेटनपुर, थाना–कर्वी, चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

पिन कोड—210202

मो.न.—9793465905

ईमेल —virendraadc123@gmail.com

प्राक्कथन

आज वर्तमान समय सभ्यता के विकासक्रम में भाषा के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। वर्तमान में अंग्रेजी को ज्ञान का मानक सिद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है। स्वतन्त्रता के पश्चात विचार किया गया कि भारत विभिन्न परम्पराओं एवं संस्कृतियों का देश है और भौगोलिक रूप से बहुत बड़ा होने के कारण सभी को एक सी परम्पराओं में बांध पाना अत्यंत कठिन के साथ-साथ दुम्कर कार्य था। एक राष्ट्र के लिए सभी को एक सूत्र में बांधने के लिए भाषा एक बहुत ही महत्वपूर्ण माध्यम है, जिसके द्वारा सभी को एक सूत्र में बांधपाने का स्तुत्य प्रयास किया जा सकता है। हमारे विधि वेत्ताओं ने यह प्रयास 'हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देकर किया। क्योंकि राज्यों का एक संघ है तथा जिसमें सम्मिलित किसी भी राज्य को अलग होने का कोई अधिकार नहीं है| अतः सभी को एक राज्य से दूसरे राज्य में जाना ही होगा, इसके लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होगी जिसमें व्यक्ति एक-दूसरे के भावों को समझ सके और यह कार्य करने की अद्भुत शक्ति हिन्दी के पास ही है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का शीर्षक "प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (बाँदा जिले के विशेष संदर्भ में)" है इसको पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में हिंदी भाषा का इतिहास, हिंदी भाषा शिक्षण की समस्याएं, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन का परिसीमांकन एवं अध्ययन के महत्व का वर्णन किया गया।

द्वितीय अध्याय में हिंदी शिक्षण से संबंधित कतिपय शोध अध्ययन की समीक्षा एवं अध्ययन से संबंधित समाचार,लेख को समझाया गया है।

तृतीय अध्याय में शोध विधि,प्रतिदर्श विधि,अध्ययन के चर,प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण, परीक्षणों का प्रशासन का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण निर्वचन एवं परिकल्पना का परीक्षण किया गया है।

पंचम अध्याय में शोध अध्ययन के निष्कर्ष, शैक्षिक उपयोगिता, एवं अध्ययन के सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित हैं। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है; जब तक की वह जनसामान्य के लिए सुलभ ना हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक मानव समाज के कल्याण के लिए सहायक सिद्ध होगी। इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थसूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनाँक —02/08/2022

स्थान—अतर्रा

राजीव अग्रवाल

रमाकान्त तिवारी

वीरेन्द्र कुमार

विषय-सूची

तालिका सूची

चित्र सूची

प्रथम-अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

किसी भी देश का उच्चतम विकास उस देश कि शिक्षा प्रणाली पर आधारित होता है| शिक्षा श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण करती है और ये नागरिक ही देश का भविष्य हैं| शिक्षा केवल साक्षरता नहीं अपितु व्यक्ति के आंतरिक गुणों का प्रकटीकरण भी है| उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास है और परिस्थितियों के साथ समायोजन करने कि क्षमता क्षमता भी है|

शिक्षा विषय और भाषा दोनों को अपना आधार बनाती है| भाषा जिसके माध्यम से हम शिक्षा देते हैं और विषय जिसकी हम शिक्षा देते हैं| भाषा का परिमार्जित रूप ही साहित्य में प्रकट होता है| इस रूप में साहित्य भाषा की चरम परिणति है| भाषा सीखे बिना साहित्य तक नहीं पहुंचा जा सकता| भाषा साहित्य को सीखने का एक माध्यम भी है और एक विषय भी है| भाषा व्यवहार मानव को मनुष्य बनाता है| कहा भी गया है कि साहित्य, संगीत और कला से विहीन व्यक्ति पूंछ और सींगों से विहीन पशु के समान होता है|

जहां तक भाषा सीखने और सिखाने का प्रश्न है मातृभाषा के रूप में भाषा को सीखने कि आवश्यकता नहीं समझी जाती| यह परिस्थिति और वातावरण से स्वयं अर्जित हो जाती है| औपचारिक रूप से इसका शिक्षण केवल विद्यालय में ही होता है| यह भाषा प्रयत्न पूर्वक अर्जित नहीं की जाती है बल्कि स्वतः ही हमारे व्यवहार का अंग बन जाती है| यही कारण है कि प्राथमिक कक्षा से ही हम मातृभाषा के रूप में साहित्य का अध्ययन प्रारम्भ कर देते हैं|

भाषा शिक्षण का अर्थ आदत के रूप में भाषाई कौशलों का विकास करना है| भाषा शिक्षण में मुख्यतः कौशल शिक्षण पर अधिक बल देना आवश्यक है जिससे छात्र सुनी हुई भाषा को समझ सकें, उसे शुद्ध रूप में बोल सकें,

उसका उच्चारण शुद्ध रूप में कर सकें, प्रभावी तथा सहज रूप में लिखित सामग्री को पढ़ कर समझ सकें तथा अपने भावों और विचारों को शुद्ध तथा प्रभावपूर्ण ढंग से लिख सकें|

भाषाई कौशल के विकास कि सफलता तथा असफलता कुछ हद तक अध्यापक की कार्यशैली पर निर्भर करती है| अध्यापक परिस्थितियों के अनुकूल नई-नई विधियों तथा प्रविधियों के माध्यम से छात्रों में भाषाई कौशलों का विकास करता है परन्तु छात्र में अध्ययन के प्रति स्वतः ही जागृति एवं प्रेरणा होती है तो विधियों एवं प्रविधियों का महत्त्व कम हो जाता है|

अन्य भाषा के रूप में हिन्दी का शिक्षण-प्रशिक्षण देश के सभी राज्यों में अनिवार्य है| हिन्दी देश को जोड़ने वाली भाषा है| पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के सभी सामान्य जनों के संपर्क व्यवहार कि भाषा हिन्दी है| साथ ही यह देश की राजभाषा भी है| इसे देश की राष्ट्रभाषा बनाने के लिए सरकार सदैव प्रयत्नशील है|

सम्पूर्ण भारत में (तमिलनाडु के अतिरिक्त) मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन द्वितीय भाषा तृतीय भाषा तथा विदेशी भाषा के रूप में हो रहा है| द्वितीय और तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन प्रत्येक राज्य की अपनी शिक्षा नीति के अनुसार अलग-अलग कक्षा स्तर से आरंभ होता है|

वर्तमान में तमिलनाडु (केवल सरकारी विद्यालयों) के अतिरिक्त दक्षिण भारत की विद्यालयीन शिक्षा में हिन्दी द्वितीय अथवा तृतीय भाषा के रूप में सीखी-सिखाई जाती है| तमिलनाडु के सरकारी विद्यालयों के अतिरिक्त वहाँ के प्राइवेट विद्यालयों में आजकल हिन्दी की पढ़ाई होने लगी है| आंध्र-प्रदेश में तृतीय भाषा के रूप में कक्षा-8 से 10 तक, कर्नाटक और केरल में तृतीय भाषा के रूप में कक्षा 6 से 10 तक पढ़ाई जाती है| साथ ही प्राइवेट विद्यालयों (भाषाई अल्पसंख्यकों के द्वारा संचालित विद्यालयों में) हिन्दी की पढ़ाई प्रथम भाषा के रूप में होती है| कर्नाटक के सरकारी विद्यालयों में हिन्दी तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है| पाँच वर्षों की पढ़ाई के बावजूद भी छात्र अपनी अभिव्यक्ति कौशल में संतोषजनक सक्षम नहीं हो पाते हैं| जैसे-जैसे वे हिन्दी में बोला हुआ और लिखे हुये अंश को समझने में सक्षम तो हो जाते हैं परंतु अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है| चाहे वह वाक्य संरचना संबंधी हो अथवा उच्चारण संबंधी वे सर्वदा पीछे रह जाते हैं| हिन्दी अध्ययन के

संबंध में उत्तर-प्रदेश सहित सम्पूर्ण हिन्दी भाषी क्षेत्र में कक्षा-1 से लेकर 12 तक हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है और इसी कारण इन प्रदेशों के विद्यार्थी लेखन क्षमता से लेकर भावभिव्यक्ति क्षमता तक हमेशा ही आगे रहते हैं|

1.1.1भाषा

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और इसके लिये हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा मुख से उच्चारित होनेवाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है। किसी भाषा की सभी ध्वनियों के प्रतिनिधि स्वन एक व्यवस्था में मिलकर एक सम्पूर्ण भाषा की अवधारणा बनाते हैं। व्यक्त नाद की वह समष्टि जिसकी सहायता से किसी एक समाज या देश के लोग अपने मनोगत भाव तथा विचार एक दूसरे से प्रकट करते हैं। मुख से उच्चारित होनेवाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है जैसे - बोली,जबान,वाणी विशेष।

सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा आभ्यंतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आभ्यंतर के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है।

इस समय सारे संसार में प्रायः हजारों प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं जो साधारणतः अपने भाषियों को छोड़ और लोगों की समझ में नहीं आतीं। अपने समाज या देश की भाषा तो लोग बचपन से ही अभ्यस्त होने के कारण अच्छी तरह जानते हैं, पर दूसरे देशों या समाजों की भाषा बिना अच्छी़ तरह सीखे नहीं आती। भाषाविज्ञान के ज्ञाताओं ने भाषाओं के आर्य, सेमेटिक, हेमेटिक आदि कई वर्ग स्थापित करके उनमें से प्रत्येक की अलग अलग शाखाएँ स्थापित की हैं और उन शाखाओं के भी अनेक वर्ग-उपवर्ग बनाकर उनमें बड़ी बड़ी भाषाओं और उनके प्रांतीय भेदों, उपभाषाओं अथवा बोलियों को रखा है। जैसे हिंदी भाषा भाषाविज्ञान की दृष्टि से भाषाओं के आर्य वर्ग की भारतीय आर्य शाखा की एक भाषा है; और ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आदि इसकी उपभाषाएँ या बोलियाँ हैं। पास-पास बोली जानेवाली अनेक उपभाषाओं या बोलियों में बहुत कुछ साम्य होता है; और उसी साम्य के आधार पर उनके वर्ग

या कुल स्थापित किए जाते हैं। यही बात बड़ी बड़ी भाषाओं में भी है जिनका पारस्परिक साम्य उतना अधिक तो नहीं, पर फिर भी बहुत कुछ होता है।

संसार की सभी बातों की भाँति भाषा का भी मनुष्य की आदिम अवस्था के अव्यक्त नाद से अब तक बराबर विकास होता आया है; और इसी विकास के कारण भाषाओं में सदा परिवर्तन होता रहता है। भारतीय आर्यों की वैदिक भाषा से संस्कृत और प्राकृतों का, प्राकृतों से अपभ्रंशों का और अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है।

प्रायः भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिये लिपियों की सहायता लेनी पड़ती है। भाषा और लिपि, भाव व्यक्तीकरण के दो अभिन्न पहलू हैं। एक भाषा कई लिपियों में लिखी जा सकती है और दो या अधिक भाषाओं की एक ही लिपि हो सकती है। उदाहरणार्थ पंजाबी, गुरूमुखी तथा शाहमुखी दोनो में लिखी जाती है जबकि हिन्दी, मराठी, संस्कृत, नेपाली इत्यादि सभी देवनागरी में लिखी जाती है।

भाषा को प्राचीन काल से ही परिभाषित करने की कोशिश की जाती रही है। इसकी कुछ मुख्य परिभाषाएं निम्नलिखित हैं-

- भाषा शब्द संस्कृत के भाष् धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाय।
- प्लेटो ने सोफिस्ट में विचार और भाषा के संबंध में लिखते हुए कहा है कि विचार और भाषा में थोड़ा ही अंतर है। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है और वही शब्द जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।
- स्वीट के अनुसार ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।
- वेंद्रीय कहते हैं कि भाषा एक तरह का चिह्न है। चिह्न से आशय उन प्रतीकों से है जिनके द्वारा मानव अपना विचार दूसरों के समक्ष प्रकट करता है। ये प्रतीक कई प्रकार के होते हैं जैसे नेत्रग्राह्य, श्रोत्र ग्राह्य और स्पर्श ग्राह्य। वस्तुतः भाषा की दृष्टि से श्रोत्रग्राह्य प्रतीक ही सर्वश्रेष्ठ है।

- ब्लाक तथा ट्रेगर- भाषा यादृच्छिक भाष् प्रतिकों का तंत्र है जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह सहयोग करता है।
- स्त्रुत्वा – भाषा यादृच्छिक भाष् प्रतीकों का तंत्र है जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह के सदस्य सहयोग एवं संपर्क करते हैं।
- इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका - भाषा को यादृच्छिक भाष् प्रतिकों का तंत्र है जिसके द्वारा मानव प्राणी एक सामाजिक समूह के सदस्य और सांस्कृतिक साझीदार के रूप में एक सामाजिक समूह के सदस्य संपर्क एवं संप्रेषण करते हैं।

''भाषा यादृच्छिक वाचिक ध्वनि-संकेतों की वह पद्धति है, जिसके द्वारा मानव परम्परा विचारों का आदान-प्रदान करता है।'' स्पष्ट ही इस कथन में भाषा के लिए चार बातों पर ध्यान दिया गया है-

- भाषा एक पद्धति है, यानी एक सुसम्बद्ध और सुव्यवस्थित योजना या संघटन है, जिसमें कर्ता, कर्म, क्रिया, आदि व्यवस्थिति रूप में आ सकते हैं।
- भाषा संकेतात्कम है अर्थात् इसमे जो ध्वनियाँ उच्चारित होती हैं, उनका किसी वस्तु या कार्य से सम्बन्ध होता है। ये ध्वनियाँ संकेतात्मक या प्रतीकात्मक होती हैं।
- भाषा वाचिक ध्वनि-संकेत है, अर्थात् मनुष्य अपनी वागिन्द्रिय की सहायता से संकेतों का उच्चारण करता है, वे ही भाषा के अंतर्गत आते हैं।
- भाषा यादृच्छिक संकेत है। यादृच्छिक से तात्पर्य है - ऐच्छिक, अर्थात् किसी भी विशेष ध्वनि का किसी विशेष अर्थ से मौलिक अथवा दार्शनिक सम्बन्ध नहीं होता। प्रत्येक भाषा में किसी विशेष ध्वनि को किसी विशेष अर्थ का वाचक 'मान लिया जाता' है। फिर वह उसी अर्थ के लिए रूढ़ हो जाता है। कहने का अर्थ यह है कि वह परम्परानुसार उसी अर्थ का वाचक हो जाता है। दूसरी भाषा में उस अर्थ का वाचक कोई दूसरा शब्द होगा।

हम व्यवहार में यह देखते हैं कि भाषा का सम्बन्ध एक व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण विश्व तक है। व्यक्ति और समाज के बीच व्यवहार में आने वाली इस परम्परा से अर्जित सम्पत्ति के अनेक रूप हैं। समाज सापेक्षता भाषा के लिए अनिवार्य है, ठीक वैसे ही जैसे व्यक्ति सापेक्षता। भाषा संकेतात्मक होती है अर्थात् वह एक 'प्रतीक-स्थिति' है। इसकी प्रतीकात्मक

गतिविधि के चार प्रमुख संयोजक हैः दो व्यक्ति-एक वह जो संबोधित करता है, दूसरा वह जिसे संबोधित किया जाता है, तीसरी संकेतित वस्तु और चौथी-प्रतीकात्मक संवाहक जो संकेतित वस्तु की ओर प्रतिनिधि भंगिमा के साथ संकेत करता है।

विकास की प्रक्रिया में भाषा का दायरा भी बढ़ता जाता है। यही नहीं एक समाज में एक जैसी भाषा बोलने वाले व्यक्तियों का बोलने का ढंग, उनकी उच्चारण-प्रक्रिया, शब्द-भंडार, वाक्य-विन्यास आदि अलग-अलग हो जाने से उनकी भाषा में पर्याप्त अन्तर आ जाता है। इसी को **शैली** कह सकते हैं।

1.1.2 भाषा विभाषा और बोली

बोली, विभाषा और भाषा का मौलिक अन्तर बता पाना कठिन है, क्योंकि इसमें प्रमुख अन्तर व्यवहार-क्षेत्र के विस्तार पर निर्भर है। वैयक्तिक विविधता के चलते एक समाज में चलने वाली एक ही भाषा के कई रूप दिखाई देते हैं। मुख्य रूप से भाषा के इन रूपों को हम इस प्रकार देखते हैं-

- बोली,
- विभाषा,
- भाषा (अर्थात् परिनिष्ठित या आदर्श भाषा)

- **बोली**

बोली और भाषा में अन्तर होता है। यह भाषा की छोटी इकाई है। इसका सम्बन्ध ग्राम या मण्डल अर्थात सीमित क्षेत्र से होता है। इसमें प्रधानता व्यक्तिगत बोलचाल के माध्यम की रहती है और देशज शब्दों तथा घरेलू शब्दावली का बाहुल्य होता है। यह मुख्य रूप से बोलचाल की भाषा है, इसका रूप (लहजा) कुछ-कुछ दूरी पर बदलते पाया जाता है तथा लिपिबद्ध न होने के कारण इसमें साहित्यिक रचनाओं का अभाव रहता है। व्याकरणिक दृष्टि से भी इसमें विसंगतियाँ पायी जाती है।

- **विभाषा**

विभाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा विस्तृत होता है यह एक प्रान्त या उपप्रान्त में प्रचलित होती है। एक विभाषा में स्थानीय भेदों के आधार पर कई बोलियाँ प्रचलित रहती हैं। विभाषा में साहित्यिक रचनाएँ मिल सकती हैं।

- **भाषा**

भाषा या परिनिष्ठित भाषा अथवा आदर्श भाषा, विभाषा की विकसित स्थिति हैं। इसे **राष्ट्र-भाषा** या **टकसाली-भाषा** भी कहा जाता है।

प्रायः देखा जाता है कि विभिन्न विभाषाओं में से कोई एक विभाषा अपने गुण-गौरव, साहित्यिक अभिवृद्धि, जन-सामान्य में अधिक प्रचलन आदि के आधार पर राजकार्य के लिए चुन ली जाती है और उसे **राजभाषा** के रूप में या **राष्ट्रभाषा** घोषित कर दिया जाता है।

1.1.3 राज्यभाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा

किसी प्रदेश की राज्य सरकार के द्वारा उस राज्य के अंतर्गत प्रशासनिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे **राज्यभाषा** कहते हैं। यह भाषा सम्पूर्ण प्रदेश के अधिकांश जन-समुदाय द्वारा बोलीऔर समझी जाती है। प्रशासनिक दृष्टि से सम्पूर्ण राज्य में सर्वत्र इस भाषा को महत्त्व प्राप्त रहता है।

भारतीय संविधान में राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों के लिए हिन्दी के अतिरिक्त २२ अन्य भाषाएं **राजभाषा** स्वीकार की गई हैं। राज्यों की विधानसभाएं बहुमत के आधार पर किसी एक भाषा को अथवा चाहें तो एक से अधिक भाषाओं को अपने राज्य की राज्यभाषा घोषित कर सकती हैं।

राष्ट्रभाषा सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है। प्राय: वह अधिकाधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा होती है। प्राय: राष्ट्रभाषा ही किसी देश की राजभाषा होती है।

1.1.4 हिन्दी भाषा का इतिहास

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। हिन्दी भाषा व साहित्य के जानकार अपभ्रंश की अंतिम अवस्था 'अवहट्ठ' से हिन्दी का उद्भव स्वीकार करते हैं। चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने इसी अवहट्ठ को 'पुरानी हिन्दी' नाम दिया।

अपभ्रंश की समाप्ति और आधुनिक भारतीय भाषाओं के जन्मकाल के समय को संक्रांतिकाल कहा जा सकता है। हिन्दी का स्वरूप शौरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रंशों से विकसित हुआ है। 1000ई. के आसपास इसकी स्वतंत्र सत्ता का परिचय मिलने लगा था, जब अपभ्रंश भाषाएँ साहित्यिक संदर्भों में प्रयोग में आ रही थीं। यही भाषाएँ बाद में विकसित होकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में अभिहित हुई। अपभ्रंश का जो भी कथ्य रूप था - वही आधुनिक बोलियों में विकसित हुआ।

अपभ्रंश के सम्बंध में 'देशी' शब्द की भी बहुधा चर्चा की जाती है। वास्तव में 'देशी' से देशी शब्द एवं देशी भाषा दोनों का बोध होता है। प्रश्न यह कि देशीय शब्द किस भाषा के थे ? भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में उन शब्दों को 'देशी' कहा है 'जो संस्कृत के तत्सम एवं सद्भव रूपों से भिन्न है। ये 'देशी' शब्द जनभाषा के प्रचलित शब्द थे, जो स्वभावत: अप्रभंश में भी चले आए थे। जनभाषा व्याकरण के नियमों का अनुसरण नहीं करती, परंतु व्याकरण को जनभाषा की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना पड़ता है, प्राकृत-व्याकरणों ने संस्कृत के ढाँचे पर व्याकरण लिखे और संस्कृत को ही प्राकृत आदि की प्रकृति माना। अतः जो शब्द उनके नियमों की पकड़ में न आ सके, उनको देशी संज्ञा दी गई।

1.1.5 भारत में हिन्दी शिक्षण एवं अधिगम

हिन्दी शिक्षण में छात्रों को सीखने के अनुभव प्रदान करने के लिए शिक्षक द्वारा कक्षा में परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती हैं| समुचित परिस्थियों को उत्पन्न करने के लिए शिक्षकों को आयाम, आव्यूह, विधियाँ, शिक्षण सूत्र, प्रविधियाँ तथा सहायक प्रणाली का उपयोग करना होता है| हिन्दी शिक्षण की आधुनिक शिक्षण विधियों को समझने के लिए यह आवश्यक है कि पहले आयाम को समझ लिया जाए| इस अध्याय के आरंभ में शिक्षण विधियों से संबन्धित प्रत्ययों को समझा जाए और उनके पारस्परिक सम्बन्धों कि जानकारी हो| यह वास्तव में शिक्षणशास्त्र का ज्ञानात्मक पक्ष माना जाता है| शिक्षण विधियाँ शिक्षाशास्त्र की मुख्य पाठ्यवस्तु हैं|

शिक्षण आयाम से तात्पर्य होता है, शिक्षण की प्रक्रिया जिसमें विशिष्ट सोपनों का अनुसरण किया जाता है| शिक्षण के संचालन एवं सम्पादन की प्रक्रिया को शिक्षण आयाम कहते हैं| अब तक अनेक शिक्षण आयामों का विकास किया जा चुका है| प्रमुख आयाम एवं उनके संपादक इस प्रकार हैं|

हर्बर्ट शिक्षण आयाम- इसको स्तर शिक्षण भी कहते हैं, इसके प्रवर्तक हर्बर्ट थे| इसमें पाँच सोपनों का अनुसरण किया जाता है| इसे पंचपदीय आयाम भी कहते हैं|

मौरीसन शिक्षण आयाम- इसे बोधस्तर शिक्षण आयाम भी कहते हैं| इसके प्रवर्तक एच॰ सी॰ मौरीसन हैं, इसमें भी पाँच पदों का अनुसरण किया जाता है| इसमें पाठ्यवस्तु स्वामित्व को अधिक महत्व दिया जाता है|

मूल्यांकन शिक्षण आयाम- इसे ब्लूम शिक्षण आयाम भी कहा जाता है| इसके प्रवर्तक बी॰ एस॰ ब्लूम हैं, इसमें तीन सोपानों का अनुसरण किया जाता है| सोपान- शिक्षण उद्देश्य, सीखने के अनुभव तथा व्यवहार परिवर्तन होते हैं|

प्रबन्धन शिक्षण आयाम- इसे डेवीस शिक्षण आयाम भी कहते हैं| इसके प्रवर्तक आई॰ के॰ डेवीस हैं| इसमें चार सोपनों का अनुसरण किया जाता है| सोपान- नियोजन, व्यवस्था, अग्रसरण तथा मूल्यांकन|

बहुमाध्यम शिक्षण आयाम- यह शिक्षा तकनीकी की देन है, इसमें तीन सोपनों का अनुसरण करते हैं| सोपान- अदा, प्रक्रिया और प्रदा|

आयाम का शिक्षण तत्वों से सम्बंध- शिक्षण आयाम के सोपनों के अनुसरण में शिक्षण विधियों, आव्यूहों, प्रविधियों तथा शिक्षण सूत्रों की सहायता ली जाती है और उनका उपयोग किया जाता है|

शिक्षण विधियाँ- शिक्षण विधियों के निर्धारण एवं चयन का आधार पाठ्यवस्तु होती है| पाठ्यवस्तु की प्रकृति के आधार पर शिक्षण विधियाँ का उपयोग करते हैं| हिन्दी शिक्षण की दो विधाएँ-भाषा तथा साहित्य भाषा की पाठ्यवस्तु वैज्ञानिक है इसलिए भाषा प्रयोगशाला का उपयोग करते हैं| साहित्य की पाठ्यवस्तु कलात्मक है इसलिए नाटक विधि का उपयोग किया जाता है| हरबर्ट शिक्षण आयाम में शिक्षण विधियों का उपयोग करते हैं| शिक्षण विधि अमूर्त प्रत्यय है क्रियाओं से इसकी प्रतीति की जाती है| प्रस्तुतीकरण के ढंग को शिक्षण विधि कहते हैं|

शिक्षण आव्यूह

शिक्षण आव्यूह के निर्धारण एवं चयन का आधार शिक्षण के उद्देश्य होते हैं| ज्ञानात्मक उद्देश्यों के लिए प्रवचन विधि, प्रश्नोत्तर विधि तथा आगमन-निगमन विधि का उपयोग का उपयोग करते हैं| क्रियात्मक उद्देश्यों के लिए प्रयोगात्मक आव्यूह, अभ्यास एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है| मूल्यांकन आयाम में शिक्षण आव्यूहों का उपयोग किया जाता है| शिक्षण की प्रक्रिया उद्देश्य-केन्द्रित होती है|

शिक्षण प्रविधियाँ

शिक्षण विधियों के उपयोग में शिक्षण प्रविधियों की सहायता ली जाती है जैसे- कथन देना, उदाहरण देना, व्याख्यान करना, व्याख्या करना आदि एक विधि में अनेक प्रविधियों का उपयोग किया जाता है| प्रवचन विधि में प्रश्नोत्तर प्रविधि के रूप में प्रयुक्त करते हैं| इसी प्रकार प्रश्नोत्तर विधि में प्रवचन अथवा कथन प्रविधि का उपयोग करते हैं|

शिक्षण सूत्र

शिक्षण प्रविधि के उपयोग करने में शिक्षण सूत्रों की सहायता ली जाती है| जैसे- कथन प्रविधि में ज्ञात से अज्ञात की ओर, सरल से कठिन की ओर, उदाहरण से नियम की ओर आदि सूत्रों का उपयोग करते हैं| शिक्षण प्रविधियों की प्रभावशीलता शिक्षण सूत्रों पर आधारित होती है| शिक्षण का मूल सूत्र होते हैं|

हिन्दी भाषा शिक्षण की विधियाँ

हिन्दी भाषा के क्षेत्र अधिक व्यापक है और भाषा की पाठ्यवस्तु के भी तीन प्रमुख पक्ष हैं- भाषा विज्ञान, व्याकरण, भाषा कौशल| इनकी प्रकृति ज्ञानात्मक तथा क्रियात्मक है| इसलिए भाषा शिक्षण में अनेक विधियों का उपयोग किया जाता है, हिन्दी भाषा शिक्षण की विधियाँ निम्नलिखित हैं-

व्याकरण

आगमन-निगमन विधि

प्रश्नोत्तर विधि

संरचनात्मक आयाम

अर्थ विज्ञान शिक्षण

आगमन-निगमन विधि

प्रश्नोत्तर विधि

ध्वनि विज्ञान शिक्षण

अनुकरण विधि

समूहिक अभ्यास विधि

खेल विधि

भाषा प्रयोगशाला विधि

रूप विज्ञान शिक्षण

अनुकरण विधि

खेल विधि

अभ्यास विधि

भाषा कौशल शिक्षण

अनुकरण विधि

समूहिक अभ्यास विधि

भाषा प्रयोगशाला विधि

1.1.6 भाषा अर्जन-

भाषा मानव जीवन की एक सामान्य व सतत प्रक्रिया है, जिसे मानव को ईश्वर द्वारा दिया अमूल्य उपहार कहा जाता है| भाषा का आरंभ मानव के जन्म के साथ ही प्रारम्भ हो जाता है| विभिन्न कौशल जैसे- बोलना, सुनना,पढ़ना, लिखना, समझना को पूरा करते हुये व्यक्ति भाषा में निपुणता प्राप्त करता है| आरंभ में बालक भूख लगने पर रोता है तो माता समझ जाती है कि बालक को भूख लगी है| फिर धीरे-धीरे परिवार के संपर्क में रहकर आपसी संवादों को सुनकर बालक उनका अनुकरण करता है और इस तरह वह भाषा के क्षेत्र में पारंगत हो जाता है| इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि भाषा अनुकरण की वस्तु है तथा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है| बालक के भाषा अर्जन के संदर्भ में अर्जन प्रक्रिया एवं उसकी प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान है| भाषा अर्जन में बालक अनेक युक्तियों का प्रयोग करता है| भाषा अर्जन की युक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

सहजता

अनुकरण अभिव्यक्ति की व्यग्रता

अनुकरण

अभ्यास

बारंबारता एवं संक्षिप्तता

1.1.7 भाषा शिक्षण अर्थ, उद्देश्य और आवश्यकता

भाषा भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम तथा साधन होती है| भाषा की प्रमुख क्रियाएँ- बोलना, लिखना, पढ़ना तथा सुनना है| भाषा कि शुद्धता से तात्पर्य शुद्ध बोलना, शुद्ध लिखना, शुद्ध पढ़ना तथा शुद्ध सुनने से होता है| इन क्रियाओं की शुद्धता व्याकरण पर आधारित होती है अर्थात व्याकरण से इनमें शुद्धता आती है| भाषा का अमूल्य वरदान मनुष्य को ही प्राप्त है| भाषा ईश्वरीय व प्रकृति की देन है परंतु भाषा का निर्माण व्यक्ति ने स्वयं किया है|

विश्व में अनेक भाषाओं का निर्माण हुआ है जिससे वहाँ के निवासी अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति एवं सम्प्रेषण करते हैं| भाषा मानवीय कलाकृति है| मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं और समाज में रहने के कारण उसे सदैव विचारों का आदान- प्रदान करना पड़ता है, इस विचार विनिमय का सर्वोत्तम एवं मानवीय साधन भाषा है| इस प्रकार जिस वार्तालाप या लेख के माध्यम से अपने विचारों को प्रकट करते हैं वही भाषा है| भाषा के दो रूप हैं 1.मौखिक भाषा 2.लिखित भाषा| मनुष्य अपने विचारों को प्रकट करने के लिए कुछ शब्दों का उपयोग करता है और यह शब्द किन्हीं सार्थक प्रतीकों से निर्मित होते हैं| इसी प्रकार लेखन के अंतर्गत भी सार्थक ध्वनि प्रतीक चिन्हों का आश्रय लेते हैं| अतएव भाषा सार्थक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से इसके प्रयोक्ता या श्रोता परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं| विचारों का आदान-प्रदान मौखिक या लिखित दोनों रूपों में हो सकता है|

भाषा की परिभाषा- भाषा के संबंध में विद्वानों की परिभाषाएं निम्नलिखित हैं-

रामचंद्र वर्मा के अनुसार- "मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों का वह समूह जिसके द्वारा मन की बात बताई जाती है भाषा कहलाती है|"

स्वीट के अनुसार-" ध्वन्यात्मक शब्दों के द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है|"

प्लेटो के अनुसार- "विचार आत्मा की मूक या ध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं|"

भोलानाथ तिवारी के अनुसार- "भाषा उच्चारण-अवयवों से उच्चरित स्वेच्छाचारी ध्वनिप्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस में भावों और विचारों का आदान प्रदान करते हैं|"

वान्द्रिरा के अनुसार- "भाषा एक प्रकार का चिहन है, चिहन से आशय उन प्रतीकों से है जिनके द्वारा मानव अपना विचार दूसरों पर प्रकट करता है| ये प्रतीक कई प्रकार के होते हैं जैसे- स्पर्श ग्राह्य, नेत्र ग्राह्य और श्रोता ग्राह्य|"

भाषा की प्रकृति एवं विशेषताएं-

भाषा पैतृक संपत्ति नहीं है- कुछ विद्वानों के मतानुसार पिता की भाषा पुत्र को मिलती है अर्थात जिस प्रकार पैतृक संपत्ति पर पुत्र का अधिकार होता है उसी प्रकार भाषा भी धरोहर के रूप मिल जाती है| किंतु यह मत सदैव सत्य नहीं होता है| यदि किसी भारतीय बच्चे को जन्म के कुछ ही दिन पश्चात पालन पोषण के लिए इंग्लैंड भेज दिया जाए तो वह वहाँ पर भारतीय भाषा नहीं बोल सकेगा वहाँ उसकी मातृभाषा अंग्रेजी ही होगी यदि भाषा पैतृक संपत्ति रही होती तो वह भारतीय भाषा ही बोलता|

भाषा परंपरागत है व्यक्ति उसका अर्जन कर सकता है उसे उत्पन्न नहीं कर सकता- भाषा परंपरा से चली आ रही है, व्यक्ति परंपरा तथा समाज से उसका अर्जन करता है| एक व्यक्ति उसे उत्पन्न नहीं कर सकता, किंतु वह उसमें परिवर्तन आदि कर सकता है| यदि भाषा का कोई जनक अथवा जननी है तो वह परंपरा और समाज है|

भाषा का कोई अंतिम स्वरूप नहीं है- भाषा कभी भी पूर्ण नहीं होती अर्थात यह कभी नहीं कहा जा सकता कि अमुक भाषा का अंतिम रूप यही है| वस्तुतः भाषा से हमारा अभिप्राय जीवित भाषा से होता है भाषा का अंतिम रूप तो अवश्य अंतिम होता है किंतु जीवित भाषा में यह बात नहीं है| भाषा परिवर्तनशील विकास की एक प्रक्रिया है|

भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर जाती है- पहले व्यक्तियों का विचार था कि भाषा वियोगावस्था से संयोगावस्था की ओर जाती है| कुछ विद्वानों का विचार था कि भाषा दोनों परिस्थितियों से होकर गुजरती है परंतु अब दोनों ही विचारों में कोई तथ्य नहीं रह गया है| भाषा वस्तुतः संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर जाती है|

भाषा आद्यंत सामाजिक वस्तु है- भाषा का अर्जन समाज के संपर्क से ही हो सकता है| वास्तविकता यही है कि भाषा का जन्म समाज में होता है उसका विकास समाज में होता है तथा उसका प्रयोग भी समाज में ही होता है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं इसलिए उसे विचार-विनिमय के लिए भाषा की आवश्यकता होती है|

भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है- भाषा का अर्जन अनुकरण से होता है| बच्चे के सामने माँ रोटी को रोटी कहती है और वह उसे सुनता है तथा धीरे-धीरे उसे स्वयं कहने का प्रयत्न करता है| वस्तुतः अनुकरण मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है| हम भाषा को अनुकरण के सहारे ही सीखते हैं|

भाषा चिर परिवर्तनशील है- वस्तुतः भाषा के मौखिक रूप को भाषा कहा जाता है| लिखित रूप से तो उसके पीछे-पीछे ही चलता है| मौखिक भाषा को व्यक्ति अनुकरण द्वारा सीखता है परंतु अनुकरण हमेशा अपूर्ण होता है| इसी कारण भाषा में सदा परिवर्तन होते रहते हैं| अनुकरण पर शारीरिक तथा मानसिक विभिन्नता का प्रभाव पड़ता है, जिनकी सूक्ष्म विभिन्नता भी भाषा में परिवर्तन का कारण बन जाती है|

भाषा का महत्व

भाषा के बिना मनुष्य पशु के समान है| भाषा के कारण ही मनुष्य इस अखिल ब्रह्मांड का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है| भाषा का आविष्कार एवं विकास वस्तुतः मनुष्य का विकास है| मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में भाषा के महत्व को इस प्रकार समझा जा सकता है|

ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन- भाषा के माध्यम से ही एक पीढ़ी समस्त संचित ज्ञान को सामाजिक विरासत के रूप में दूसरी पीढ़ी को सौंपती है| भाषा के माध्यम से ही हम प्राचीन और नवीन आत्मा और विश्व पहचानने की सामर्थ्य प्राप्त करते हैं| भाषा के द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है|

विचार-विनिमय का सर्वोत्तम एवं सरलतम साधन- बालक जन्म के कुछ ही दिनों पश्चात परिवार में रहकर भाषा सीखने लगता है| यह भाषा वह स्वाभाविक एवं अनुकरण के द्वारा सीखता है| इसे सीखने के लिए किसी अध्यापक की आवश्यकता नहीं होती है| यह विचार-विनिमय का सर्वोत्तम साधन है क्योंकि भाषा संकेत एवं चिन्हों से श्रेष्ठ है|

सामाजिक जीवन में प्रगति का साधन- भाषा समाज के सदस्यों को एक सूत्र में बाँधती है| भाषा के माध्यम से ही समाज प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता है| भाषा जितनी विकसित होगी समाज उतना ही विकासशील होगा| भाषा के माध्यम से समाज के नैतिक व्यापार ही संपन्न नहीं होते अपितु उसकी संस्कृति भी अक्षुण्ण रहती है यह भाषा ही है जिसके आधार पर विभिन्न क्षेत्रों, विभिन्न जातियों एवं धर्मों के लोग मिलजुल कर रहते हैं| वस्तुतः भाषा समाज को जोड़ने में सहायक होती है| अतएव यह कहा जा सकता है कि भाषा सामाजिक जीवन में प्रगति का साधन है|

व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक- भाषा व्यक्तित्व के विकास का महत्वपूर्ण साधन है| व्यक्ति अपने आंतरिक भावों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है तथा इसी अभिव्यक्ति के साथ अंदर छिपी अनंत शक्ति अभिव्यक्त होती है| अपने विचारों एवं भावों को सफलतापूर्वक अभिव्यक्त करना तथा अनेक भाषाएँ बोल सकना विकसित व्यक्ति के ही लक्षण हैं| अतएव किसी व्यक्ति की अभिव्यक्ति जितनी स्पष्ट होगी उसके व्यक्तित्व का विकास भी उतने ही प्रभावशाली ढंग से होगा|

भाषा राष्ट्र की एकता का आधार- समस्त राष्ट्र प्रशासन का संचालन भाषा के माध्यम से होता है| भाषा राष्ट्रीय एकता का मूल आधार है| इसके साथ ही अन्य कोई भाषा भी विभिन्न राष्ट्रों के विचार व्यापार एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान का साधन बनती है| ऐसी भाषाओं के अभाव में विभिन्न राष्ट्रों के विद्वानों की विचारधाराएं राष्ट्र विशेष तक ही सीमित रह जाती हैं|

शिक्षा की प्रगति की आधारशिला- भाषा शिक्षा का आधार है| सभी ज्ञान विज्ञान के ग्रंथ भाषा में ही लिपिबद्ध होते हैं| अगर भाषा ना होती तो भाषा के स्वरूप का निर्माण भी नहीं होता तथा शिक्षा की व्यवस्था न होती तो मनुष्य असभ्य हिंसक और जंगली ही रहा होता| भाषा के अभाव में पूर्वजों द्वारा उपलब्ध ज्ञान हमें कभी प्राप्त ना होता|

साहित्य एवं कला, संस्कृति एवं सभ्यता का विकास- साहित्य भाषा में लिखा जाता है| भाषा का विकास उसके पल्लवित साहित्य के दर्पण में देखा जाता है| इसी तरह से कला के स्वर भी भाषा में मुखरित होते हैं| जब वायुमंडल में स्वर गूंजते हैं तथा श्रोता गदगद हो जाते हैं तो यह सारा चमत्कार भाषा का ही होता है| भाषा के द्वारा ही हम अपने समाज के आचार-व्यवहार तथा अपनी विशिष्ट जीवनशैली से अवगत होते हैं और भाषा के द्वारा ही हम नवीन आविष्कारों के आधार पर एक होते हैं और भाषा के द्वारा ही हम नवीन आविष्कारों के आधार पर एक नवीन सृष्टि का सृजन करते हैं तथा अपनी भाषा को उन्नत बनाते हैं| भाषा की कहानी वास्तव में सभ्यता की कहानी है|

1.1.8 हिन्दी भाषा शिक्षण

राष्ट्र के निर्माण के कार्य में भाषा का विशेष महत्व है| भाषा के माध्यम से छात्र ज्ञान-विज्ञान के अनेकानेक विषयों का अध्ययन करता है| यदि छात्र का अधिकार भाषा पर नहीं होता तो वह ज्ञान के अन्य किसी भी क्षेत्र में प्रगति

नहीं कर पाता| भाषा ही हमारे जीवन का आधार है किसी भी जनतंत्र की सफलता उसके नागरिकों के चिंतन पर निर्भर करती है और इस चिंतन में भाषा की भूमिका रहती है भारतीय गणराज्य के 7 राज्यों में छात्रों की मातृभाषा हिंदी है और अन्य राज्यों में इसका स्थान राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के रूप में द्वितीय भाषा का होता है| जिन राज्यों में हिंदी मातृभाषा के रूप में व्यवहृत है वहां के लोगों का यह विशेष कर्तव्य है कि वे छात्रों के भाषा ज्ञान को बढ़ाएं और उन्हें इस बात की प्रेरणा दें कि वह हिंदी पर अधिकार प्राप्त कर सकें|

अन्य किसी भी विषय के पढ़ाने की तुलना में मातृभाषा का पढ़ाना बहुत अधिक जटिल कार्य है| इसकी शिक्षा में इतने विभिन्न प्रकार की योग्यताओं का समावेश रहता है कि उन्हें विश्लिष्ट करके अलग-अलग देख पाना संभव नहीं हैं| वास्तव में मातृभाषा की शिक्षा के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से सामने रखना बहुत कठिन है| मातृभाषा शिक्षण के कुछ ऐसे सामान्य सूत्र दिए गए हैं जिनको ध्यान में रखने से हमें मातृभाषा के प्रति छात्रों की रुचि के विकास में सहायता मिल सकेगी| भाषा मानव जीवन की एक बहुत ही सहज प्रक्रिया है इसे बच्चा अनायास खेल-खेल में सीखने लगता है और परिस्थिति के अनुसार उसकी भाषा का विकास होता चला जाता है| सीखने वाले पर कोई भाषा थोपी नहीं जा सकती इसका विकास उसके अंदर से स्वयं होना चाहिए| अध्यापक उस विकास में सहायता पहुंचा सकते हैं| भाषा का शिक्षण यथासंभव अनौपचारिक होना चाहिए पढ़ाने में बहुत अधिक औपचारिकता आ जाने से पढ़ाई जाने वाली भाषा का स्वरूप कृत्रिम हो जाने की संभावना है| भाषा को सीखने और सिखाते समय छात्र और अध्यापक दोनों को ही आनंद की अनुभूति होनी चाहिए| यदि ऐसा नहीं है तो भाषा विकास में अवश्य ही कहीं कमी है| वाह्य जगत के प्रति प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न होती है| प्रतिक्रिया की विभिन्नता भाषा के प्रयोग में सहज रूप से अभिव्यक्त होती है| छठी कक्षा के छात्रों में व्यक्तित्व की भिन्नता के लक्षण प्रकट होने लगते हैं| किसी भी भाषा की सत्ता शून्य में नहीं रहती इसके माध्यम से यहां छात्रों की भाषा संबंधी योग्यता बढ़ेगी| वहीं सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पारिवारिक, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक विषयों में रुचि बढ़ेगी| छात्रों को ऐसा लगना चाहिए कि वे एक साथ पढ़ रहे हैं| भाषाओं का वर्गीकरण मोटे तौर पर सुनकर, बोलने, पढ़ने, लिखने और सोचने की योग्यता में किया जा सकता है| भाषा की अच्छी शिक्षा में इस प्रकार की योग्यताओं का विकास किया जाएगा इसके लिए आवश्यक होगा कि छात्रों को सुनने, बोलने, लिखने और विचार करने के अधिक से अधिक अवसर दिए जाएँ| कक्षा में निष्क्रिय स्रोता

बने रहकर ही छात्र भाषा के अंगों पर अधिकार नहीं प्राप्त कर सकते हैं| भाषा की विश्लेषण योग्यता के ऊपर लिखित सभी योग्यताओं का विकास करने में सहायक होती है इसलिए भाषा विश्लेषण की क्षमता छात्रों में प्रारम्भ से ही उत्पन्न करनी चाहिए|

1.1.9 हिन्दी भाषा शिक्षण की समस्याएँ

भाषा विज्ञान की दृष्टि से कठिनाइयों के अतिरिक्त कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ भी आती हैं| जो इस प्रकार हैं-

पाठ्यक्रम संबंधी समस्याएँ- हिन्दी का शिक्षण कब प्रारम्भ किया जाए, किस स्तर पर कितना पाठ्यक्रम रखा जाए, भाषा कितनी पढ़ाई जाए और साहित्य कितना पढ़ाया जाए तथा सरकारी काम-काज के लिए कितना सिखाया जाए? इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त कर लेने से पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं को दिशा मिल सकती है|

पाठ्यपुस्तकों की समस्याएँ- अहिंदी भाषी प्रदेशों की अपनी विशिष्ट समस्याएँ हैं,उनका ध्यान रखते हुये हिन्दी की पाठ्यपुस्तकें तैयार होनी चाहिए| दक्षिणापथ, पूर्वाञ्चल, पश्चिमोत्तर प्रदेशों की समस्याओं को दृष्टिगत रखकर ही पुस्तकें तैयार करना उचित है| एक ही पुस्तक सभी अहिन्दी भाषी प्रदेशों के लिए उपयुक्त नहीं रहेगी|

अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी अध्यापक- हिन्दी के उपयुक्त अध्यापकों की नियुक्ति भी आवश्यक है| हिन्दी अध्यापकों में कुछ सामान्य योग्यता का होना आवश्यक है| केरल तथा आसाम को छोडकर शेष सभी अहिन्दी भाषी राज्यों ने हाईस्कूल तक की योग्यता को पर्याप्त माना है| किन्तु अन्य प्रदेशों हिन्दी की योग्यता का स्तर ऊँचा रखने के लिए हिन्दी-संस्थाओं की उन परीक्षाओं को अनिवार्य कर रखा है| जिनका स्तर स्नातक के समकक्ष है|

हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति का निर्माण- अहिन्दी भाषी प्रदेश के छात्र हिन्दी क्यों सीखें, हिन्दी क्या सीखें? हिन्दी को मातृभाषा के रूप में सीखें या अन्य भाषा के रूप में सीखें| हिन्दी न सीखने से क्या हानि है और क्या हिन्दी अक्षम और दरिद्र भाषा है| इन प्रश्नों के उत्तर के विषय में भ्रम पैदा किया जा रहा है| अतः अनेक अहिन्दी भाषी छात्र हिन्दी को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं|

1.1.10 हिन्दी भाषा शिक्षण, परीक्षण एवं मूल्यांकन

आधुनिक युग में शिक्षण-व्यवस्था के लिए मूल्यांकन आयाम का अनुसरण किया जाता है, जिसके अन्तर्गत वार्षिक आयोजना तथा इकाई योजना तैयार की जाती है| इस आयाम के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया को त्रिपदी माना जाता है| शिक्षण तथा परीक्षण क्रियाओं का आयोजन उद्देश्यों को प्राप्त करने की दृष्टि से किया जाता है| शिक्षा प्रक्रिया तथा मूल्यांकन आयाम दोनों एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबन्धित हैं| बिना मूल्याँकन के शिक्षा प्रक्रिया की प्रभावशीलता एवं उपादेयता का पता चलना कठिन है| शिक्षण की समस्त क्रियाओं का मूल्यांकन किया जाता है| छात्रों की उपलब्धियों के आधार पर सीखने के अनुभवों के समस्त साधनों के संबंध में निर्णय लिया जाता है| इस आयाम के अन्तर्गत मानदण्ड परीक्षा का उपयोग किया जाता है| शिक्षण की सभी क्रियाओं को उद्देश्य-केन्द्रित बनाने का प्रयास किया जाता है| इसमें वार्षिक योजना तथा इकाई योजना के विवेचन के साथ उसकी पृष्ठभूमि का भी उल्लेख किया जाता है| विद्यालय द्वारा हुये बालक के व्यवहार-परिवर्तन के विषय में साक्ष्यों के संकलन तथा उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है|

मूल्यांकन की प्रक्रिया में शिक्षण तथा परीक्षण का साथ-साथ सम्पादन किया जाता है| इसलिए मूल्यांकन का प्रयोग अधिक व्यापक रूप में किया जाता है| इसमें मापन छात्रों की निष्पत्तियों तक ही किया जाता है| मापन वह प्रक्रिया जिसमें मानवीय गुणों को मात्रा में मापन किया जाता है| मूल्यांकन में बालक के सम्पूर्ण व्यवहार-परिवर्तन और शिक्षण की प्रक्रिया के उपकरणों एवं विधियों का मापन किया जाता है| विद्यालय में बालक शिक्षा ग्रहण करने आता है| वह विशेष प्रकार के अनुभव अपने विद्यालय के जीवन में प्राप्त करता है| इन अनुभवों से उसके ज्ञान में वृद्धि, सोचने का ढंग बदलता है, उसकी कार्य शैली में परिवर्तन होता है तथा उसकी संवेदनशीलता एवं अभिवृत्ति विकसित होती है| बालक के इस सम्पूर्ण विकास को व्यवहार-परिवर्तन कहते हैं| इस व्यवहार-परिवर्तन में बालक के ज्ञानात्मक, क्रियात्मक एवं भावात्मक पक्ष सम्मिलित होते हैं| मूल्यांकन आयाम में शिक्षण के उद्देश्यों, सीखने के अनुभवों तथा व्यवहार परिवर्तनों में घनिष्ठ संबंध स्थापित किया जाता है|

1.1.11 भाषा कौशल

भाषा भावों, विचारों तथा तथ्यों की अभिव्यक्ति का साधन तथा माध्यम है| भाषा के अवयवों का विश्लेषण किया जाता है| भाषा के तीन प्रमुख घटक हैं- भाषा विज्ञान, व्याकरण तथा भाषा कौशल| यह भाषा का व्यावहारिक पक्ष है| तथ्यों, भावों, विचारों तथा कौशल में शारीरिक अंगों, ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों को क्रियाशील रहना पड़ता है| भाषा कौशल मुख माध्यम का कार्य करती है| भाषा कौशल में मुख के अंगो को अधिक सक्रिय रहना पड़ता है| शारीरिक अंगों के साथ ज्ञानेन्द्रियां तथा कर्मेन्द्रियां भी सक्रिय रहती हैं| इस प्रकार भाषा की पूर्णता में भाषा विज्ञान, व्याकरण तथा भाषा का विवरण दिया जाता है| प्रत्येक व्यावहारिक, प्रयोगात्मक तथा तकनीकी के कार्यों में कौशल की आवश्यकता होती है| कार्य क्षमता कार्य कौशल पर निर्भर रहती है| कौशल का कोई रूप नहीं होता है परंतु उसकी प्रभावशीलता की प्रतीति की जाती है| कौशल के तत्व तथा क्रियाएँ होती हैं|

क्रियाओं के विशिष्ट समूह को कौशल कहते हैं जिससे कार्य की सक्षमता में वृद्धि होती है| कार्य सम्पादन में विशिष्ट क्रियाएँ करनी होती हैं उनकी प्रवीणता में कौशल की भूमिका अहम होती है| किसी व्यवसाय की प्रवीणता का प्रदर्शन कौशल से किया जाता है, क्रियाओं से कौशल की प्रतीति होती है| कौशल का रूप नहीं होता, उसकी प्रतीति ही की जा सकती है| कौशल क्रियाओं का विशिष्ट समूह होता है| कौशल प्रवीणता का व्यावहारिक पक्ष होता है| कार्य सक्षमता तथा प्रभावशीलता कौशल का निर्धारण पृष्ठपोषण से किया जाता है| भाषा अभिव्यक्ति का एक साधन है| अभिव्यक्ति का माध्यम कौशल होते हैं| भाषा विज्ञान तथा व्याकरण अभिव्यक्ति का सैद्धान्तिक पक्ष होते हैं और भाषा कौशल अभिव्यक्ति का व्यावहारिक पक्ष होता है| व्यक्ति की सम्प्रेषण की सक्षमता भाषा कौशलों की दक्षता पर ही निर्भर करती है| भाषा की प्रभावशीलता का मानदण्ड उसकी बोधगम्यता होती है| जिन भावों या विचारों की अभिव्यक्ति करना चाहते हों उन्हें कितनी सक्षमता से बोधगम्य कराते हैं, यह भाषा कौशलों के उपयोग पर निर्भर करती है|

भाषा कौशलों के प्रकार- वाचन कौशल, श्रवण कौशल, लेखन कौशल, पठन कौशल|

वाचन कौशल- वाचन एक कला है, वाचन की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती है| व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण उसकी सुसंस्कृत एवं मधुर वाणी है| क्योंकि अन्य आभूषण तो टूट या घिस जाते हैं किन्तु वाणी सदैव बनी रहती है| व्यक्ति का एक मात्र आभूषण उसकी मधुर वाणी ही है| मनुष्य अपने भावों या विचारों को बोलकर या

लिखकर अभिव्यक्त करता है| भावों या विचारों का सम्प्रेषण या प्रकाशन ही रचना है| **कैथरीन के अनुसार-** भाषा वह जटिल सीखने की प्रक्रिया है जिसमें सुनने के गतिवाही माध्यमों का मानसिक पक्षों से सम्बंध होता है|

श्रवण कौशल- वाचन सुनने और सुनकर उसका अर्थ एवं भाव समझने की क्रिया को श्रवण कौशल कहा जाता है| श्रवण कौशल का सैद्धान्तिक पक्ष ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत आता है| समान्यतः कानों द्वारा जो ध्वनियाँ ग्रहण की जाती है और मस्तिष्क द्वारा उनकी अनुभूति तथा प्रत्यक्षीकरण को श्रवण कहते हैं| मौखिक भाषा के माध्यम से अभव्यक्त भाव एवं विचारों को सुनकर समझना| भाषा के संदर्भ में अर्थबोध एवं भाव की प्रतीति सुनने के लिए आवश्यक तत्व होते हैं| मौखिक भाषा सुनकर उसके अर्थ एवं भाव समझने की क्रिया में निपुढ़ करना| इसके लिए आवश्यक है कि उनमें सुनने के आवश्यक तत्वों का विकास किया जाए|

लेखन कौशल- रचना भावों एवं विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति है| वही शब्दों को क्रम से लिपिबद्ध एवं सुव्यवस्थित करने की कला है| भावों एवं विचारों की यह कलात्मक अभिव्यक्ति जब लिखित रूप में होती है तब उसे लेखन अथवा लिखित रचना कहते हैं| अभिव्यक्ति की दृष्टि से लेखन तथा वाचन परस्पर पूरक होते हैं| वाचन से लेखन कठिन होता है| लेखन में वर्तनी का विशेष महत्त्व होता है जबकि वाचन में उच्चारण का महत्त्व होता है, उच्चारण की शुद्धता आवश्यक तत्व है और लेखन में अक्षरों का सुडौल होना और वर्तनी की शुद्धता होनी चाहिए|

लेखन की कला स्थायी साहित्य का अंग है, लेखन की विषयवस्तु साहित्य का क्षेत्र होता है और वाक्य लिखित भाषा अभियक्ति का माध्यम होता है| लेखन में सोचने तथा चिन्तन के लिए अधिक समय मिलता है जबकि वाचन में भावाभिव्यक्ति का सतत प्रवाह बना रहता है सोचने का समय नहीं रहता| मानव जीवन में लेखन तथा वाचन दोनों रूपों का महत्व है|

पठन कौशल- लिखित भाषा को पढ़ने की क्रिया को पठन कौशल कहा जाता है| जैसे-पुस्तकों को पढ़ना, समाचार पत्रों को पढ़ना आदि| भाषा के संदर्भ में पढ़ने का अर्थ कुछ भिन्न होता है| भाव और विचारों को लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति को पढ़कर समझना पठन कहा जाता है| लिखने का उद्देश्य होता है कि भाव और विचारों को हम दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं| अन्य व्यक्ति जब उसको लिखित भाषा के रूप में पढ़ेगा तब उसके भाव एवं विचारों को

समझ लेगा| इस क्रिया को पठन कहते हैं| किस सीमा तक कोई व्यक्ति उसके भाव एवं विचारों को समझता है यह उसकी एकाग्रता और ग्रहण शक्ति पर निर्भर होता है| पठन कौशल का सम्बंध क्रियात्मक पक्ष के विकास से होता है| इसलिए भाषा कौशलों के विकास के लिए अभ्यास तथा प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है| छात्रों को पढ़ने के लिए अवसर दिये जाएँ और उन्हें ऐसा साहित्य उपलब्ध कराया जाए जो उनकी रुचि के अनुकूल हो|

1.1.12 लेखन शिक्षण कौशल

रचना भावों एवं विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति है| वही शब्दों को क्रम से लिपिबद्ध एवं सुव्यवस्थित करने की कला है| भावों एवं विचारों की यह कलात्मक अभिव्यक्ति जब लिखित रूप में होती है तब उसे लेखन अथवा लिखित रचना कहते हैं| अभिव्यक्ति की दृष्टि से लेखन तथा वाचन परस्पर पूरक होते हैं| वाचन से लेखन कठिन होता है| लेखन में वर्तनी का विशेष महत्त्व होता है जबकि वाचन में उच्चारण का महत्त्व होता है, उच्चारण की शुद्धता आवश्यक तत्व है और लेखन में अक्षरों का सुडौल होना और वर्तनी की शुद्धता होनी चाहिए|

लेखन की कला स्थायी साहित्य का अंग है, लेखन की विषयवस्तु साहित्य का क्षेत्र होता है और वाक्य लिखित भाषा अभियक्ति का माध्यम होता है| लेखन में सोचने तथा चिन्तन के लिए अधिक समय मिलता है जबकि वाचन में भावाभिव्यक्ति का सतत प्रवाह बना रहता है सोचने का समय नहीं रहता| मानव जीवन में लेखन तथा वाचन दोनों रूपों का महत्व है|

1.1.13 प्रशिक्षु अध्यापकों के लिए हिन्दी

शिक्षाशास्त्र का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है कि शिक्षण में पाठ्यक्रम की अपेक्षा शिक्षक का अधिक महत्व है| यहाँ तक आज शैक्षिक तकनीकी भी उसकी उपेक्षा नहीं कर सकती है| विषय-वस्तु को बोधगम्य करने की अपेक्षा शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव बालकों के लिए विशेष महत्व रखता है| क्योंकि शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक धुरी के सादृश्य कार्य करती है| शिक्षक का व्यक्तित्व, प्रस्तुतीकरण शिक्षक के आदर्श सीखने वाले नवयुवकों में अभिरुचि एवं अभिवृत्ति का विकास करते हैं| सीखने के लिए प्रेरणा भी देते हैं|

शिक्षक बालकों में सही दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए उत्तरदाई है| यदि हिन्दी शिक्षक निष्पक्ष तथा ईमानदारी से कार्य करे तो विद्यालय के अन्य विषयों की अपेक्षा स्वदेश प्रेम, अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास सुगमता से कर सकता है| देश की प्रगति के लिए सुयोग्य नागरिकों का विकास कर सकता है| शिक्षक का अंतिम उद्देश्य मानवता का विकास करना है| इसमें हिन्दी शिक्षक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है| गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षक की तुलना एक जलते हुये दीपक से की है| हिन्दी शिक्षक को भाषा तथा साहित्य दोनों का भरपूर ज्ञान होना चाहिए| भारतीय शिक्षा प्रणाली में हिन्दी भाषा एवं साहित्य को उतना महत्व नही दिया गया जितने की वह अधिकारी है| राष्ट्रीय हिन्दी को समझने के लिए भाषा का भरपूर ज्ञान होना आवश्यक है| विश्व बंधुत्व की भावना का विकास हिन्दी के अध्ययन बिना संभव नहीं हो सकता|

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

समस्या की उत्पत्ति का मूल कारण आज इस इंटरनेट के युग में लोग लिखना भूल रहे हैं, ज्यादातर व्यक्ति दो प्रकार की भाषा प्रयोग करना पसंद कर रहे हैं| आज सोशल मीडिया के परिप्रेक्ष्य में लोग अंग्रेजी को देवनागरी लिपि में लिखना पसंद कर रहे हैं , जिस कारण हिन्दी का अस्तित्व आज खतरे में दिखाई दे रहा है| अनेकानेक अध्ययनों के आधार पर पता चलता है कि अब हिन्दी पर अंग्रेजी को प्राथमिकता देने की परंपरा प्रचलन में रही है| सरकारी विद्यालयों से लेकर निजी विद्यालयों में अंग्रेजी को ही महान बताया जा रहा है| अभिभावक आज अपने बच्चे को अंग्रेजी का चोला पहनाना अधिक पसंद करते हैं| हमारे देश के आम जनमानस की बोल-चाल की भाषा प्राचीन समय से हिन्दी रही है| हिन्दी आम जनमानस की आत्मा को जोड़ती थी| आज अंग्रेज़ियत के प्रभाव के फलस्वरूप हिन्दी रसातल को जा रही है| हम एवं हमारी सरकारें हिंदी पखवाड़ा और हिन्दी दिवस मनाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं| इस कारण बच्चे हिन्दी से दूर हो रहे हैं|

वर्तमान समय में इन्हीं सब कारणों से हिन्दी गर्त में जा रही है, जो भारत जैसे देश के लिए सोचनीय बात है| आज दुनिया के अनेक देश अपने मातृभाषा का उपयोग कर विकसित राष्ट्र हो गए और हम तथा हमारा देश अंग्रेज़ियत के गुलाम हो रहे हैं| जब मैंने बाँदा जनपद के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का सर्वेक्षण किया तो ज्ञात हुआ कि प्रशिक्षु अध्यापक हिन्दी लेखन में बहुत अधिक अशुद्धियाँ करते हैं तथा उनके पास जानकारी का भी अभाव है| उनको

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर इसके विषय में नहीं बताया गया, जिस कारण आज भी वह इसी गलती को दोहराते जा रहे हैं| इन स्थितियों को देखकर मेरे मन में जिज्ञासा हुई कि यह हिन्दी के लिए बहुत ही संवेदनशील विषय है और मुझे प्रशिक्षु अध्यापकों में इसका अध्ययन करना चाहिए| आज के प्रशिक्षु कल के अध्यापक हैं और अध्यापक वह शिल्पी है जो समाज का निर्माण करता है| प्रशिक्षु अध्यापकों को हिन्दी लेखन कौशल का ज्ञान करने हेतु मैंने इस शीर्षक का चयन किया|

1.3 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य के लिए जिस समस्या का चयन किया गया है, उसका शीर्षक इस प्रकार है- " **प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (बाँदा जिले के विशेष सन्दर्भ में)**|"

1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

भारत एक विकासशील देश है, स्वतन्त्रता के पश्चात भारत के प्रत्येक क्षेत्र तथा राज्यों के विकास के लिए अनेक प्रशंसनीय कदम उठाए हैं| भारत सरकार तथा संबन्धित अन्य राज्य सरकारों ने शिक्षा के क्षेत्र विभिन्न प्रयास किए हैं, परन्तु फिर उन उद्देश्यों को अभी भी पूरा नहीं किया जा सका है| आज भी भारत के विभिन्न राज्यों में साक्षरता की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है| राष्ट्रीय स्तर पर अभी 75 प्रतिशत से नीचे ही है| यह स्थिति भारत जैसे देश के लिए ठीक नहीं| जहाँ साक्षरता ठीक है उनमें से अनेक क्षेत्रों में गुणवत्ता की काफी कमी है| इसी गुणवत्ता में सुधार हेतु एक प्रयास मेरे द्वारा किया गया है| इस प्रयास का मुख्य उद्देश्य भाषा की गुणवत्ता को सुधार कर अच्छे अध्यापक बनाने का प्रयास करना है| भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए मनुष्य संकेतों और प्रतीकों का सहारा लेता है| प्रत्येक भाषा इन वाक्य प्रतीकों के संकेत अर्थ निश्चित होते हैं और उस भाषा विशेष के सदस्य परस्परिक व्यवहार के लिए इनका प्रयोग करते हैं|

डॉ. बाबू राम सक्सेना के अनुसार- "जिन ध्वनि प्रतीकों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उसके समस्त रूप को भाषा कहते हैं|"

अतः इस समस्या के अध्ययन की आवश्यकता इस उद्देश्य से भी न्यायोचित है कि इससे शिक्षकों के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी वर्तनी की शुद्धता से परिचित कराया जा सके|

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

किसी अध्ययन में समस्या या शोध कथन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण से समस्या को विस्तारपूर्वक समझाया जा सकता है|

1.5.1 प्रशिक्षु अध्यापक

प्रशिक्षु अध्यापक उन अध्यापकों को कहा जाता है जो वर्तमान में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे होते हैं| यानि कि जो व्यक्ति अध्यापक बनने के लिए निर्धारित योग्यता पूर्ण करने हेतु कोई पाठ्यक्रम को पूर्ण करने हेतु उसमें प्रवेश लेते हैं तो वह सेवापूर्व प्रशिक्षण ले रहे होते हैं, उन्हें ही प्रशिक्षु अध्यापक कहा जाता है| अध्यापक प्रशिक्षण से संबन्धित विभिन्न पाठ्यक्रम सरकारों द्वारा चलाये जा रहे हैं जिनमें बी. एड., डी.एल.एड., डी.एड.बी.एल. एड. आदि पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं| विभिन्न पाठ्यक्रम अलग-अलग स्तर पर शिक्षक बनने के लिए होते हैं|

1.5.2 लेखन कौशल

लेखन की कला स्थायी साहित्य का अंग है, लेखन की विषयवस्तु साहित्य का क्षेत्र होता है और वाक्य लिखित भाषा अभियक्ति का माध्यम होता है| लेखन में सोचने तथा चिन्तन के लिए अधिक समय मिलता है जबकि वाचन में भावाभिव्यक्ति का सतत प्रवाह बना रहता है सोचने का समय नहीं रहता| मानव जीवन में लेखन तथा वाचन दोनों रूपों का महत्व है| मौखिक भाषा की ध्वनियों को जिन विशिष्ट चिह्नों द्वारा लिखित रूप में व्यक्त करते हैं, उसे लिपि कहते हैं| लिपि के ज्ञान से ही भाषा के मौखिक रूप को लिखित रूप में बदला जा सकता है| भाषा विशेष में स्वीकृत लिपि प्रतीकों के माध्यम से भावों-विचारों को अंकित करने की कुशलता को लेखन कौशल कहा जाता है|

1.5.3 विश्लेषणात्मक

विश्लेषण में समस्या को छोटे-छोटे टुकड़ो में बाँटकर अध्ययन किया जाता है| इसका शाब्दिक अर्थ होता है किसी भी समस्या का विस्तारपूर्वक अध्ययन करना| किसी समस्या की तह तक हम किस प्रकार जाएँ यह हमे विश्लेषण द्वारा ही ज्ञात होता है|

1.5.4 अध्ययन

किसी विषयवस्तु को गहनता के समझना तथा समझकर सीखना अध्ययन कहलाता है| उसका जितना अधिक हम अनुकरण करेंगे उतना ही वह अध्ययन सार्थक कहलाएगा| अध्ययन आत्मसात करने की प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों सहित सम्पूर्ण मानवजाति के लिए महत्वपूर्ण है|

.5.5.1 बाँदा जनपद

बाँदा जनपद भारत के उत्तर-प्रदेश राज्य के अंतर्गत आता है| यह बुंदेलखण्ड परिक्षेत्र की प्रमुख लोकसभा सीट है| यह कर्णावती नदी के तट पर स्थित है| यह जिला मुख्यालय रेल एवं सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है| इस शहर का नाम महाऋषि वामदेव के नाम पर पड़ा है| बाँदा महाऋषि वामदेव की तपोस्थली है| यह शहर ऐतिहासिक होने के साथ-साथ प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में भी जाना जाता है| इसके अंतर्गत कलिंजर का ऐतिहासिक दुर्ग भी आता है जो इतिहास में अत्यंत प्रसिद्ध दुर्ग है| बाँदा जिले के अंतर्गत चार तहसीलें आती हैं- अतर्रा, नरेनी, बाँदा और बबेरु आती हैं| यह ज़िला 24.53°N 80.07°E से 25.55°N 81.34°E निर्देशांकों के मध्य स्थित हैं। ज़िलें में बाघिन, केन तथा यमुना मुख्य नदियाँ हैं। पठारी भूमि होने के कारण भूमि काफी उबड़ खाबड़ है। ज़िले के उत्तर में फतेहपुर जिला, पूर्व में चित्रकूट जिला, पश्चिम में हमीरपुर व महोबा जिला तथा दक्षिण में मध्य- प्रदेश राज्य के छतरपुर तथा सतना ज़िला स्थित है।

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध समस्या का अध्ययन निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है, यदि इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर समस्या का विश्लेषण किया जाए तो अध्ययन सारगर्भित हो जाता है|

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1.बाँदा जनपद के प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना|

2. प्रशिक्षु महाविद्यालयों में भाषा प्रयोगशाला का अवलोकन करना|

3. बाँदा जनपद के प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल दक्षता का लिंगानुसार तुलनात्मक अध्ययन करना|

4. प्रशिक्षुओं में लेखन कौशल संबंधी कठिनाइयों का अवलोकन करना|

5. प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल विकसित करने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना|

6. समग्र लेखन कौशल में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन करना|

7. वर्तमान शिक्षण, सीखने के वातावरण का निरीक्षण करना तथा आवश्यक सुझाव देना|

8. लेखन कौशल प्रदर्शन पर प्रशिक्षुओं की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि और उसके प्रभाव का आकलन करना|

9. प्रशिक्षुओं द्वारा लेखन में लगातार की गई त्रुटियों की पहचान करना|

10. लेखन कौशल के सीखने में प्रशिक्षुओं की रुचि का परीक्षण करना|

1.7 परिकल्पना

किसी व्यक्ति को जिस समय कोइ समस्या होती है तो वह उसके समाधान के उपायों पर विचार करने लगता है| परिणामस्वरूप जो उपाय उसके मन मस्तिष्क में आते हैं, वे समस्या के संभावित समाधान होते हैं| यह ऄलग बात है कि वे बाद में ऄसत्य सिद्ध हों या सत्य सिद्ध हों| इसी प्रकार जब शोधकर्ता किसी शोध समस्या का अन्तिम रूप से चयन कर लेता है तो वह उसका ऄस्थायी समाधान या संभावित समाधान एक परीक्षणीय प्रस्ताव के रूप में करता है| इसी परीक्षणीय प्रस्ताव को शोध तकनीकी भाषा में परिकल्पना कहा जाता है| अर्थात किसी समस्या का एक प्रस्तावित परीक्षणीय उत्तर ही परिकल्पना कहलाता है| परिकल्पना अंग्रेजी भाषा के शब्द Hypothesis का हिन्दी रूपांतरण है|

Hypo- अपुष्ट Thesis-मान्यता

Hypothesis-अपुष्ट मान्यता परिकल्पना कहलाती है|

विभिन्न विद्वानों द्वारा परिकल्पना को अधोलिखित रूपों में परिभाषित किया गया है-

वॉन डालेन के अनुसार-

"परिकल्पना अनुसंधान पथ में प्रकाश स्तम्भ का कार्य करती है|"

टाउनसेंड के अनुसार –

"परिकल्पना समस्या का प्रस्तावित उत्तर होती है|"

जॉन डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार-

"परिकल्पना एक ऐसा पूर्वानुमान है जो घटनाओं तथा परिस्थितियों की व्याख्या करने हेतु अस्थायी रूप से किया जाता है और जो अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता करती है|"

परिकल्पना की उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि परिकल्पना शोधकार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है| इसके द्वारा मार्गदर्शन, समस्या का निश्चयीकरण, प्रमुख तथ्यों का विश्लेषण व्याख्या, सुझाव एवं निष्कर्ष आदि में सहायता मिलती है| प्रस्तुत लघु शोध की परिकल्पनाएं निम्न हैं-

1- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं के लेखन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है|

2- ग्रामीण एवं शहरी प्रशिक्षुओं के लेखन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है|

1.8 अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत लघु शोध में साधन शक्ति एवं सीमित समय होने के कारण उनके सभी पहलुओं का अध्ययन करना असंभव है| अतः प्रस्तुत अध्ययन की कुछ परिसीमाएं हैं-

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल बाँदा जनपद के प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षु अध्यापकों तक सीमित है|

2. प्रस्तुत अध्ययन में प्रशिक्षु अध्यापकों की लेखन कौशल क्षमता को जानने का प्रयास किया गया है|

3. प्रस्तुत अध्ययन को ग्रामीण,शहरी एवं छात्र,छात्राओं में विभाजित कर किया गया है|

4. प्रस्तुत अध्ययन केवल नियमित विद्यार्थियों तक सीमित है| इसमें पत्राचार, व्यक्तिगत एवं मुक्त विद्यालय के विद्यार्थियों को शामिल नहीं किया गया है|

5. प्रस्तुत अध्ययन केवल दिवा छात्रों तक सीमित है| इसमें आवासीय छात्रों को शामिल नहीं किया गया है|

1.9 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

शिक्षा गतिशील एवं चैतन्यमयी विचार प्रक्रिया है, जो बालक के आचार-विचार, व्यवहार एवं दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन ला देती है जिससे उसकी सुप्त प्रतिभाओं एवं सदगुणों का विकास होता है| इसी में शिक्षा प्रक्रिया की सार्थकता निहित है|

किसी भी स्तर पर शोधकार्य तब तक उपयोगी नहीं हो सकता जब तक कि शिक्षा और समाज के लिए वह उपयोगी और सार्थक न हो| इस शोधकार्य का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि वर्तमान समय में अंग्रेजी भाषा को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है जिससे हिन्दी भाषा की ओर से लोगों का रुझान कम हो रहा है| अंग्रेजी विद्वता की परिभाषा बनती जा रही है| विशेष अवसरों पर हिन्दी के प्रति श्रद्धा दिखाकर हम अपने हिन्दी के प्रति कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं| हिन्दी भाषा में कतिपय अनेक शोध अध्ययन किए जाने कि आवश्यकता है, जिससे हिन्दी की समृद्धि में अमूल्य योगदान दिया जा सके|

अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन मानव संसाधन के विकास एवं प्रगति के लिए महत्त्वपूर्ण है| अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष हिन्दी लेखन कौशल के प्रति जागरूकता एवं उसके सफल क्रियान्वयन के लिए मील के पत्थर साबित होंगे|

द्वितीय-अध्याय
सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना शोध कार्य अंधे के तीर के समान होगा| इसके अभाव में व्यक्ति सही दिशा में एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता है, जब तक कि यह ज्ञात ना हो जाए इस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है| किस-किस के द्वारा किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आए थे तब तक वह ना तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और ना ही उसकी रूपरेखा तैयार कर आगे बढ़ सकता है|

किसी भी विषय के किसी विशेष शोध प्रारूप को बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धांत एवं शोधों को भलीभांति अवगत होना चाहिए| इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारंभिक अवस्था में इसके सिद्धांत एवं सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा करनी होती है| संसार के समस्त प्राणियों में मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र किए ज्ञान का लाभ उठा सकता है| मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं- ज्ञान को एकत्र करना, उसे दूसरे तक पहुंचाना तथा ज्ञान में वृद्धि करना| यह तथ्य शोध कार्य में विशेष रूप से महत्वपूर्ण होते हैं| शोध कार्य में सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन शोधकर्ता को नवीनतम ज्ञान के शिखरों तक ले जाता है, जहां उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निष्कर्ष एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहां रिक्तियां हैं, कहां निष्कर्ष विरोध है और कहां अनुसंधान की पुनःआवश्यकता है| सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण में दो शब्द हैं- साहित्य और समीक्षा| साहित्य शब्द परंपरागत अर्थ से भिन्न अर्थ प्रदान करता है| यह भाषा के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है जैसे-हिंदी साहित्य, संस्कृत साहित्य और आंग्ल साहित्य| इस की विषयवस्तु के अंतर्गत गद्य, काव्य, नाटक आदि आते हैं| अनुसंधान के क्षेत्र के साहित्य शब्द किसी विषय के अनुसंधान के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की ओर संकेत करता है, जिसके अंतर्गत सैद्धान्तिक, व्यावहारिक तथा तथ्यात्मक शोध अध्ययन आते हैं|

समीक्षा शब्द का अर्थ शोध के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की व्यवस्था करना एवं ज्ञान को विस्तृत करके यह दिखाना है कि उसके द्वारा किया गया अध्ययन इस क्षेत्र में एक योगदान होगा| साहित्य की समीक्षा का कार्य अत्यंत सृजनात्मक एवं थकाने वाला होता है क्योंकि शोधकर्ता को अपने अध्ययन को युक्तिपूर्ण कथन प्रदान करने के लिए प्राप्त ज्ञान को अपने ढंग से एकत्र करना होता है, साहित्य की समीक्षा के अर्थ को समझाने के लिए हम निम्न कथनों पर विचार करेंगे| सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र-पत्रिकाओं एवं शोध अभिलेखों के अध्ययन आदि से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण एवं अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने का कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है|

गुडबार एवं स्केट्स के अनुसार-

"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है|"

डब्ल्यू. आर. वर्ग के अनुसार-

"किसी भी क्षेत्र का साहित्य उसकी नींव को बनाता है, जिसके ऊपर भविष्य का कार्य किया जाता है| यदि हम साहित्य की समीक्षा द्वारा प्रदान किए गए ज्ञान की नींव बनाने में असमर्थ होते हैं तो हमारा कार्य संभवतः तुच्छ और प्रायः उस कार्य की नकल मात्र होता है जो कि पहले ही किसी के द्वारा किया जा चुका होता है|"

जॉन डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार-

"व्यावहारिक रूप से सारा मानव ज्ञान भंडार पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है, अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नए सिरे से प्रारंभ करते हैं मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है| ज्ञान के अथाह भंडार में मानव का निरंतर योगदान सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है|"

शोध कार्य के अनुशीलन हेतु कई प्रकार की सामग्रियां उपलब्ध हैं जिनमें से कुछ प्रमुख हैं- शोध पत्रिकाएं, जरनल्स, नेशनल एंड इंटरनेशनल एजुकेशन रिसर्च, एब्स्ट्रेक्ट, शोध प्रबंध या लघु शोध प्रबंध इंटरनेट इत्यादि|

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन की आवश्यकता-

वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अनुशीलन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होता है, क्योंकि उसे यह जानकारी नहीं हो पाती है कि सम्बन्धित क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है तथा पूर्व के अनुसंधानों में क्या कमियां रह गई थीं? अतः सम्बन्धित साहित्य के अनुशीलन से पूर्व अनुसंधान प्रतिवेदनों की अच्छाइयों एवं बुराइयों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है| अनुसंधान कार्य में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन निम्न कारणों से महत्वपूर्ण होता है-

- यह अध्ययन की समस्या को साधन प्रदान करता है तथा शोध की समस्या को चयन करने तथा पहचानने में सहायता करता है|
- यह अध्ययन के लिए आधार प्रदान करता है तथा इससे अध्ययन के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद-विवाद किया जा सकता है|
- यह वास्तविक योजना बनाने और अध्ययन करने में अत्यंत महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है|
- यह शोध को गुणात्मक तथा विश्लेषणात्मक दिशा प्रदान करता है|
- इसकी सहायता से शोधकर्ता अपनी परिकल्पना का निर्माण करता है|

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के उद्देश्य-

शोध कार्य में साहित्य की समीक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य होते हैं-

- यह समस्या के समाधान के लिए उचित विधि, प्रक्रिया तथ्यों के साधन और सांख्यिकी तकनीकी का सुझाव देता है|
- यह सिद्धांत, विचार, व्याख्यान अथवा परिकल्पनाएं प्रदान करता है जो नई समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते हैं|

- यह शोध कार्य किए गए क्षेत्र में शोधकर्ता की निपुणता और सामान्य ज्ञान को विकसित करने में सहायक होता है|

ब्रूस. डब्ल्यू. टाकसन(1978)

साहित्य समीक्षा के निम्नलिखित देश बतलाए गए हैं|

- महत्वपूर्ण चरों को खोजना|
- शोध कार्य का स्वरूप बनाने के लिए प्राप्त अध्ययनों का संकलन करना|
- जो हो चुका है उससे जो करने की आवश्यकता है उसको पृथक करना|
- समस्या का अर्थ इसकी उपयुक्तता समस्या से इसका संबंध और पास अध्ययन से इनके अंतर को निर्धारित करना|

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्व-

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के महत्व को स्वीकार करते हुए गुड, बार तथा स्केट्स ने कहा है कि **"जिस प्रकार एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक होता है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु के लिए यह आवश्यक है कि वह अनुसंधान क्षेत्र में हुई नई खोजों एवं ज्ञान से परिचित होता रहे|"**

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्व निम्नांकित कारणों से स्पष्ट होता है|

- यह अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है|
- अनुसंधान की विधि में सुधार कर श्रम की बचत करता है|
- समस्या क्षेत्र के शोध की वस्तुस्थिति को समझना|
- विचारणीय शोध की सफलता और निष्कर्षों की उपादेयता अथवा महत्व की संभावना का आंकलन करना|

- विचारणीय शोध के लिए निर्देशोंअथवा संदेशों की अवधारणाओ को निर्मित करना|
- शोध की परिभाषाओं,कल्पनाओं,सीमाओं और परिकल्पनाओं के विश्लेषण के लिए आवश्यक जानकारी देना|
- शोध विधियों तथा तथ्यों के विश्लेषण को आधार प्रदान करना|

2.2 हिन्दी शिक्षण से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन –

शोधकर्ता को समस्या से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित जो शोधकार्य उपलब्ध हो पाये हैं उनका अध्ययन करके लघु शोध को तर्कपूर्ण व व्यावहारिक बनाने का प्रयास किया है| हिन्दी शिक्षण से सम्बन्धित कतिपय शोधकार्यों का विवरण इस प्रकार है|

- **दराडे श्रीहरी दशरथ(2017)** ने ‘‘कक्षा नौवीं के छात्रों को हिंदी विषय निबंध लेखन में पारंपरिक एवं सृजनशील प्रतिमान पद्धति से अध्यापन- एक तुलनात्मक अध्ययन’’ विषय पर शोध किया| शोधकर्ता का उद्देश्य नौवीं कक्षा के हिंदी भाषा विषय में निबंध लेखन का अध्यापन करते समय पारंपरिक अध्यापन पद्धति की प्रभावशीलता का अध्ययन करना रहा| शोधकर्ता द्वारा अध्ययन क्षेत्र हेतु महाराष्ट्र के जलगाँव जिले का चयन किया गया| इसके साथ ही जलगाँव जिले के मराठी माध्यम के सभी माध्यमिक विद्यालयों को चयनित किया गया| न्यादर्श हेतु कक्षा नौवीं के विद्यार्थी चुने गए| इस अध्ययन में निबंध रचना शिक्षण का समावेश किया गया है| हिंदी भाषा के वाचन, श्रवण, लेखन कौशलों में से केवल लेखन कौशल पर ही विचार किया गया| इस शोध में केवल पश्चात नियंत्रित अभिकल्प प्रयोग किया गया| जलगाँव जिले की विभिन्न तहसीलों के कुल छह मराठी माध्यम के अनुदान प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों को उद्देश्य पूर्ण विधि द्वारा चयनित किया गया है| कक्षा नौवीं के विद्यार्थियों में हिंदी विषय में निबंध लेखन अध्यापन के लिए पारंपरिक अध्ययन पद्धति की अपेक्षा सृजनशीलता प्रतिमान अधिक प्रभावशाली रहा|
- **नंदाला बालमणि दशरथ(2016)** ‘‘स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय अंतर्गत आने वाले अध्यापक महाविद्यालयों के छात्र-अध्यापकों का हिंदी भाषा संप्रेषण कौशल- एक अध्ययन’’ विषय पर शोध

किया गया| प्रतिदर्श के रूप में स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले अध्यापक महाविद्यालयों को चयनित किया गया| अध्ययन विषय के रूप में छात्र-अध्यापकों के केवल हिंदी भाषा संप्रेषण कौशल को ही लिया गया| प्रदत्तों के संग्रह हेतु हिंदी भाषा संप्रेषण कौशल मापनी का ही प्रयोग किया गया| छात्र-अध्यापकों ने हिंदी में सुने हुये कथन का अर्थ ग्रहण करने में बहुत ही कम गलतियां कीं| छात्र-अध्यापकों ने हिंदी भाषा के मुहावरों और कहावतों का अर्थ समझने में गलतियां कीं| छात्र-अध्यापकों ने वक्ता का कथन समाप्त होने पर अपनी शंकाओं के समाधान हेतु प्रश्न नहीं पूछे| छात्र-अध्यापक वक्ता के बोलने के समय दूसरी ओर कम ही देखते हैं| छात्र-अध्यापकों द्वारा लेखन करते समय अनुस्वार(.) की औसत गलतियां की गई| छात्र-अध्यापक हिंदी भाषा के श्रवण में उदासीन हैं| महाविद्यालय में हिंदी वातावरण का अभाव, भाषा प्रयोगशाला का अभाव तथा समय की कमी के कारण छात्र-अध्यापक गलतियां करते हैं|

- **श्याम चरण(2012)-** "हरियाणा राज्य में प्राथमिक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के हिंदी विषय में सीखने के न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त करने में आने वाली बाधाओं के स्वरूप एवं कारणों का अध्ययन" इस शोध कार्य हेतु केवल हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों को चुना गया| इस शोध में हरियाणा के 4 जिलों के 400 बच्चों एवं 40 शिक्षकों को अध्ययन हेतु चयनित किया गया| इसमें केवल हरियाणा राज्य के अनुसूचित जाति के बच्चों को ही शामिल किया गया| 400 विद्यार्थियों में केवल 10 विद्यार्थियों ने ही हिंदी विषय में न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति की| केवल 18.5 प्रतिशत विद्यार्थी दो अलग-अलग दक्षताओं में न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति कर पाए| 400 विद्यार्थियों में केवल 78 विद्यार्थी हैं जो भाषा की किसी भी दक्षता में न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त नहीं कर पाए| सुनना दक्षता में 66.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने ही न्यूनतम दक्षता स्तर की प्राप्ति की| बोलना दक्षता में 49.5प्रतिशत विद्यार्थियों ने ही न्यूनतम दक्षता स्तर की प्राप्ति की| पठन दक्षता में केवल प्रतिशत विद्यार्थी ही न्यूनतम दक्षता को प्राप्त कर सके| लेखन दक्षता में केवल 3% विद्यार्थी ही न्यूनतम दक्षता स्तर की प्राप्ति कर सके| अर्थ बोधन दक्षता में केवल 39.5% विद्यार्थियों ने ही न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त किया|

- **शिशिर कुमार यादव (2013)** “बी. एड. के हिन्दी छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण में सुधार हेतु कार्यक्रमों की रचना एवं उसकी प्रभावशीलता का अध्ययन” प्रस्तुत शोध में छात्र-अध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का अध्ययन किया गया, इसका उद्देश्य हिंदी में सुधार हेतु कार्यक्रम की रचना करना है| इसमें वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के सत्र 2010-11 के कुल 100 छात्र-अध्यापकों को शामिल किया गया| आजमगढ़ जनपद के 4 शिक्षा केंद्रों का चयन किया गया| अध्यापक वार्ता पर पूर्व के कक्षा शिक्षण व्यवहार से कार्यक्रम के अध्ययन व प्रशिक्षणोपरांत का कक्षा शिक्षण व्यवहार प्रभावशाली पाया गया| परोक्ष अध्यापक वार्ता पर पूर्व के कक्षा-शिक्षण व्यवहार से कार्यक्रम के अध्ययन व प्रशिक्षोंपरांत का कक्षा शिक्षण व्यवहार प्रभावशाली पाया गया|
- **स्वप्ना मल्लिक (2009)** “दक्षिण भारत में हिंदी भाषा के कौशल शिक्षण के संदर्भ में प्रचलित वर्तमान प्रविधियां एक आलोचनात्मक अध्ययन(बेंगलुरु महानगर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कन्नड़ भाषी छात्रों के विशेष संदर्भ में)” दक्षिण भारत के संदर्भ में यह देखा जाता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर हिंदी पढ़ने वाले दो प्रकार के छात्र होते हैं, एक वे जिनकी मातृभाषा हिंदी या या हिंदी की कोई अन्य बोली होती है या कभी कभी हिंदी तथा द्रविड़ से इतर कोई और भाषा उनकी मातृभाषा होती है तथा दूसरे वे जिनकी मातृभाषा द्रविड़ परिवार की कोई भाषा होती है, यही स्थिति हिंदी अध्यापकों की है| इस अध्ययन में कर्नाटक के बेंगलुरु को शामिल किया गया है| इस अध्ययन में 2007 से 2011 तक हिंदी की परीक्षा में शामिल होने वाले विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया| प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि हिंदी अध्यापन में प्रयुक्त प्रविधियाँ कन्नड़ भाषी हिंदी छात्रों की बोध तथा अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाने में कितनी सहायक है| यह अध्ययन बेंगलुरु महानगर के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में विभाजित है| कक्षा अध्यापन में छात्रों को सुनने का अधिकाधिक अवसर दिया जाता है| यह अवसर अध्यापकों अथवा सहपाठियों द्वारा प्रदान किया जाता है| छात्रों की बोलने संबंधी अशुद्धियों का तत्काल सुधार किया जाता है|

2.3 अध्ययन से सम्बन्धित समाचार लेख-

- **दैनिक भास्कर- Apr 27, 2017,** शब्द ज्ञान की वृद्धि के लिए श्रुतलेख जैसी प्रतियोगिताएं जरूरी: राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खुर्दबन में बुधवार को कक्षा तत्परता कार्यक्रम के तहत सीनियर ग्रुप से श्रुतलेख...वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खुर्दबन में बुधवार को कक्षा तत्परता कार्यक्रम के तहत सीनियर ग्रुप से श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें नौवीं से बारहवीं तक के बच्चों ने भाग लिया। प्रिन्सिपल ने विजेता बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। प्रिन्सिपल ने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताओं से बच्चों के शब्द ज्ञान में वृद्धि होती है तथा भाषा के प्रति रुचि पैदा होती है। प्रतियोगिता में भाग लेने से बच्चों का उत्साह बढ़ता है और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।
- **दैनिक जागरण- aug 9,2019** हिन्दी के प्रचार-प्रसार को गति देने की जरूरत, बीएसएल के मानव संसाधन विकास विभाग में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया| उपप्रबन्धक महोदय ने राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को गति देने के लिए कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया| उन्होने विभाग में कविसम्मेलन करने एवं हिन्दी पत्रिका प्रकाशित करने की बात कही|
- **दैनिक भास्कर- Sep 02, 2018,** स्कूल में हिंदी राजभाषा पखवाड़ा शुरू; हिंदी राजभाषा पखवाड़े का शुभारंभ परमाणु ऊर्जा केंद्रीय स्कूल नंबर 2 में शनिवार को दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इसमें हिंदी भाषा का महत्व और दैनिक जीवन में उसकी उपयोगिता की जानकारी दी गई। स्टूडेंट्स ने समूहगान प्रस्तुत किया। हिंदी भाषा प्रभारी ओमप्रकाश शर्मा ने कहा कि पखवाड़े के अंतर्गत चलने वाले स्कूल के सभी कार्यक्रम हिंदी भाषा में ही संपन्न किए जाएंगे। जिसमें स्टूडेंट्स के लिए सुलेख, श्रुतलेख, निबंध, कविता, रचना और काव्यपाठ प्रतियोगिताएं होंगी। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य सहित सभी शिक्षक मौजूद थे|
- **दैनिक भास्कर- Jul 10, 2018,** जूनियर्स के लिए श्रुतलेख और सीनियर्स के लिए हुई अनुच्छेद लेखन स्पर्धा बिट्स इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों में हिंदी साहित्य के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए अंतर कक्षा स्तर पर जूनियर वर्ग के लिए श्रुतलेख व सीनियर वर्ग के लिए अनुच्छेद लेखन प्रतियोगिता करवाई।

प्रधानाचार्य ने बताया कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से छात्रों में स्पर्धा के साथ-साथ उनके मनोबल की वृद्धि होती है| उनका भाषा के प्रति दृष्टिकोण भी विस्तृत होता है|

- **दैनिक भास्कर- Sep 29, 2017,** 'श्रुतलेखन में विशाल तथा कहानी लेख में मुस्कान पहले स्थान पर' हरियाणा शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जाखौली अड्डा कैथल में पढ़े भारत-बढ़े भारत के तहत कक्षा 6 से 8 के बच्चों की प्रतियोगिताएं आयोजित करवाई गई थी। हिंदी प्राध्यापक विजय कुमार चावला ने बताया कि राजकीय उच्च विद्यालय खनौदा से कक्षा आठवीं के दो बच्चों ने इस जिलास्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया था। दोनों छात्रों ने खंड स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उन्होंने बताया कि विशाल ने हिंदी श्रुतलेख तथा वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तथा मुस्कान ने कहानी लेखन में प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में विशाल ने जिला स्तर पर आयोजित हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता में इस विद्यालय के विशाल ने 20 में से 20 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

इस अध्याय में शोधर्थी द्वारा लेखन कौशल से से संबन्धित भारत के विभिन्न राज्यों में किए गए शोध अध्ययनों को संकलित किया गया है और पाया कि सैद्धान्तिक आधार पर हम कुछ मान्यताएँ या पूर्व विचारधाराएँ सुनिश्चित कर लेते हैं परन्तु कई बार अध्ययन के उपरांत इसमें भिन्नता दिखाई देती है| अनेक अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि सामाजिक, आर्थिक तथा व्यक्तिगत कारणों से ग्रामीण तथा शहरी पुरुष व महिला विद्यार्थियों की जागरूकता में भिन्नता पायी गई है| उपरोक्त शोध अध्ययनों का अवलोकन करने के उपरांत शोधार्थी ने यह पाया कि प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल पर पर्याप्त शोध नहीं हुये हैं| प्रस्तुत शोध अध्ययन इस अभाव की पूर्ति का माध्यम है| अतः शोधकर्ता ने लेखन कौशल के प्रति प्रशिक्षण विद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षुओं की जागरुकता का अध्ययन करने का प्रयास किया है|

तृतीय-अध्याय

शोध अध्ययन की प्रक्रिया

3.1 शोध विधि

ज्ञानार्जन के यद्यपि अनेक आध्यात्मिक एवं वास्तविक, भौतिक एवं अभौतिक तथा संस्थागत एवं व्यक्तिगत स्रोत हो सकते हैं किन्तु शोध द्वारा ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन तर्क का प्रयोग है| तर्क का प्रयोग निगमन और आगमन विधि के आधार पर किया जा सकता है| निगमन विधि पर तर्क का क्रम 'सामान्य से विशिष्ट की ओर' रहता है जबकि आगमन विधि में तर्क का क्रम 'विशिष्ट से सामान्य की ओर रहता है| विधि तंत्र शोध का आवश्यक अंग होता है, इसके द्वारा समग्र अनुसंधान की दिशा तथा योजना निर्धारित होती है, जिस पर शोध कार्य अवलंबित होता है| शोध स्वरूप सुनिश्चित होने के साथ-साथ अध्ययन के लिए आवश्यक उपकरणों अथवा मापों का चयन, प्रतिदर्श का निर्धारण तथा परिकल्पना परीक्षण हेतु उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का चयन भी समाविष्ट होता है|

प्रस्तुत अनुसंधान में आगमन विधि का प्रयोग किया गया है| निष्कर्षों की संपुष्टि एवं सामान्यी सरन हेतु सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया है| प्रस्तुत अनुसंधान तुलनात्मक प्रकृति का सर्वेक्षण आधारित लघु अनुसंधान है| इसके अंतर्गत प्रशिक्षु अध्यापकों में हिन्दी लेखन कौशल के प्रति छात्र-छात्राओं की अशुद्धियों का अध्ययन एक श्रुत

लेख पत्रक द्वारा किया गया है| सर्वेक्षण के द्वारा प्राप्त सूचनाओं के द्वारा समंक निर्मित किए गए हैं तथा अनुसंधान के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के अनुरूप उन्हें वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध करके उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों यथा माध्य(Mean), प्रमाप विचलन (S. D.), क्रांतिक अनुपात (C. R.), आदि के द्वारा मूक समंकों को भाषा प्रदान करके निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं|

3.1.1 सर्वेक्षण विधि-

प्रस्तुत शोध कार्य में आदर्शमूलक सर्वेक्षण पद्धति के अंतर्गत श्रुतलेख पत्रक सर्वेक्षण का प्रयोग किया गया है| सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किसी क्षेत्र में निश्चित तथ्यों की जानकारी करने के लिए किया जाता है, किन्तु परिस्थितिवस जब किसी आबादी की समस्त इकाइयों का सर्वेक्षण नहीं होता है और केवल एक उपयुक्त नमूने का सर्वेक्षण किया जाता है तो उस प्रतिदर्श को सर्वेक्षण विधि कहते हैं|अतः इसकी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुये वर्तमान अनुसंधान का कार्य संपन्न किया गया है| इस पद्धति में मनोवैज्ञानिक चरों के घटित होने की आवृत्ति उनके वितरण एवं पारस्परिक संबंधों का निर्धारण करने के लिए समष्टि का अध्ययन और उस समष्टि के प्रतिनिध्यात्मक प्रतिदर्श से प्राप्त किया जाता है|

सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिदर्श में मनोवैज्ञानिक चरों का मापन कर उनकी अभिवृत्ति का निरूपण कर समष्टि के विभेदीय भागों में उसके वितरण का वर्णन कर जन-सांख्यिकीय कारों का मनोवैज्ञानिकों चरों के साथ संबंध का निर्धारण करना है|

सर्वेक्षण अनुसंधान के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए करलिंगर(1973) ने लिखा है-

“सर्वेक्षण अनुसंधान जनसंख्याओं द्वारा चुने गये प्रतिदर्शों के द्वारा व्यापक एवं कम आकार वाली जनसंख्याओं अथवा समष्टियों का अध्ययन है, जिससे उसमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक परिवृत्यों के सापेक्षिक घटनाओं, वितरणों तथा परस्परिक अंतर सम्बन्धों का ज्ञान हो सके|”

मार्स महोदय ने कहा है कि “सर्वेक्षण विधि एक विशेष सामाजिक समस्या अथवा समष्टि से संबंधित उद्देश्यों हेतु व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक विश्लेषण की एक विधि है|”

अतः तथ्यों के वर्तमान स्तर को ज्ञात करने हेतु इस विधि का चयन किया गया है|

3.2 अध्ययन समष्टि-

किसी भी शोध अध्ययन में जीव संख्या या जनसंख्या का अर्थ अध्ययन की इकाइयों के समूह के रूप में लिया जाता है| व्यवहारपरक शोध चाहे वह प्रयोगात्मक हो या अप्रयोगात्मक हो, उनमें एक जनसंख्या से चुने गए कुछ व्यक्तियों या वस्तुओं के आधार पर शोधकर्ता एक अनुमान या निष्कर्ष पर पहुँचता है| जनसंख्या या समष्टि से तात्पर्य ऐसे व्यक्तियों या वस्तुओं से होता है जिसे शोधकर्ता अपने शोध के संदर्भ में स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है तथा उसकी पहचान करके रखता है| जनसंख्या की संख्या में सभी प्रकार (स्त्री, पुरुष, बच्चे) का लेखा-जोखा तैयार किया जाता है| शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है वह सजातीय होते हैं| उदाहरण के लिए बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के बी. एड. के छात्रों की जनसंख्या, इसमें से एक प्रकार की इकाइयों का न्यादर्श के लिए चयन किया जाए, जिससे सभी प्रकार (छात्र-छात्राएं, विज्ञान स्नातक, कला स्नातक, परास्नातक, विभिन्न आयु वर्ग) के छात्र सम्मिलित किए जा सकें| समष्टि के सबसे छोटे भाग अथवा अंग को इकाई कहते हैं अतः समष्टि इन इकाइयों अथवा व्यक्तियों का सामूहिक रूप होती है|

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जीव संख्या के परिमित रूप को लिया गया है| परमित जीव संख्या वैसी जीव संख्या को कहा जाता है जिसके सदस्यों की गिनती की जा सकती है| प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने बाँदा जनपद के प्रशिक्षु विद्यालयों की जनसंख्या के रूप में अतर्रा तहसील के प्रशिक्षु विद्यालयों को लिया है| प्रस्तुत शोध में दो प्रकार की समष्टि को सम्मिलित किया गया है|

- विद्यालय समष्टि
- विद्यार्थी समष्टि
- विद्यालय समष्टि: प्रस्तुत अध्ययन में शोध समष्टि के अंतर्गत बाँदा जनपद के समस्त विद्यालय समाविष्ट हैं|
- विद्यार्थी समष्टि: प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थी समष्टि से तात्पर्य प्रशिक्षु अध्यापक अर्थात सेवा पूर्व कालीन प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षुओं से है|

3.3 प्रतिदर्श चयन

शोधकर्ता अपने शोध के लिए जीव संख्या से निश्चित संख्या में कुछ सदस्यों या वस्तुओं का चयन कर लेता है, इस चयनित संख्या को ही व्यवहारपरक शोध में प्रतिदर्श कहा जाता है| शिक्षा के क्षेत्र में न्यादर्श का विशेष महत्व है| न्यादर्श के बिना शोध कार्य को शीघ्रता तथा सरलता से पूरा करना कठिन है| जनसंख्या की सभी इकाइयों का अध्ययन कष्ट साध्य एवं अधिक खर्चीला होता है| अनुसंधान कार्य में अनुसंधानकर्ता जनसंख्या की समस्त इकाइयों में से कुछ एक का अध्ययन करके संपूर्ण इकाइयों का निष्कर्ष निकाल लेता है अर्थात न्यादर्श समूचे समूह का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करता है|

न्यादर्श के प्रयोग से अध्ययन कार्य व्यावहारिक एवं समय, श्रम, साधन व धनराशि की दृष्टि से मितव्ययी हो जाता है| न्यादर्श के प्रयोग से परिणाम शुद्ध एवं शीघ्रता से प्राप्त हो जाते हैं|

गुड तथा हैट के अनुसार, "एक प्रतिदर्श एक बड़े समग्र का छोटा प्रतिनिधि है|"

करलिंगर के अनुसार, "प्रतिदर्श समग्र जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले अंशों का चयन है|"

वोगार्ड्स(1954) के अनुसार, "पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव ही प्रतिचयन कहलाता है|"

प्रतिदर्श प्रणाली के गुण-

- न्यादर्श प्रणाली में अपेक्षाकृत थोड़ी इकाइयों का अध्ययन किया जाता है इसलिए इसमें समय की बचत होती है|
- यदि अनुसंधान कार्य के लिए सरकार द्वारा कोई योजना नहीं चलाई जा रही है तो अनुसंधान के लिए पर्याप्त धन एकत्र करना एक समस्या बन जाती है| न्यादर्श प्रणाली से इकाइयों की संख्या कम होने के कारण धन की पर्याप्त बचत होती है|

- इस प्रणाली में इकाइयों की संख्या अपेक्षाकृत न्यूनतम होती है, इसलिए अधिक समय तक अधिक सूक्ष्म रूप से अध्ययन तथा विवेचन किया जा सकता है|
- न्यादर्श प्रणाली द्वारा एकत्र सूचना पर्याप्त सीमा तक शुद्ध होती है|
- न्यादर्श प्रणाली में इकाइयों की संख्या कम होने से अनुसंधान का संगठन भी अधिक सरल रहता है|

प्रतिचयन

प्रतिचयन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रतिदर्श का चयन किया जाता है अर्थात प्रतिदर्श चयन करने की प्रविधि को प्रतिचयन या प्रतिदर्शन कहा जाता है|

करलिंगर ने प्रतिदर्शन को परिभाषित करते हुए लिखा है- **"किसी जीवसंख्या या समष्टि से उस जीवसंख्या या समष्टि के प्रतिनिधि के रूप में किसी भी संख्या का चयन, प्रतिचयन या प्रतिदर्शन कहलाता है|"**

3.4 न्यादर्श चयन विधि-

न्यादर्श चयन हेतु अनेक विधियों एवं प्रारूपों का विकास किया गया है परंतु उन्हें सामान्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जाता है|

- संभाव्य न्यादर्श
- असंभाव्य न्यादर्श

संभाव्य न्यादर्श

न्यादर्श के चयन में जब ऐसी विधि का प्रयोग करते हैं जिससे जनसंख्या के प्रतिनिधित्व की संभावना होती है तब उसे संभाव्य न्यादर्श की संज्ञा दी जाती है|

जी. सी. हेलमेस्टर के अनुसार-

"संभाव्य न्यादर्श उसे कहते हैं जिसमें जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य को न्यादर्श में सम्मिलित होने या चयन किए जाने की समान संभावना होती है| एक सदस्य का दूसरे सदस्य पर कोई बंधन नहीं होता है| प्रत्येक सदस्य पूर्ण रूप से स्वतंत्र होता है|"

साधारण अनियमित न्यादर्श

यह न्यादर्श अनियमितता विधि द्वारा चुना जाता है| इस चयन विधि में जनसंख्या अथवा समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति को न्यादर्श में चयन के लिए समान अवसर प्राप्त होता है| इस न्यादर्श में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के चयन पर प्रभाव नहीं डालता है|

क्रमिक न्यादर्श

यह विधि अनियमित न्यादर्श से सुधरी हुई प्रविधि है, इसमें जनसंख्या की जानकारी आवश्यक होती है| इसमें सभी के नामों की सूची या तो वर्णमाला के अनुसार या अन्य विधि से तैयार कर लेते हैं, सभी नाम एक ही विधि से लिखे जाते हैं| अब सूची में से एक क्रम से व्यक्ति अथवा इकाई का चयन करते जाते हैं| जैसे हर दसवां व्यक्ति न्यादर्श में सम्मिलित कर लिया|

बहुरूपी न्यादर्श

इस विधि में दो या दो से अधिक न्यादर्श का चयन करते हैं|

समूह न्यादर्श

जब जनसंख्या अधिक विस्तृत हो तथा दूर-दूर तक फैली हुई हो तो ऐसी स्थिति में उपर्युक्त विधियों द्वारा अध्ययन करना संभव नहीं होता है| अतः हम इस जनसंख्या का एक बड़ा समूह बना लेते हैं, यह बड़े समूह अनियमित विधि द्वारा बनाए जाते हैं| एक बड़े समूह को ही न्यादर्श मान लेते हैं तो इसे समूह न्यादर्श कहते हैं|

असंभाव्य न्यादर्श

जब न्यादर्श के चयन में संभावना का कोई स्थान नहीं होता है तब उसे असंभाव्य न्यादर्श कहते हैं| न्यादर्श और जनसंख्या एक ही होते हैं, स्थानीय शोध कार्यों में इसका प्रयोग किया जाता है| इसमें सामान्यीकरण नहीं किया जाता है|

आकस्मिक न्यादर्श

इसमें जनसंख्या में से जो भी व्यक्ति आसानी से उपलब्ध हो जाए ऐसे न्यादर्श को आकस्मिक न्यादर्श कहते हैं| माना कि किसी समस्या के प्रति बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के छात्रों की अभिवृत्ति जानना है, तो हम बुंदेलखंड विद्यालय तथा उससे संबंधित महाविद्यालयों के किन्ही छात्रों से उनकी राय पूछते जाएं, इस प्रकार यह न्यादर्श आकस्मिक न्यादर्श होगा|

सोद्देश्य न्यादर्श

कुछ उद्देश्य कार्य न्यादर्श की प्रतिनिधित्वता नहीं चाहते हैं, उन्हें अपने विशेष उद्देश्य के लिए एक विशेष उद्देशीय न्यादर्श चाहिए| जैसे कि बढ़ती हुई महंगाई का प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों पर क्या प्रभाव पड़ेगा| इसका सर्वेक्षण करना हो तो इसके लिए एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए एक विशिष्ट समूह की आवश्यकता होगी| यह जनसंख्या का प्रतिनिधि होगा| प्रभावशाली शिक्षकों के व्यक्तिगत गुणों के लिए भी इसी विधि का प्रयोग किया जाएगा|

सम्पूर्ण न्यादर्श

यह वर्गबद्ध न्यादर्श का ही एक रूप है केवल इकाइयों की चयन प्रविधि में अंतर है| इसे भी वर्गों में बांटते हैं यह सामाजिक सर्वेक्षण एवं जनसंख्या सर्वेक्षण आदि में प्रयुक्त होता है| इसमें सामान्य न्यादर्श एवं निर्णायक न्यादर्श दोनों का ही समावेश रहता है| इस न्यादर्श क्रिया में हम उन विशेषकों को ध्यान में रखकर संपूर्ण कोष को निर्धारित करते हैं जो कि इकाइयों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं|

निर्णित न्यादर्श

अनुसंधानकर्ता अपने किसी उद्देश्य के लिए स्वयं निर्णित इकाइयों के समूह का चयन करता है, इस समूह को निर्णय न्यादर्श कहते हैं|

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श चयन विधि का उपयोग करते हुए आंकड़े एकत्र किए हैं शोधकर्ता ने सर्वप्रथम बाँदा जनपद की अतर्रा तहसील में स्थित प्रशिक्षण विद्यालयों का चयन किया तथा विद्यालयों के प्रशिक्षु अध्ययपकों को ग्रामीण एवं शहरी तथा छात्र और छात्राओं में विभाजित किया||

शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय

प्रस्तुत शोध अध्ययन में तीन प्रशिक्षण विद्यालयों का चयन किया गया है, जो अतर्रा में स्थित हैं|
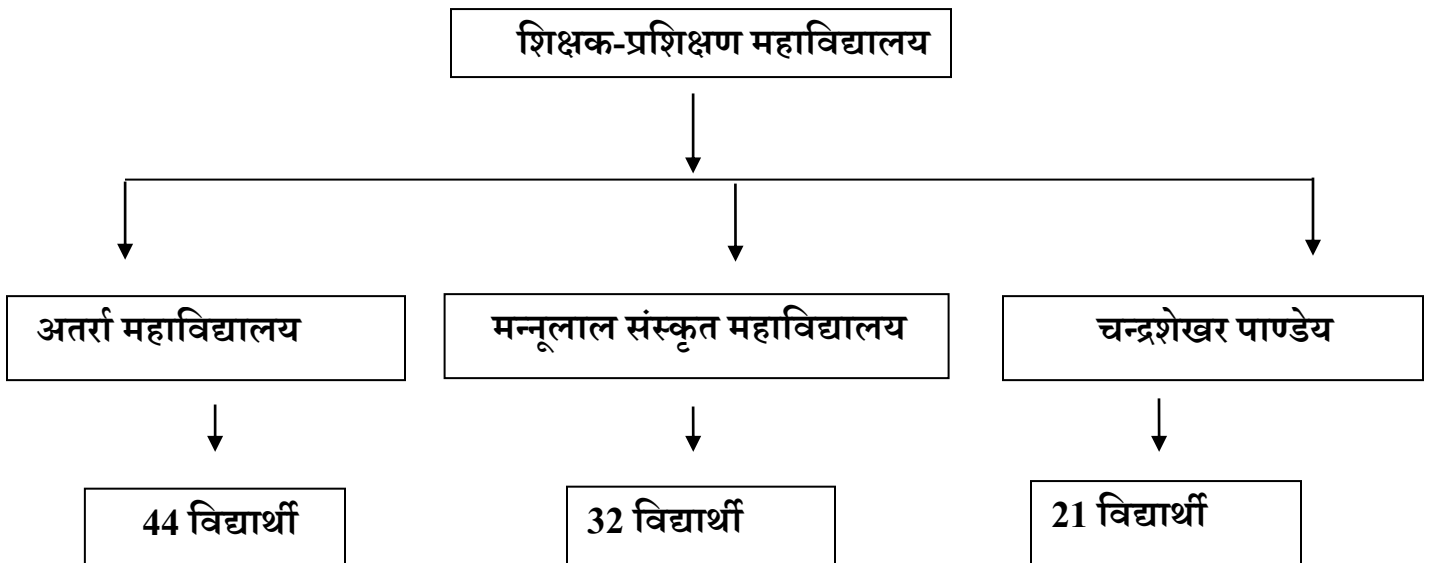
न्यादर्श का वितरण

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में बाँदा जनपद के अतर्रा तहसील के तीन प्रशिक्षण विद्यालयों के 97 प्रशिक्षु अध्यापकों को चयनित किया गया है| जिसमें 45 छात्र एवं 52 छात्राओं को चुना गया| इनमें 50 ग्रामीण एवं 47 शहरी प्रशिक्षुओं को लिया गया है| इस प्रकार इन प्रशिक्षुओं का चयन सुविधानुसार विधि से किया गया है|
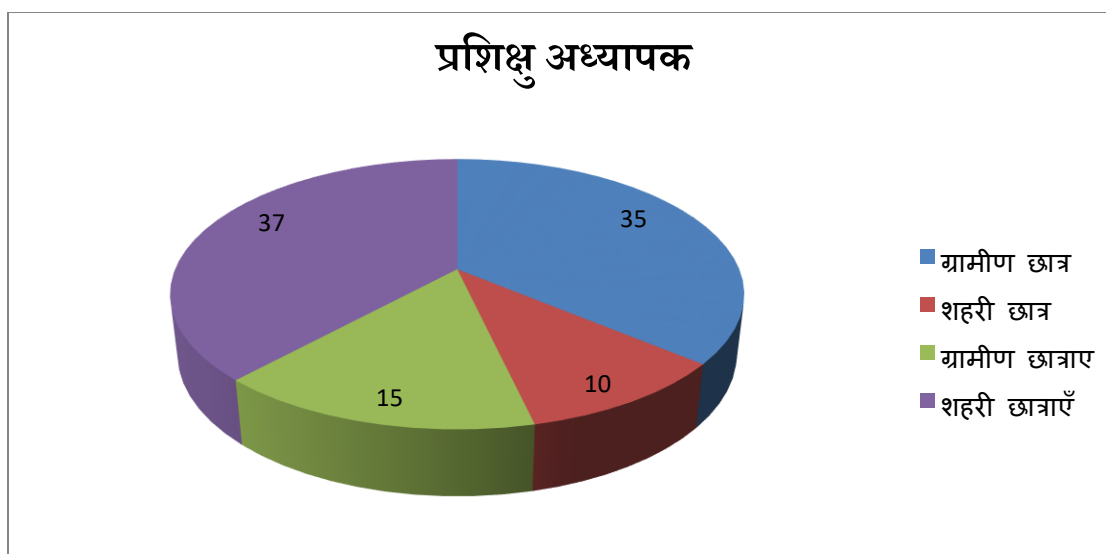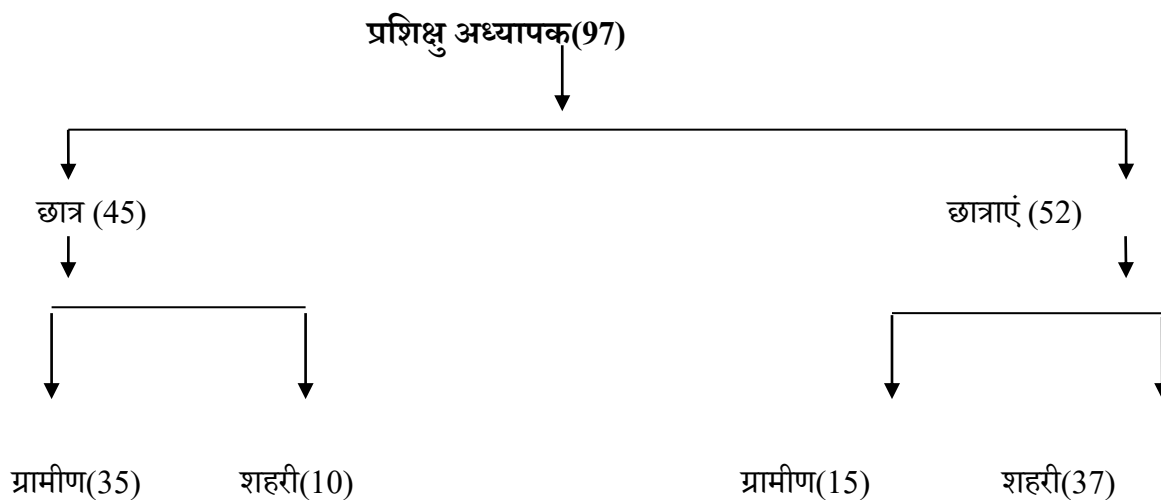
चित्र सूची- 3.1

प्रशिक्षुओं का वितरण

प्रशिक्षण महाविद्यालय	प्रशिक्षु अध्यापक	प्रशिक्षु अध्यापिकाएँ	ग्रामीण प्रशिक्षु	शहरी प्रशिक्षु
अतर्रा महाविद्यालय	28	16	26	18
मन्नू लाल संस्कृत महाविद्यालय	8	24	15	17
चन्द्रशेखर पाण्डेय महाविद्यालय	9	12	9	12

तालिका संख्या- 3.1

3.5 अध्ययन के चर

मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक शोध में चर का काफी महत्वपूर्ण स्थान होता है| जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, चर वह है जिसका मान परिवर्तित होता रहता है, शोध में चर विशिष्ट अर्थ में प्रयोग होता है- **"चर से तात्पर्य किसी वस्तु, घटना तथा चीज के उन गुणों से होता है, जिन्हें मापा जा सकता है|"**

किसी व्यक्ति या वस्तु अथवा घटना के ऐसे गुण या स्थिति को चर कहते हैं, जिनमें दो बातें उपलब्ध होती हैं-एक तो यह कि उसमें मात्रात्मक परिवर्तन संभव हो तथा उसे मापा जा सके दूसरी बात यह कि वह स्वयं प्रभावित हो सके अथवा दूसरों को प्रभावित कर सके| भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों ने चर को परिभाषित करने का प्रयास किया है|

डी. एमैटो(1970) के अनुसार-

"किसी प्राणी, वस्तु या चीज के मापने योग्य गुणों को चर कहते हैं|"

गैरेट(1970) के अनुसार-

" चर वह लक्षण या गुण हैं जिसकी मात्रा में परिवर्तन होता है और यह परिवर्तन किसी माप या आयाम पर होता है|"

चरों के प्रकार-

चर मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं|

स्वतंत्र चर-

उन चरों को स्वतंत्र चर कहा जाता है, जिनमें अनुसंधानकर्ता जोड़-तोड़ करता है तथा उस जोड़-तोड़ का आश्रित चर पर क्या प्रभाव पड़ा? यह भी देखता है|

करलिंगर के अनुसार-

"स्वतंत्र चर किसी आश्रित चर का अनुमानित कारक है तथा आश्रित चर स्वतंत्र चर का अनुमानित प्रभाव है|"

एडवर्ड्स(1968) के अनुसार-

"वह चर जिस पर अध्ययनकर्ता का नियंत्रण होता है, स्वतंत्र चर कहलाता है|"

इन परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्र चर वह चर है जिस पर प्रयोगकर्ता का पूरा नियंत्रण रहता है तथा जिसे प्रयोगकर्ता प्रत्यक्ष रूप से चयन द्वारा घटाता बढ़ाता है| वह यह इस उद्देश्य से करता है कि व्यवहार माप पर इसके के प्रभाव का अध्ययन कर सकें|

प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चर निम्नानुसार हैं-

- लिंग छात्र

  छात्राएं

- छात्र-छात्राओं के प्रकार ग्रामीण

शहरी

आश्रित चर-

आश्रित चर वह चर होते हैं जिसके बारे में शोधकर्ता कुछ पूर्व कथन करता है| यह स्वतंत्र चर पर निर्भर होता हैं| स्वतंत्र चर के घटने बढ़ने पर कोई तत्व घट बढ़ जाए तो इसे आश्रित चर कहते हैं|

हिल के अनुसार-

"आश्रित चर वह चर है जिसके बारे में हम पूर्व कथन करते हैं|"

कैंटोंविज तथा रोडिगर के अनुसार-

"आश्रित चर वह चर है जो प्रयोगकर्ता द्वारा निरीक्षण किया जाता है तथा रिकॉर्ड किया जाता है"

इन परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि आश्रित चर व्यवहार संबंधी वह कारक है जिसका मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में मापन किया जाता है तथा वह चर स्वतंत्र के प्रदर्शित होने पर प्रदर्शित होता है, हटाने पर अदृश्य तथा परिवर्तित होने पर परिवर्तित हो जाता है|

प्रस्तुत शोध में आश्रित चर निम्नानुसार है-

- जागरूकता

3.6 प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण

किसी समस्या के अध्ययन के लिए नवीन एवं अज्ञात प्रदत्त संकलन करने के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है, अब प्रश्न यह उठता है कि आंकड़ों को एकत्र करने की तथा निरीक्षण करने के लिए कौन सी विधि या उपकरण का प्रयोग करें|

परिकल्पना को सिद्ध करने के लिए तथा प्रदत्तों को एकत्र करने के लिए अध्ययन विधि, साक्षात्कार विधि, अनुसूची विधि, प्रश्नावली विधि, मनोवैज्ञानिक परीक्षण आदि विधियों का प्रयोग किया जाता है| **उपकरण निर्माण-**

प्रत्येक अनुसंधान के संदर्भ में प्रदत्तों के संग्रह हेतु कतिपय शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाता है| उपकरणों से प्राप्त नवीन एवं गुणात्मक प्रदत्त अनुसंधान में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं| शोध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसंधानकर्ता इन उपकरणों में से एक अथवा एक से अधिक उपकरणों का प्रयोग कर सकता है| प्रायःअनुसंधान कार्य में दो प्रकार के उपकरण प्रयुक्त होते हैं|

- मानकीकृत उपकरण
- स्वनिर्मित उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य के संदर्भ में कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं था अतः शोधकर्ता को शोध कार्य पूर्ण करने हेतु एक नवीन उपकरण की आवश्यकता अनुभव हुई| फलस्वरुप शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से संबंधित नवीन उपकरण निर्मित करने का निश्चय किया और डॉ.राजीव अग्रवाल के निर्देशन में श्रुतलेख प्रारूप को निर्मित किया गया|

3.6.1 श्रुतलेख

इस शोध में शोधकर्ता ने श्रुतलेख पत्र को उपकरण के रूप में चयनित किया है और उसी के आधार पर आंकड़े एकत्रित किए हैं|

3.7 परीक्षण का प्रशासन

आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए प्रत्येक महाविद्यालय के प्राचार्य से अनुमति प्राप्त कर समय निश्चित किया गया फिर प्रत्येक प्रशिक्षु अध्यापक को श्रुतलेख पत्रक शोधकर्ता द्वारा दिया गया| शोधकर्ता द्वारा बोलकर श्रुतलेख लिखवाया गया| इस प्रक्रिया में लगभग पन्द्रह मिनट का समय एक महाविद्यालय में दिया गया| प्रक्रिया पूर्ण होने पर श्रुतलेख पत्रक को जमा किया गया| यही प्रक्रिया तीनों महाविद्यालयों में अपनाई गई है|

3.8 परीक्षणों का फलांकन

किसी भी शोधकार्य से संबन्धित सूचनाएँ तभी सार्थक होती हैं, जब ये परिमाणात्मक रूप में प्रस्तुत की जायें| क्योकि किसी भी तथ्य को गुणात्मक रूप से समझने की अपेक्षा परिमाणात्मक रूप में समझना आसान होता है|

अध्ययन से संबन्धित सभी उपकरणों के प्रशासन के पश्चात शोधकर्ता ने उनसे प्राप्त अशुद्ध अनुक्रियाओं पर एक नम्बर दिया है और जिसने संबन्धित शब्द पर कोई गलती नहीं की उसको शून्य अंक प्रदान किया गया है|

3.9 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

किसी परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों को यदि ज्यों का त्यों प्रदर्शित कर दिया जाए तो उससे किसी भी प्रकार के परिणाम की प्राप्ति नहीं होती है| परन्तु जब उपयुक्त सांख्यिकीय विधि का प्रयोग करते हुये उसका विश्लेषण किया जाता है तो हमें एक सारगर्भित परिणाम की प्राप्ति होती है| जिसके परिणामस्वरूप हम परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष की व्याख्या कर पाते हैं, इसलिए सांख्यिकीय प्रविधियों को 'रीढ़ की हड्डी' कहा जाता है| श्रुतलेख पत्रक प्राप्त हो जाने पर समस्त आंकड़ों की सांख्यिकीय गणना करते हैं| सबसे पहले छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों को ज्ञात कर लेते हैं, तत्पश्चात मूल प्राप्तांकों को सारणी बद्ध करते हैं|

मध्यमान

सारणीयन के बाद आंकड़ों का मध्यमान या समान्तर माध्य निकालते हैं, समान्तर माध्य निकालने के लिए संख्याओं के योग में संख्याओं की संख्या से भाग देते हैं और जो भागफल आता है उसे ही समान्तर माध्य या मध्यमान कहते हैं अर्थात जब किसी एक समूह के आंकड़ों अथवा प्राप्तांकों को जोड़ कर समूह की संख्या(N) से विभाजित किया और इस प्रकार जो राशि प्राप्त होती है, उस राशि को उस समूह के आंकड़ों का मध्यमान कहा जाता है|

इसके लिए निम्नलिखित सूत्र प्रयोग किया जाता है-

$$M = \frac{\sum X}{N}$$

जहाँ,

M= मध्यमान

∑= जोड़

X= प्राप्तांक

N= समूह में इकाइयों की संख्या

अशुद्धियों के आधार पर विभिन्न समूहों की तुलना करने हेतु मध्यमान परिगणित किया गया| प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान की गणना MS Excel द्वारा की गई है, जिसके चरण निम्नवत हैं-

किसी भी नम्बर समूह का मध्यमान निकालने के लिए एक्सेल के 'AVERAGE' प्रक्रिया का प्रयोग करें| एक्सेल स्प्रेडसीट में नंबर्स को एंटर करके जहां पर मध्यमान जानना चाहते हैं, वहाँ पर क्लिक करें|

चित्र संख्या-3.2

- सूत्र को क्लिक करें और इन्सर्ट प्रक्रिया टैब को चुनें| नंबर्स को एक्सेल स्प्रेडसीट के खाने में एंटर करें|
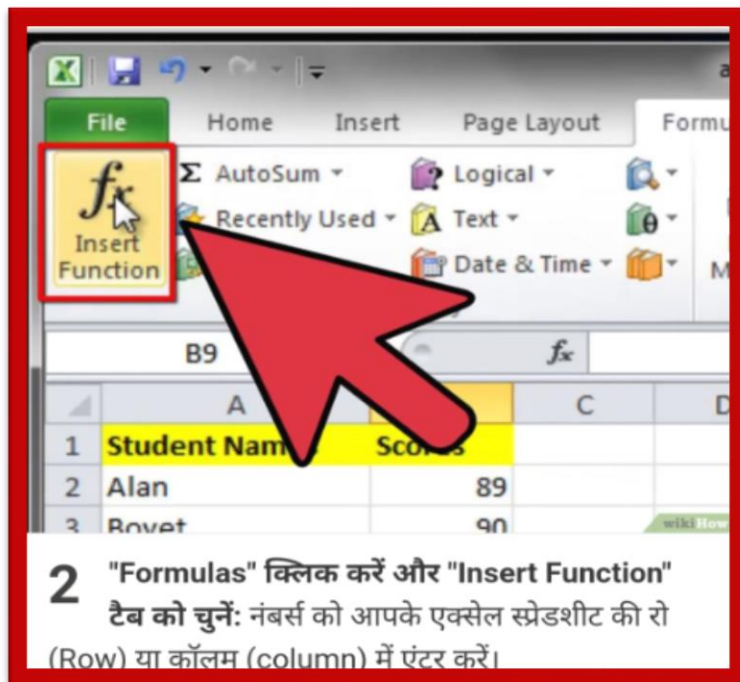
चित्र संख्या-3.3

- नीचे स्क्रॉल करें और औसत प्रक्रिया को चुनें|
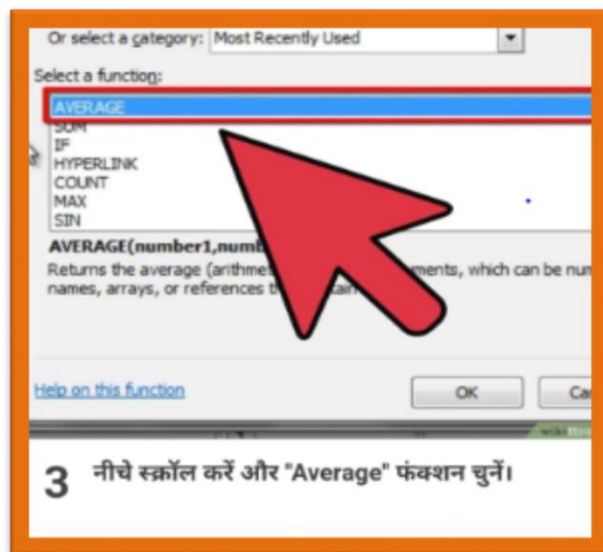
चित्र संख्या -3.4

- नम्बर 1खाने में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए, एक सेल रेंज जैसे कि 4D:D3 एंटर करें और ओके क्लिक करें|
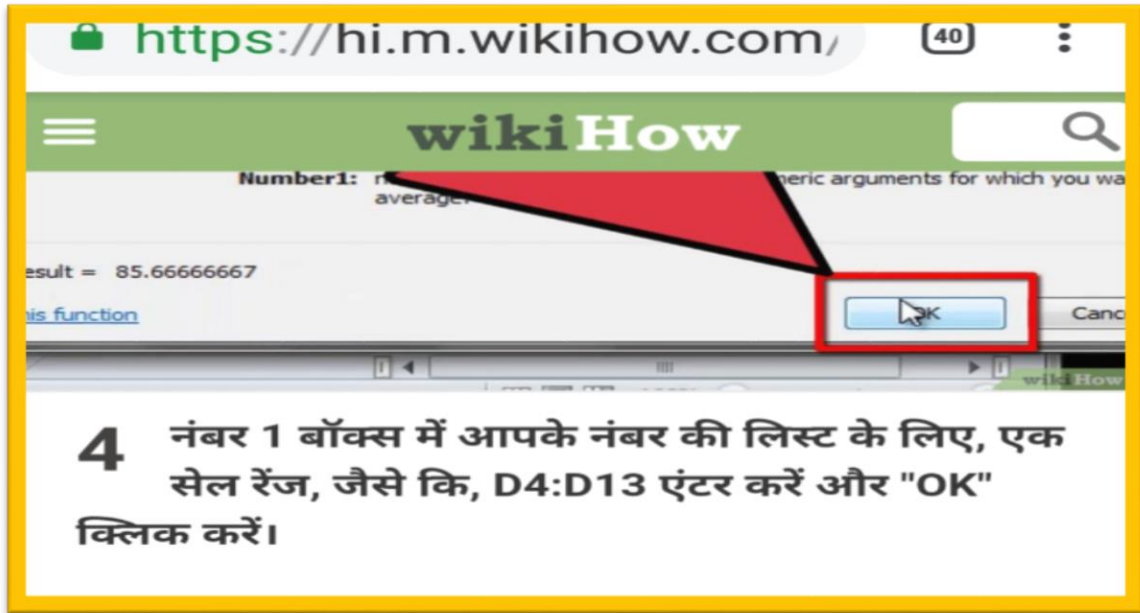
चित्र संख्या- 3.5

- अब आपके द्वारा चुनी हुई सेल में उस लिस्ट का मध्यमान नजर आएगा|

चित्र संख्या-3.6

मानक विचलन- मानक विचलन को औसत विचलन का वर्गमूल भी कहते हैं| यह वितरण के औसत से सब विचलनों के वर्गमूल का औसत होता है| इसका मान सदैव धनात्मक होता है| प्राप्तांकों में विचलनशीलता का अध्ययन करने हेतु मानक विचलन ज्ञात किया गया|

जब आंकड़े केवल पदों के रूप में दिये गए हों तब-

मानक विचलन का सूत्र-

$$\mathrm{S.D.} = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N} - \left(\frac{\Sigma d}{N}\right)^2}$$

जहां- d= X –M   X =प्राप्तांक M= मध्यमान $\sum$= योग N=कुल पदों की संख्या

मानक विचलन ज्ञात करने के Excel के चरण-

- स्टैंडर्ड डेविएशन का हिसाब लगाने के लिए STDEV फंक्शन का प्रयोग करें| कर्सर को उस जगह रखें जहां आप इसे देखना चाहते हैं|

चित्र संख्या-3.7

- “formula” क्लिक करें और एक बार फिर से “insurt function” (fx) टैब चुनें|
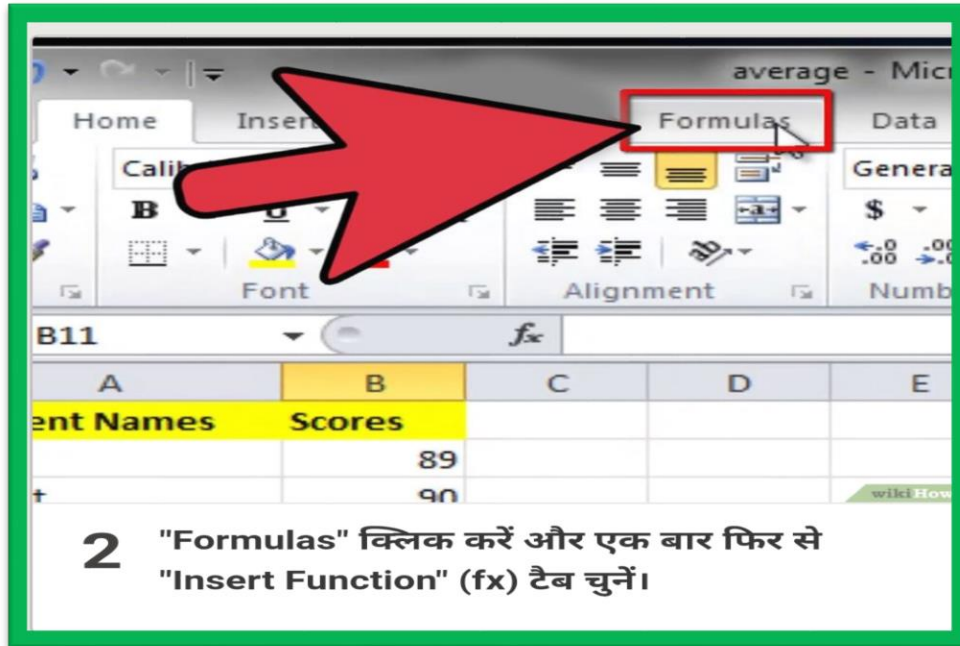
चित्र संख्या-3.8

- डायलॉग बॉक्स पर स्क्रॉल डाउन करें और STDEV फंक्शन चुनें|
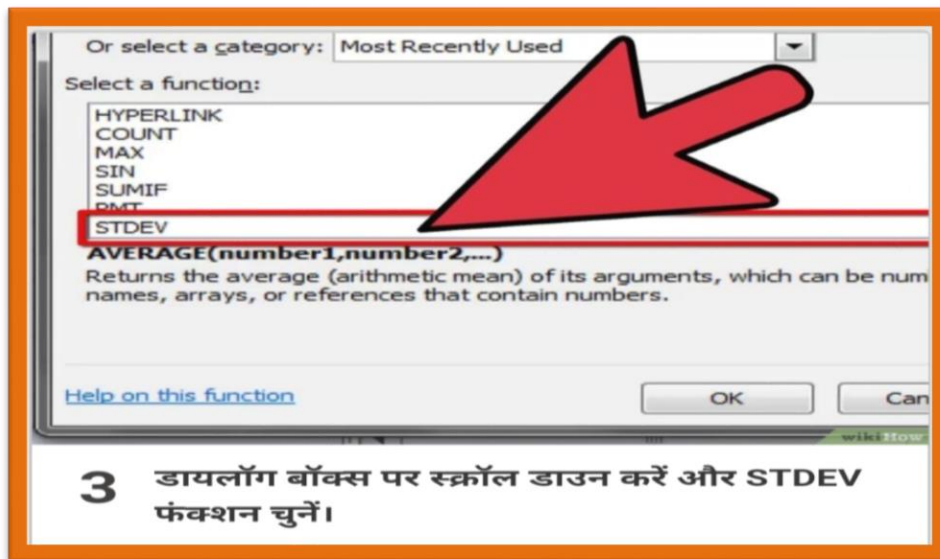
चित्र संख्या-3.9

- नंबर 1 बॉक्स में आपके नंबर की लिस्ट के लिए एक सेल रेंज इंटर करें और ok क्लिक करें|
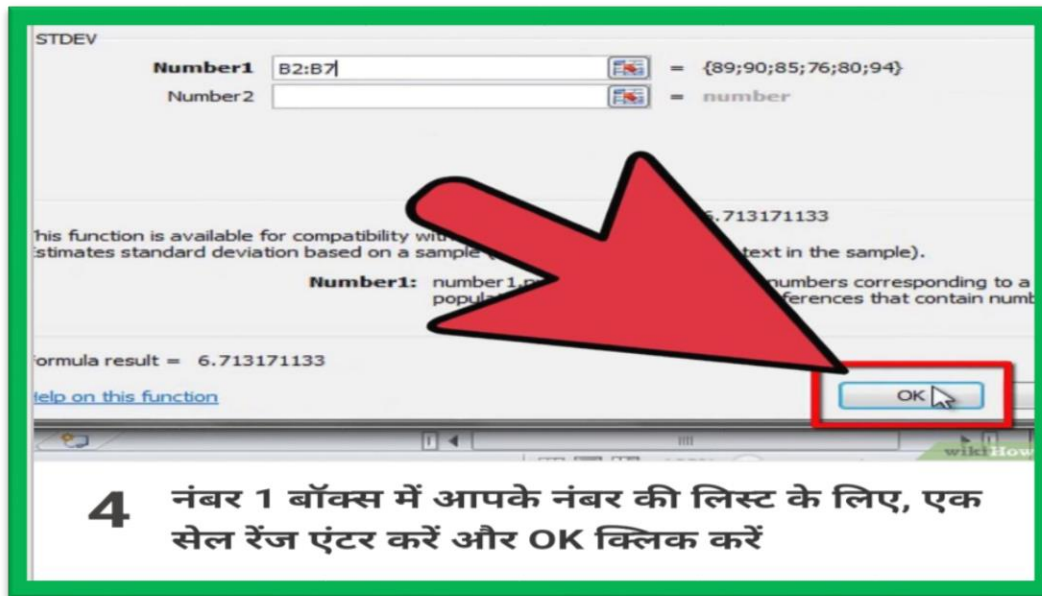
चित्र संख्या-3.10

- अब आपके द्वारा चुनी हुई सेल में स्टैंडर्ड डेविएशन नजर आएगा|
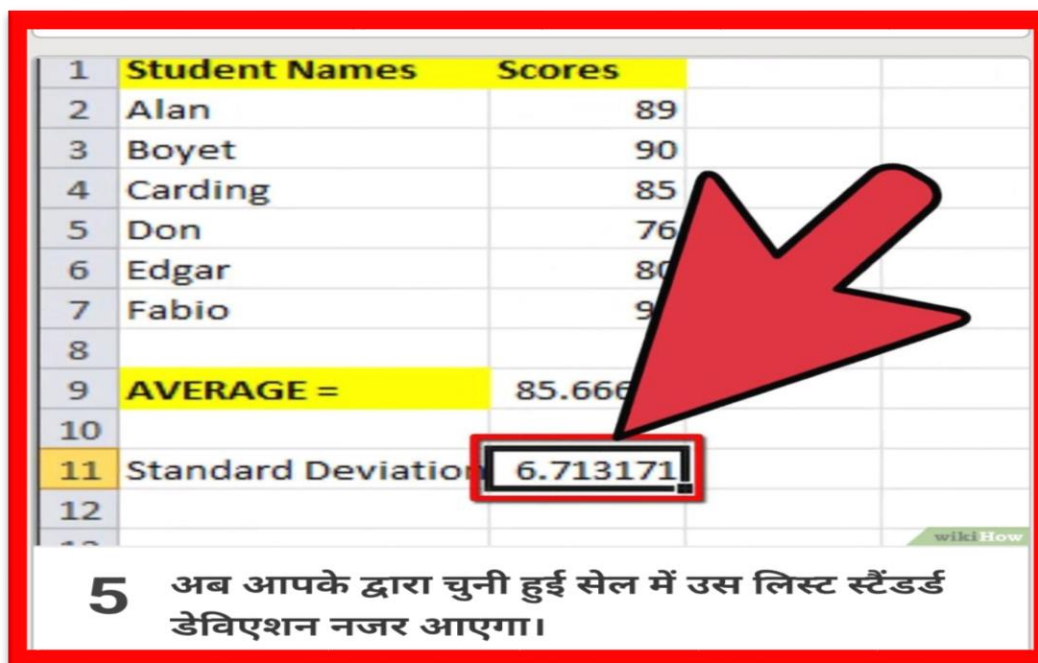
चित्र संख्या-3.11

अब आपको इस फंक्शन को प्रयोग करने की आदत हो जाएगी, फिर आप “insurt function” फीचर प्रोसेस का प्रयोग करना बंद कर सकते हैं और इसकी जगह पर सेल में सीधे इस सूत्र को टाइप कर सकते हैं|

Standard deviation- “= STDEV (cell range)-lg

“= STDEV (D4:DI3)

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु अग्रांकित अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्रविधि प्रयुक्त हुई-

क्रांतिक अनुपात- दो बड़े समूहों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच करने के लिए क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया जाता है| अर्थात जब प्रतिदर्श की संख्या 30 से अधिक होती है तब क्रांतिक अनुपात की गणना की जाती है|

$$C.R. = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$$

जहां-

M_1= पहले समूह का समांतर माध्य

M_2= दूसरे समूह का समांतर माध्य

N_1= पहले समूह का आकार

N_2= दूसरे समूह का आकार

σ_1= पहले समूह का मानक विचलन

σ_2= दूसरे समूह का मानक विचलन

दण्ड आरेख- दण्डआरेख अथवा बार चार्ट यह एक प्रमुख एक विमीय आरेख है| इसके द्वारा एकल अथवा सामूहिक सांख्यिकीय आँकड़ों के मानों को आयताकार दण्डों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जहाँ प्रत्येक दण्ड की लम्बाई उसके द्वारा प्रदर्शित किए जा रहे मान के अनुपात में रखी जाती है|

चतुर्थ-अध्याय
प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

4.1 प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण-

अनुसंधान कार्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या है| यही वह दिव्य दर्पण है जिसमें से मूल्यवान निष्कर्ष की छाया दृष्टिगत होने लगती है| विभिन्न उपकरणों द्वारा संकलित तथ्य चाहे कितने ही वैध तथा उपयुक्त क्यों न हों, अव्यवस्थित ही होते हैं| उनको प्रयोजनशील एवं उपयोगी कार्य में प्रयुक्त करने से पूर्व व्यवस्थित एवं सुसंगठित अर्थात वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध करने की आवश्यकता होती है| प्रदत्तों के विश्लेषण का अर्थ है उनमें निहित तथ्यों तथा अर्थों को निर्धारित करने हेतु सारणीबद्ध विषय सामाग्री का अध्ययन करना| इसके अंतर्गत प्रस्तुत जटिल कारकों को खंडित करके सरल अंगों में विभाजित करना तथा व्याख्या के उद्देश्यों से उन अंगों को नवीन व्याख्या के संदर्भ में समायोजित करना होता है| इस संदर्भ में लुण्डवर्ग (1961) का कहना है कि-

"किसी भी समस्या का वैज्ञानिक विधि से अध्ययन करने का तात्पर्य संकलित समांकों का क्रमबद्ध अवलोकन, वर्गीकरण तथा निर्वचन करना है| हमारे प्रतिदिन के निष्कर्षों तथा वैज्ञानिक विधियों में मुख्य अन्तर इसके सत्य, दृढ़ता तथा सत्यापन किए जाने की शक्ति, योग्यता तथा विश्वसनीयता इत्यादि में है|"

अतः यह कहना उपयुक्त प्रतीत होता है कि अनुसंधान में सामान्यतः दो सोपान होते हैं- प्रथम प्रदत्तों का संग्रह तथा द्वितीय प्रदत्तों का विश्लेषण| प्राप्त सामग्री अपने प्रारम्भिक रूप में बड़ी ही अस्पष्ट एवं जटिल होती है, उसके विश्लेषण के पश्चात ही उपलब्धियों के माध्यम से निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है| अतः प्रस्तुत अध्याय में स्वनिर्मित श्रुतलेख पत्रक के संदर्भ में संकलित प्रदत्तों तथा सूचनाओं का सावधानीपूर्वक गहन विश्लेषण किया गया| जिसकी प्रस्तुति सुविधानुसार इस अध्याय में की गई है|

- **त्रुटि विश्लेषण प्रथम-** लेखन कौशल विश्लेषण में छात्रों के लेखन की त्रुटियों का विश्लेषण किया गया| त्रुटि विश्लेषण छात्रों की लेखन कौशल के क्षेत्र में समस्या को दर्शाता है| छात्रों के लेखन कौशल में पाई गई त्रुटियों और गलतियों की पहचान का तात्पर्य है, शिक्षार्थियों के लेखन का परीक्षण करना| भाषा के शब्द, वाक्यांश, वाक्यविन्यास, सहानुभूति आदि श्रेणियों का उपयोग करने में शामिल प्रक्रियाओं का पता लगाने के लिए शिक्षार्थियों की प्रतिक्रियाओं का परीक्षण और मूल्यांकन करने के लिए त्रुटि विश्लेषण का पालन किया जाता है| त्रुटियों के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए उन क्षेत्रों के माध्यम से जहाँ शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों द्वारा ध्यान केन्द्रित करने के लिए अधिक एकाग्रता की आवश्यकता होती है| इसके लिए प्रासंगिक उपायों का सुझाव दिया जा सकता है, जिससे कठिनाइयों एवं समस्याओं को समाप्त किया जा सकता है|

त्रुटियाँ शिक्षार्थियों द्वारा सामना की गई समस्याओं की वास्तविक संकेतक हैं| शिक्षार्थियों द्वारा की गई त्रुटियों की पहचान करके शोधकर्ता ऐसे क्षेत्रों को आसानी से इंगित कर है, जिन पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है| आमतौर पर यह माना जाता है कि छात्र भाषा के सभी स्तरों पर त्रुटियाँ करते हैं| आमतौर पर आगे यह उल्लेख किया गया है कि लक्ष्य भाषा में नियमों की जटिलता के अलावा छात्रों के लेखन कौशल में त्रुटियों के कुछ अन्य कारण भी हैं| लेखन कौशल के निम्नलिखित पहलुओं पर त्रुटि विश्लेषण किया गया|

- हिन्दी वर्तनी के महत्वपूर्ण नियम
- वर्तनी की विशेष अशुद्धियाँ और उनके निदान
- सामान्य अशुद्धियाँ
- विराम चिहन सम्बन्धी अशुद्धियाँ
- लिखने की रीति को वर्तनी या अक्षरी कहते हैं| यह हिज्जे भी कहलाती है| किसी भी भाषा की समस्त ध्वनियों को सही ढंग से उच्चरित करने के लिए ही वर्तनी की एकरूपता स्थिर की जाती है| जिस भाषा की वर्तनी में अपनी भाषा के साथ अन्य भाषाओं की ध्वनियों को ग्रहण करने की जितनी अधिक शक्ति होगी,

उस भाषा की वर्तनी उतनी ही समर्थ समझी जाएगी| अतः वर्तनी का सीधा संबंध भाषागत ध्वनियों के उच्चारण से है|

हिन्दी के विभक्ति-चिहन सर्वनामों को छोड़कर शेष सभी प्रसंगों में शब्दों से अलग लिखे जाएँ|

सर्वनाम और उसकी विभक्ति के बीच ही **'तक'**आदि अव्यय का निपात हो, तो विभक्ति अलग लिखी जाए|

'तक', 'साथ' आदि अव्यय अलग लिखे जाएँ|

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलकर लिखा जाए|

द्वंद्वसमास में पदों के बीच हाइफन का प्रयोग किया जाए|

'सा', 'जैसा' आदि सारूप्यवाचकों के पूर्व हाइफन का प्रयोग किया जाना चाहिए|

तत्पुरुषसमास में हाइफन का प्रयोग केवल वहीं किया जाए, जहाँ उसके विना भ्रम होने की संभावना हो अन्यथा की स्थिति में नहीं किया जाए|

जहाँ वर्गों के पंचमाक्षर के बाद उसी वर्ग के शेष चार वर्णों में से कोई वर्ण हो वहाँ अनुस्वार का ही प्रयोग किया जाए|

अरबी-फारसी के वे शब्द जो, हिन्दी के अंग बन चुके हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिन्दी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, उन्हें हिन्दी रूप में ही स्वीकार किया जाए|

संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे यदि तत्सम रूप में प्रयुक्त हों तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए|

- **हिन्दी की विशेष अशुद्धियाँ और उनके निदान|**

हमारी देवनागरी लिपि संसार की अन्य लिपियों से अधिक वैज्ञानिक मानी गई है; क्योंकि इसमें सभी ध्वनियों को व्यक्त करने की क्षमता तो है ही, साथ ही एक ध्वनि को व्यक्त करने के लिए एक ही लिपि चिहन है| फिर भी विद्यार्थी प्रायः वर्तनी-संबंधी अशुद्धियाँ किया करते हैं|

'ण' और न की अशुद्धियाँ

'ण' और न के प्रयोग में सावधानी बरतने की आवश्यकता है| 'ण' अधिकतर संस्कृत शब्दों में आता है| जिन तत्सम शब्दों में 'ण' होता है, उनके तद्भव रूप में 'ण' के स्थान पर 'न' प्रयुक्त होता है|

संस्कृत की जिन धातुओं में 'ण' होता है, उनसे बने शब्दों में भी 'ण' होता है|

'ब' और 'व' की अशुद्धियाँ

'ब' और 'व' के प्रयोग के बारे में हिन्दी में प्रायः अशुद्धियाँ होती हैं| इन अशुद्धियों का कारण है अशुद्ध उच्चारण| शुद्ध उच्चारण के आधार पर ही 'ब' और 'व' में अंतर किया जाता है| 'ब' के उच्चारण में दोनों होंठ जुड़ जाते हैं, पर 'व' के उच्चारण में निचला होंठ ऊपर वाले दाँत के अगले हिस्से के निकट चला जाता है और दोनों होंठों का आकार गोल हो जाता है, वे मिलते नहीं हैं| ठेठ हिन्दी में 'ब' वाले शब्दों की संख्या अधिक है, 'व' वाले शब्दों की कम| ठीक इसका उल्टा संस्कृत में है| संस्कृत में 'व' वाले शब्दों की अधिकता है|

'श', 'ष'और 'स' की अशुद्धियाँ

'श', 'ष' और स भिन्न-भिन्न अक्षर हैं| इन तीनों की उच्चारण प्रक्रिया भी अलग-अलग है|उच्चारण दोष के कारण ही वर्तनी-संबंधी अशुद्धियाँ होती हैं| इस संबंध में विशेष ध्यान रखा जाए जैसे-

'ष' केवल संस्कृत शब्दों में आता है| संस्कृत के जिन शब्दों की मूल धातु में 'ष' होता है, उनसे बने शब्दों में भी 'ष' होता है|

यदि किसी शब्द में 'स' हो और उसके पूर्व 'अ' या 'आ' के सिवा कोई भिन्न स्वर हो तो 'स' के स्थान पर 'ष' हो जाता है| टवर्ग के पूर्व केवल 'ष' आता है| ऋ के बाद प्रायः 'ष' आता है|

जब 'श' और 'स' एक साथ प्रयुक्त हों, तो 'श' पहले आता है| जहां 'श' और 'ष' एक साथ आता है वहाँ 'श' के पश्चात 'ष' आता है| यदि तत्सम शब्दों में 'श' हो, तो उसके तद्भव में 'स' हो जाता है| इस प्रकार वर्तनी-संबंधी अनेक प्रकार की अशुद्धियाँ होती हैं|

सामान्य अशुद्धियाँ

हिन्दी एक अत्यंत सरल भाषा है, किन्तु कोई भी भाषा सीखने से आती है| यह बात मन से निकाल देनी चाहिए कि हिन्दी सीखने की आवश्कता नहीं है| निर्दोष और अच्छी हिन्दी लिखने-बोलने के लिए यह आवश्यक है कि हम शब्दों और वाक्यों का शुद्ध प्रयोग सीखें| भ्रम और अज्ञान के कारण भाषा में अनेक अशुद्धियाँ होती हैं| कभी-कभी एक छोटी सी लकीर अथवा बिन्दु अर्थ का अनर्थ कर बैठता है| शुद्ध-शुद्ध लिखने के लिए शुद्ध-शुद्ध बोलना भी जरूरी है| हिन्दी के प्रत्येक छात्र को बोलते या लिखते समय प्रत्येक वर्ण या अक्षर की ध्वनि अथवा शब्द ध्वनि पर ध्यान देना चाहिए| ऐसी ध्वनियाँ इस प्रकार हैं-

अशुद्ध	शुद्ध
अनुशरण	अनुसरण
अध्यन	अध्ययन
अमावश्या	अमावस्या
कैलाश	कैलास

अशुद्ध शब्द	**शुद्ध शब्द**
देश वासियो	देशवासियों
मे	में
जुडी	जुड़ी
छोडो	छोड़ो
बर्षगाठ	वर्षगाँठ

है	हैं
छोडो (2)	छोड़ो (2)
देसबासी	देशवासी
लडते	लड़ते
है	हैं
बडी	बड़ी
छोडो	छोड़ो
बिट्रिश राज	ब्रिटिश-राज
अनपढ	अनपढ़
छोडो	छोड़ो
त्वारीख	तवारीख
युसुफ	यूसुफ
है	हैं
है	हैं
जुडते	जुड़ते

है	हैं
बीरों	वीरों
है	हैं
अंदोलन	आन्दोलन
महत्व पूर्ण	महत्वपूर्ण
अन्दोलन	आन्दोलन
हिन्दोस्तान	हिन्दुस्तान
क्रांती	क्रान्ति
महिना	महीना
क्रांती	क्रान्ति
पीढी	पीढ़ी
वया	क्या
पढा	पढ़ा
देस	देश
गाव	गाँव

कंधा	कन्धे
व्यारे	प्यारे
वात	बात
अग्रेजी	अंग्रेजी
जन मानस	जनमानस
जुझते	जूझते
घटनाए	घटनाएँ
सघर्ष	संघर्ष
डा	डॉ.
चहिए	चाहिए
की	कि
महिने	महीने
भभ्य	भव्य
मुक्ती	मुक्ति
अलि	अली

असयोग	असहयोग
वहुत	बहुत
पेरणा	प्रेरणा
हैं	है
ये	ने
कधा	कन्धा
पचहत्तरवी	पचहत्तरवीं
बनाने	मनाने
कोनो	कोने
प्रारम्ब	प्रारम्भ
जेलते	झेलते
संता	सत्ता
स्वंतंत्रता	स्वतन्त्रता
शहज	सहज
तपसया	तपस्या

सकल्पित	संकल्पित
लिया	दिया
अजादी	आजादी
भारतिय	भारतीय
महिना	महीना
महर	मेहर
मे	में
कि	की
कि	की
अजाद	आजाद

विराम-चिहन संबंधी अशुद्धियाँ

विराम का शाब्दिक अर्थ होता है, ठहराव| जीवन की दौड़ में मनुष्य को कहीं-न-कहीं रुकना या ठहरना पड़ता है| विराम की आवश्यकता हर व्यक्ति को होती है| जब हम काम करते-करते थक जाते हैं, तब मन आराम करना चाहता है| यह आराम विराम का ही दूसरा नाम है| पहले विराम होता है फिर, आराम| स्पष्ट है कि साधारण जीवन में भी विराम की आवश्यकता है|

लेखन मनुष्य के जीवन की एक विशेष मानसिक अवस्था है| लिखते समय लेखक यों ही नहीं दौड़ता, बल्कि कहीं थोड़ी देर के लिए रुकता है, ठहरता और पूरा विराम लेता है| ऐसा इसलिए होता है कि हमारी मानसिक दशा की गति सदा एक-जैसी नहीं होती| यही कारण है कि लेखन-कार्य में भी विरामचिह्नों का प्रयोग करना पड़ता है| यदि इन चिह्नों का उपयोग न किया जाए, तो भाव अथवा विचार की स्पष्टता में बाधा पड़ेगी और वाक्य एक-दूसरे से उलझ जाएंगे और तब पाठक को व्यर्थ ही माथापच्ची करनी पड़ेगी| पाठक के भाव-बोध को सरल और सुबोध बनाने के लिए विरामचिह्नों का प्रयोग होता है|

पूर्णविराम (|) – पूर्णविराम का अर्थ है, पूरी तरह रुकना या ठहरना| सामान्यतः जहाँ वाक्य की गति अंतिम रूप ले ले, विचार के तार एकदम टूट जायें, वहाँ पूर्णविराम का प्रयोग होता है|

यह हाथी है| वह लड़का है| मैं आदमी हूँ| तुम जा रहे हो|

इन वाक्यों में सभी एक-दूसरे से स्वतंत्र हैं| सबके विचार अपने में पूर्ण हैं| ऐसी स्थिति में प्रत्येक वाक्य के अन्त में पूर्णविराम लगना चाहिए| संक्षेप में, प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर पूर्णविराम का प्रयोग होता है|

अल्पविराम (,) – हिन्दी में प्रयुक्त विरामचिह्नों में अल्पविराम का प्रयोग सबसे अधिक होता है| अतएव, इसके प्रयोग के सामान्य नियम जान लेने चाहिए| अल्पविराम का अर्थ है थोड़ी देर के लिए रुकना या ठहरना| हर लेखक को अपनी विभिन्न मनोदशाओं से गुजरना पड़ता है| कुछ मनोदशाएं ऐसी हैं,जहाँ लेखक को अल्पविराम का उपयोग करना पड़ता है| ये अनिवार्य दशाएँ हैं| कुछ मनोदशाएं ऐसी हैं, जहाँ अल्पविराम का उपयोग वर्जित है|

वाक्य में जब दो या दो से अधिक समान पदों, पदांशों अथवा वाक्यों में संयोजक अव्यय 'और' की गुंजाइश हो, तब वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है|

जहाँ वाक्यों की पुनरावृत्ति की जाए और भावतिरेक में उन पर विशेष बल दिया जाए, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है|

योजक चिह्न(-) – हिन्दी में अल्पविराम के बाद योजक चिह्न (-) का अत्यधिक प्रयोग होता है| पर इसके दुष्प्रयोग भी कम नहीं हुये| हिन्दी व्याकरण की पुस्तकों में इसके प्रयोग के संबंध में बहुत कम लिखा गया है| अतः, इसके प्रयोग

की विधियाँ स्पष्ट नहीं होतीं| परिणाम यह है कि हिन्दी के लेखक इसका मनमाना व्यवहार करते हैं| हिन्दी के विद्वानों को इस ओर ध्यान देना चाहिये|

भाषाविज्ञान की दृष्टि से हिन्दी भाषा की प्रकृति विश्लेषणात्मक है, संस्कृत की तरह संश्लेषणात्मक नहीं| अतएव, हिन्दी में सामासिक पदों या शब्दों का प्रयोग अधिक नहीं होता|

'भू-तत्व' का अर्थ होगा-भूमि या पृथ्वी से सम्बद्ध तत्व; पर यदि 'भूतत्व' लिखा जाए, तो 'भूत' शब्द का भाववाचक संज्ञा ही माना और समझा जाएगा|

इसी तरह 'कुशासन' का अर्थ 'बुरा शासन' भी होगा और कुश से बना 'आसन' भी| यदि पहला अर्थ अभीष्ट है, तो 'कु' के बाद योजक चिह्न लगाना आवश्यक है|

- **त्रुटि विश्लेषण द्वितीय- प्रतिशत विश्लेषण**

यह प्रतिशत विश्लेषण सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि पर किया गया है| यह छात्रों की श्रुतलेख पत्रक के माध्यम से किया गया| प्रतिशत विश्लेषण डाटा और विश्लेषण में सटीकता लाता है| विश्लेषण स्पष्ट रूप से डाटा का प्रतिशत दृश्य दिखलाता है|

अध्ययन की पृष्ठभूमि का विश्लेषण-

तालिका संख्या- 4.1

विभिन्न प्रशिक्षण महाविद्यालयों से एकत्रित किए गए आंकड़े

महाविद्यालय का नाम	लिंग		कुल संख्या
	छात्र	छात्राएं	
अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा	28	16	44
मन्नू लाल संस्कृत महाविद्यालय	8	24	32
चन्द्रशेखर पाण्डेय महाविद्यालय	9	12	21
कुल संख्या	45	52	97
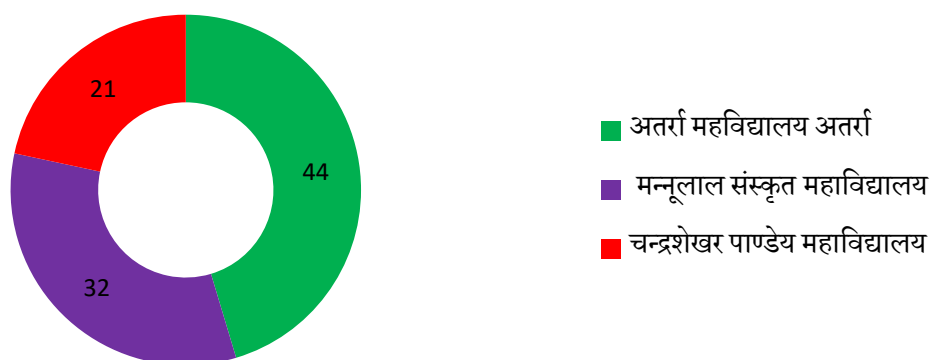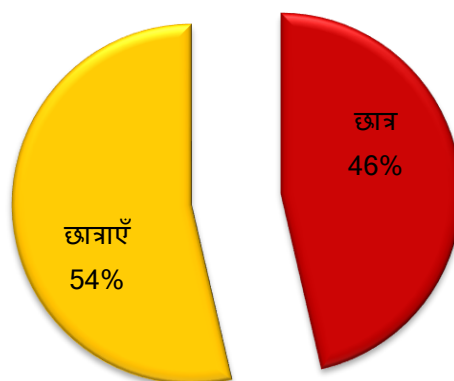
चित्र संख्या 4.1

तालिका सूची-4.2

शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं का वितरण

महाविद्यालय का नाम	वर्ग		कुल संख्या
	ग्रामीण	शहरी	
अतर्रा महाविद्यालय अतर्रा	26	18	44
मन्नू लाल संस्कृत महाविद्यालय	15	17	32
चन्द्रशेखर पाण्डेय महाविद्यालय	9	12	21
कुल संख्या	50	47	97
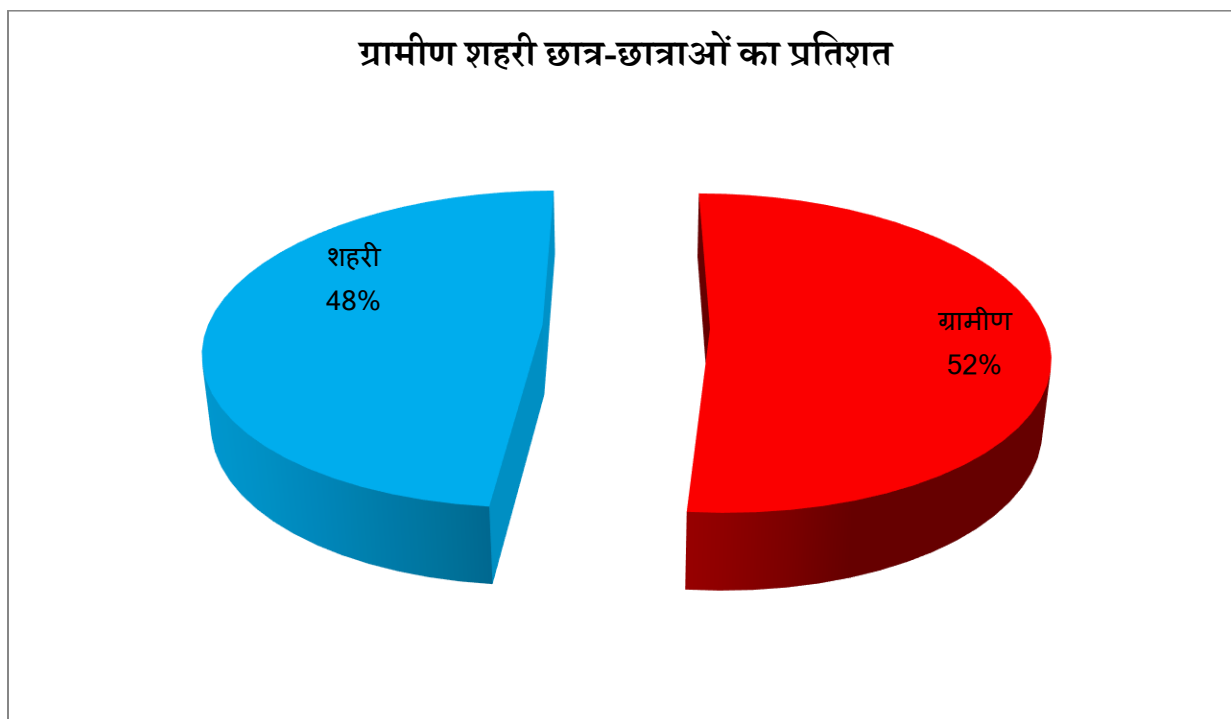
चित्र संख्या-4.3

उपर्युक्त तालिकाओं एवं चार्टों से न्यादर्श की जनसंख्या एवं आकार का पता चलता है| पूरे न्यदर्शों की संख्या 97 है, जो विभिन्न महाविद्यालयों से एकत्र किए गये| इस 97 न्यादर्शों में 45 छात्र एवं 52 छात्राओं को शामिल किया गया है| इसमें 50 ग्रामीण और 47 शहरी लोग शामिल हैं| डेटा संग्रह के लिए 3 महाविद्यालयों का चयन किया गया| अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा से 44 (28 छात्र 16 छात्राएं, 26 ग्रामीण 18 शहरी) श्री मन्नूलाल संस्कृत महाविद्यालय से 32 (8 छात्र 24 छात्राएं, 15 ग्रामीण 17 शहरी) चन्द्रशेखर पाण्डेय महाविद्यालय से 21 (9 छात्र 12 छात्राएं, 9 ग्रामीण 12 शहरी) न्यदर्श चुने गये हैं|

छात्रों के श्रुतलेख पत्रकों का विश्लेषण-

शब्द- देशवासियों
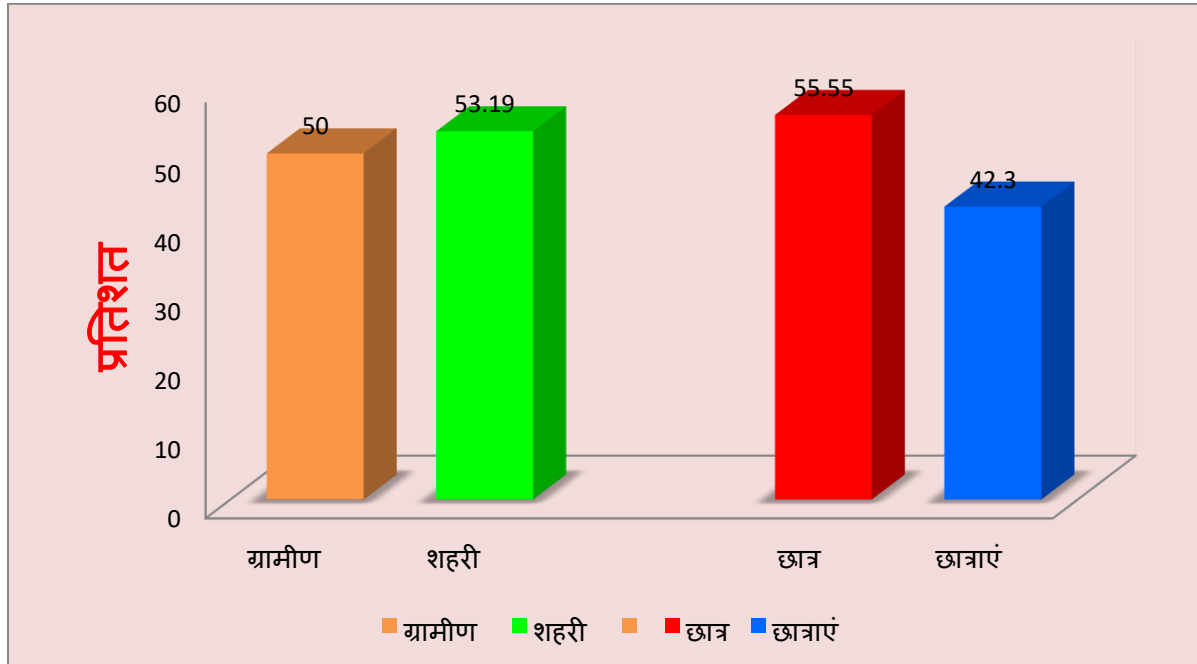
'देशवासियों' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.4

विश्लेषण-

- लगभग आधे ग्रामीण(50) तथा शहरी(53.19) प्रशिक्षुओं द्वारा 'देशवासियों' शब्द को अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक रूप से अध्ययन करने पर आधे से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(55.55) त्रुटि की गई जबकि आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(42.3) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि दो रूपों में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार का प्रयोग न किया जाना|

(ब) 'स' के स्थान पर 'श' का प्रयोग किया जाना|
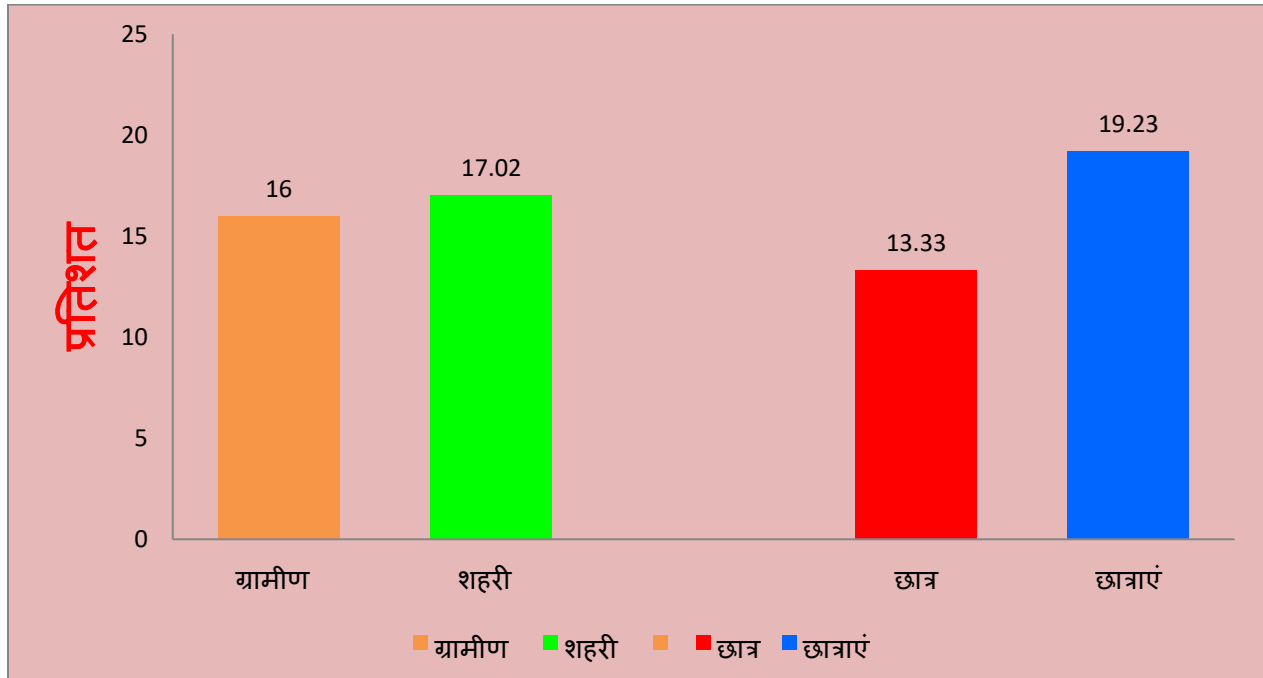
'में' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.5

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'में' शब्द को लगभग चौथाई से भी कम ग्रामीण(16) तथा शहरी(17.02) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर चौथाई से भी कम प्रशिक्षु अध्यापकों(13.33) तथा प्रशिक्षु अध्यापिकाओं(19.23) द्वरा 'में' को लिखने में त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- जुड़ी
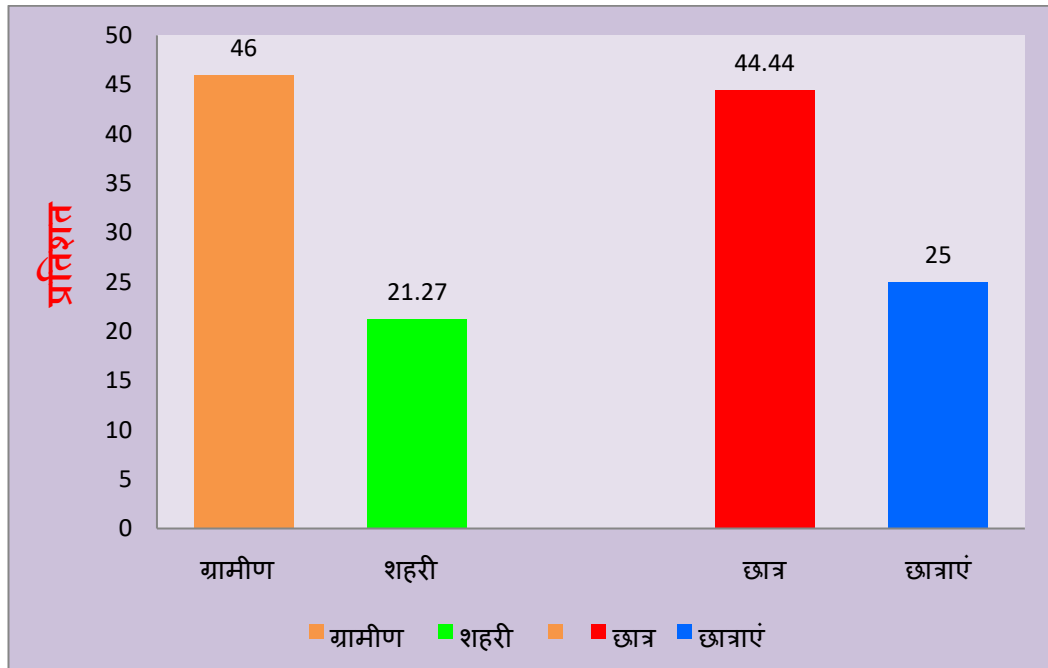
'जुड़ी' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.6

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'जुड़ी' शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण(46) तथा चौथाई से कम शहरी(21.27) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(44.44) त्रुटि की गई जबकि चौथाई प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(25) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- छोड़ो
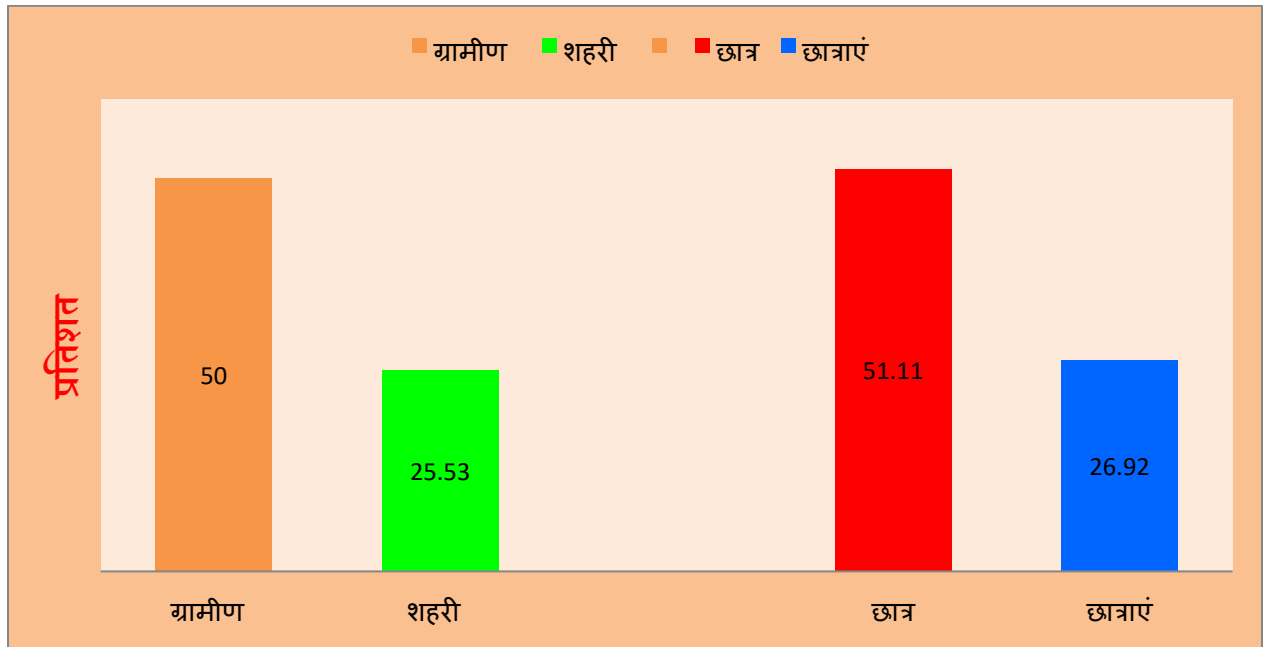
'छोड़ो' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र- संख्या-4.7

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'जुड़ी' शब्द को आधे ग्रामीण(50) तथा चौथाई शहरी (25.53) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(51.11) त्रुटि की गई जबकि चौथाई से अधिक(26.92) प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा त्रुटि की गई|

विवेचन-उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- वर्षगाँठ
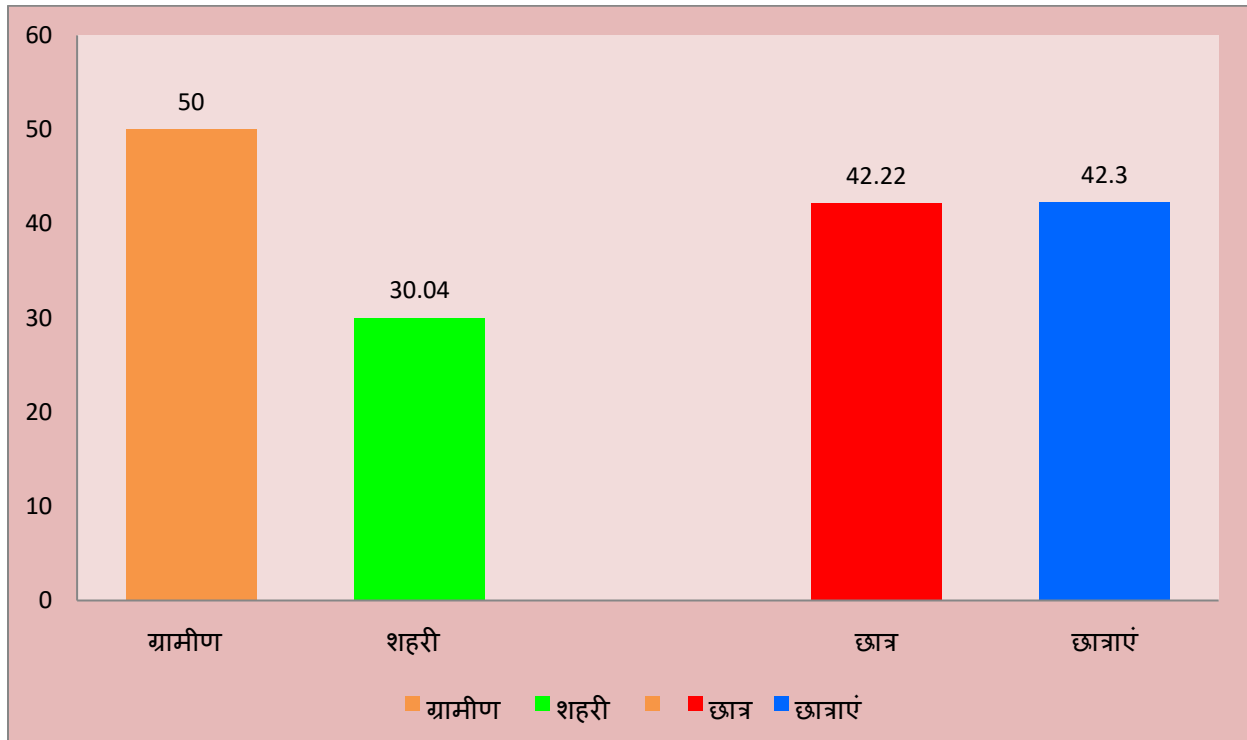
'वर्षगाँठ' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.8

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'वर्षगाँठ' शब्द को आधे ग्रामीण(50) तथा आधे से कम शहरी(30.04) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया है|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(42.22) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(42.3)त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुनासिक का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- हैं
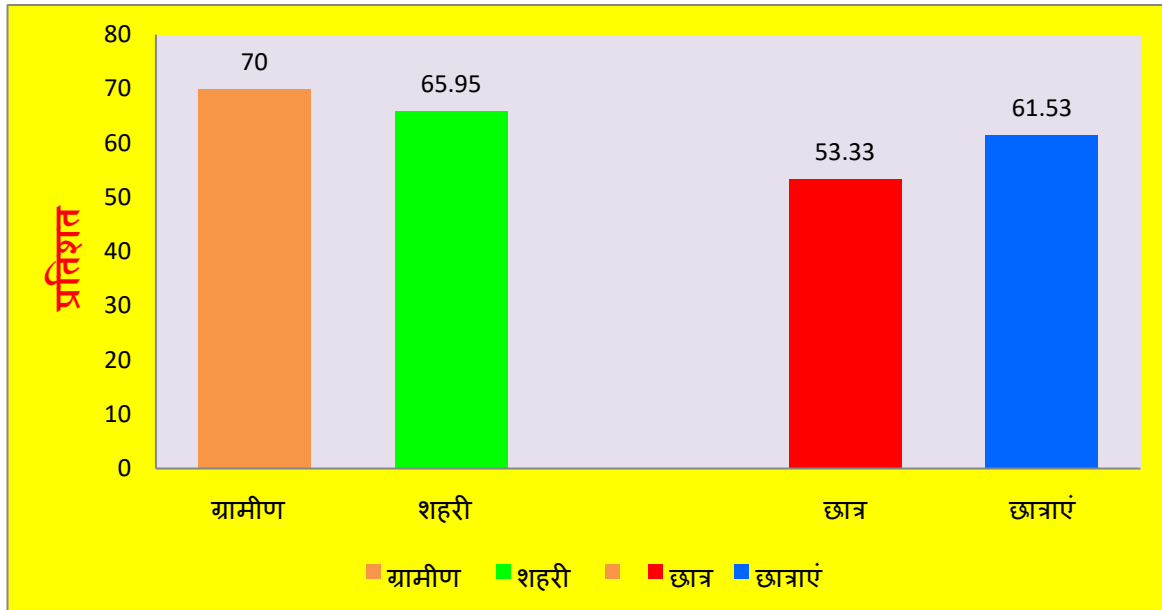
'हैं' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.9

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'हैं' शब्द को लगभग आधे से अधिक ग्रामीण(70) तथा आधे से अधिक शहरी(65.95) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(53.33) त्रुटि की गई जबकि आधे से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(61.53) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार का प्रयोग न किया जाना|

शब्द - छोड़ो(2)
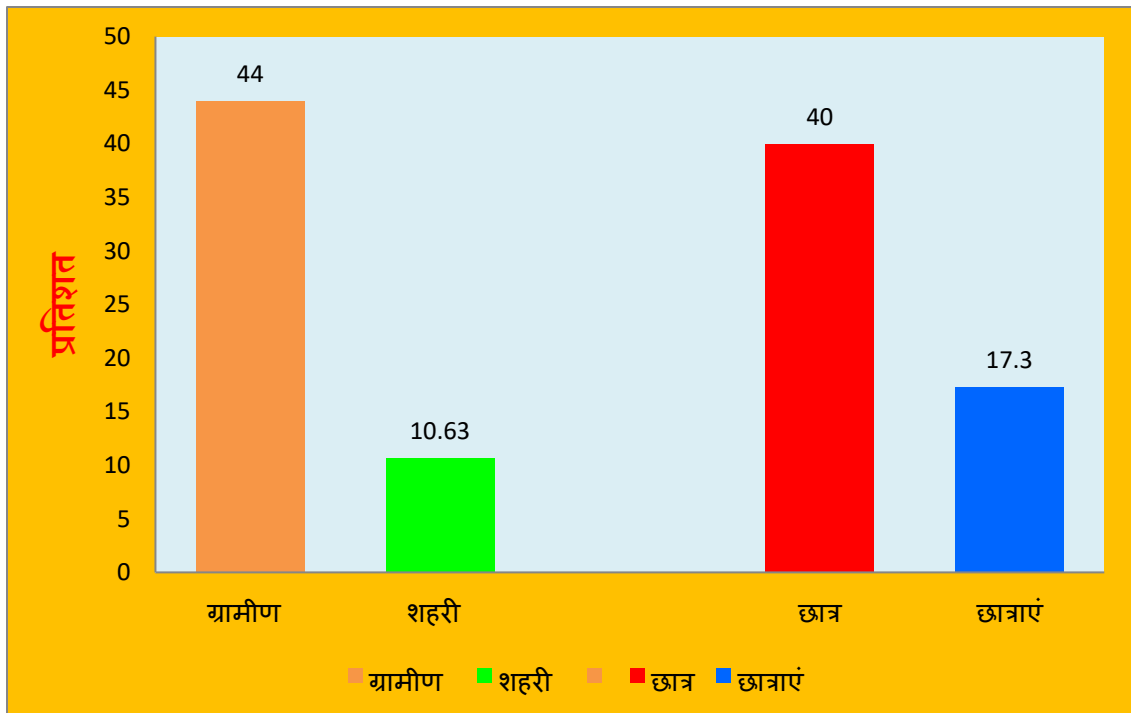
'छोड़ो' (2) शब्द के सम्बन्ध में त्रुटियों का अध्ययन चित्र

संख्या-4.10

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'छोड़ो' शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण(44) तथा चौथाई से भी कम शहरी(10.63) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(44) त्रुटि की गई जबकि चौथाई से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(17.3) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक रूप में ही दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- देशवासी
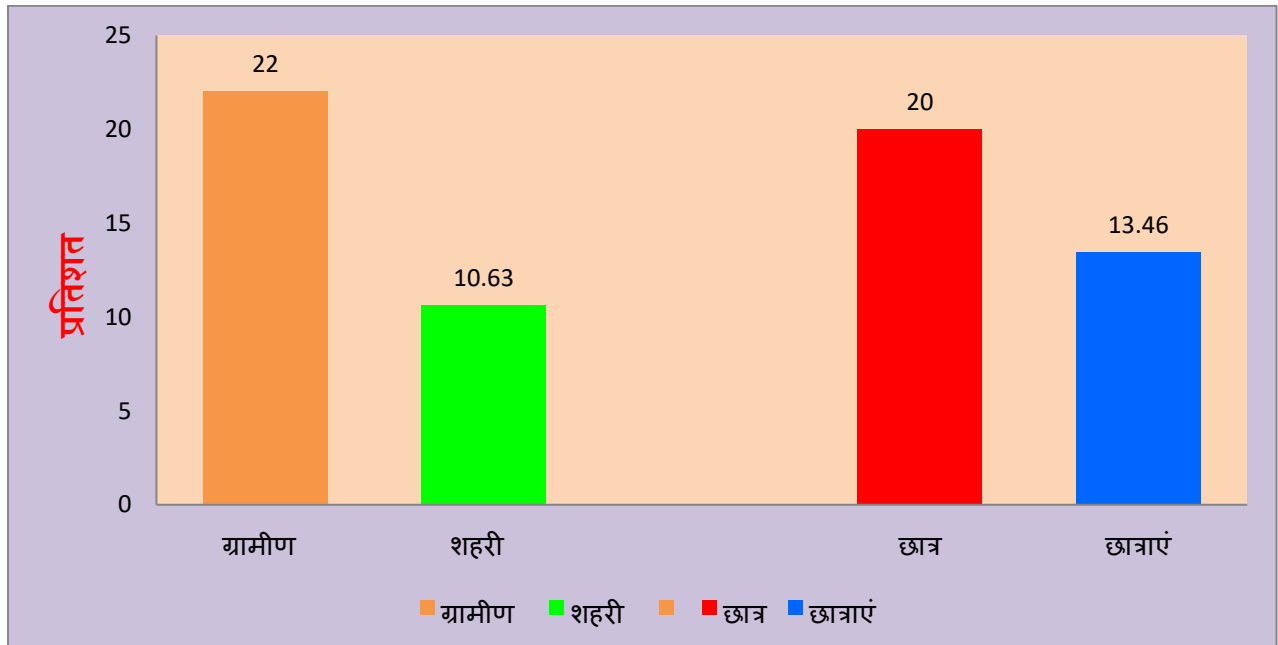
'देशवासी'शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.11

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'देशवासी' शब्द को चौथाई से कम ग्रामीण(22) तथा चौथाई से कम शहरी(10.63) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर चौथाई से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(20) त्रुटि की गई जबकि चौथाई से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(13.46) त्रुटि की गई|

विवेचन-उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'श' के स्थान पर 'स' का प्रयोग किया जाना|

शब्द-लड़ते
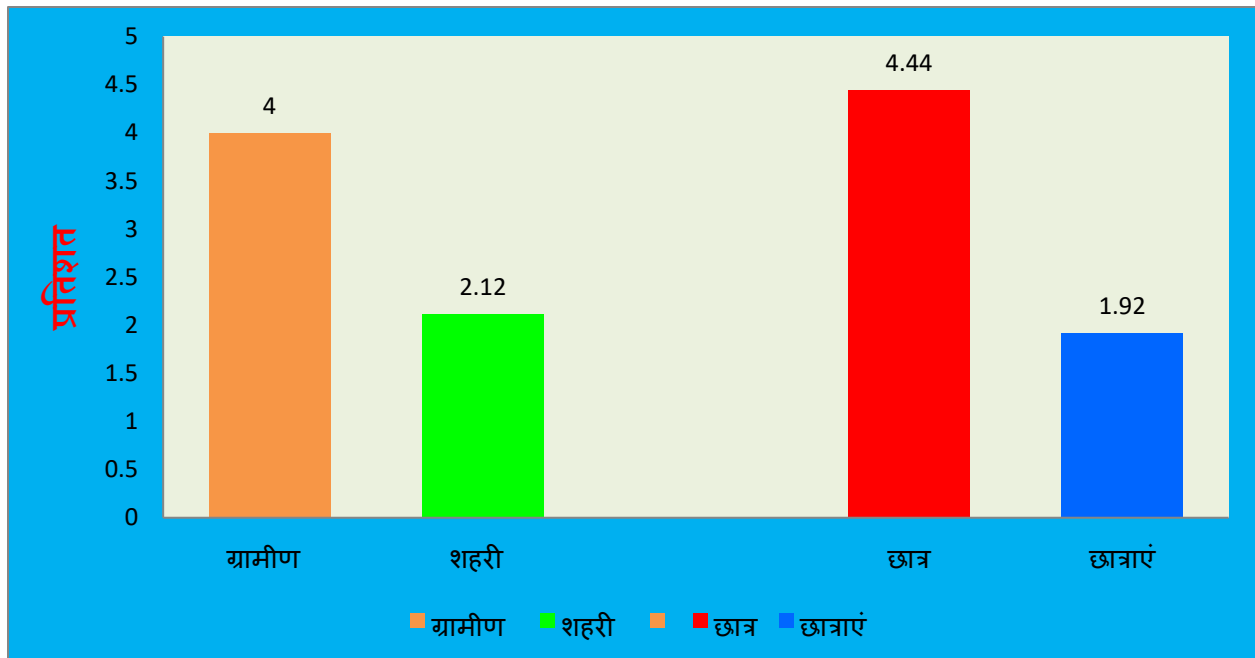
'लड़ते' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.12

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'लड़ते' शब्द को दसवें भाग से भी कम ग्रामीण(4) तथा दसवें भाग से भी कम शहरी(2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप से लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से भी कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(4.44) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(1.92) भी दसवें भाग से कम त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना|

शब्द – 'हैं' (2)
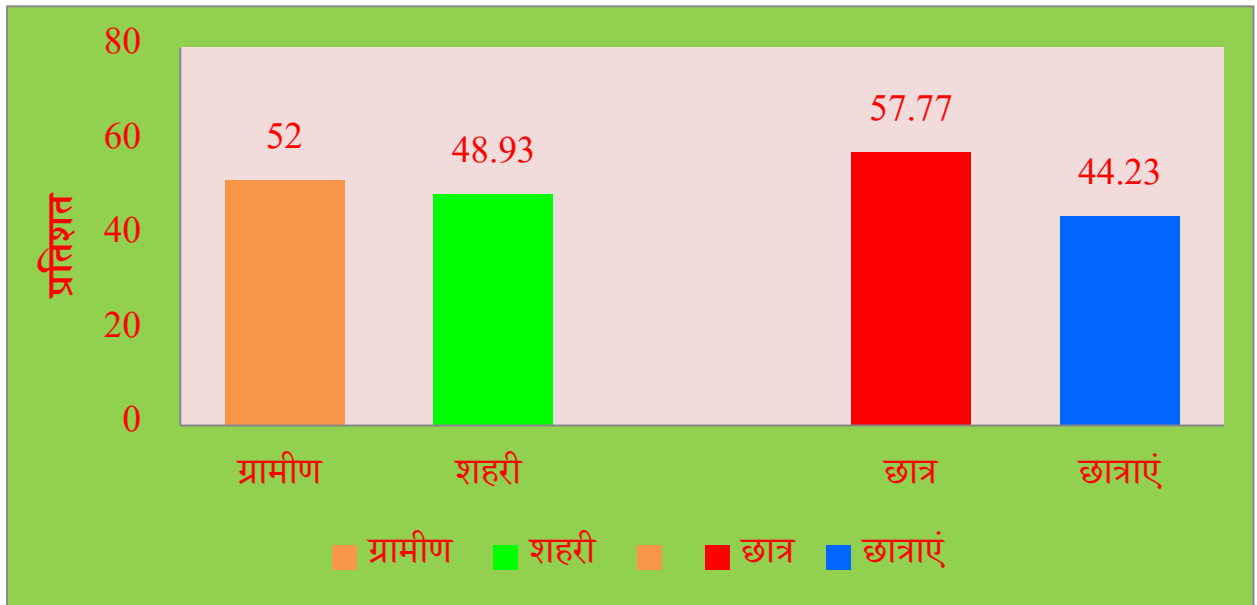
'हैं' (2) शब्द के सम्बन्ध में पशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.13

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'हैं'(2) शब्द को लगभग आधे से ज्यादा ग्रामीण(52) तथा आधे से कम शहरी(48.93) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(57.77) त्रुटि की गई जबकि आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(44.23) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- बड़ी
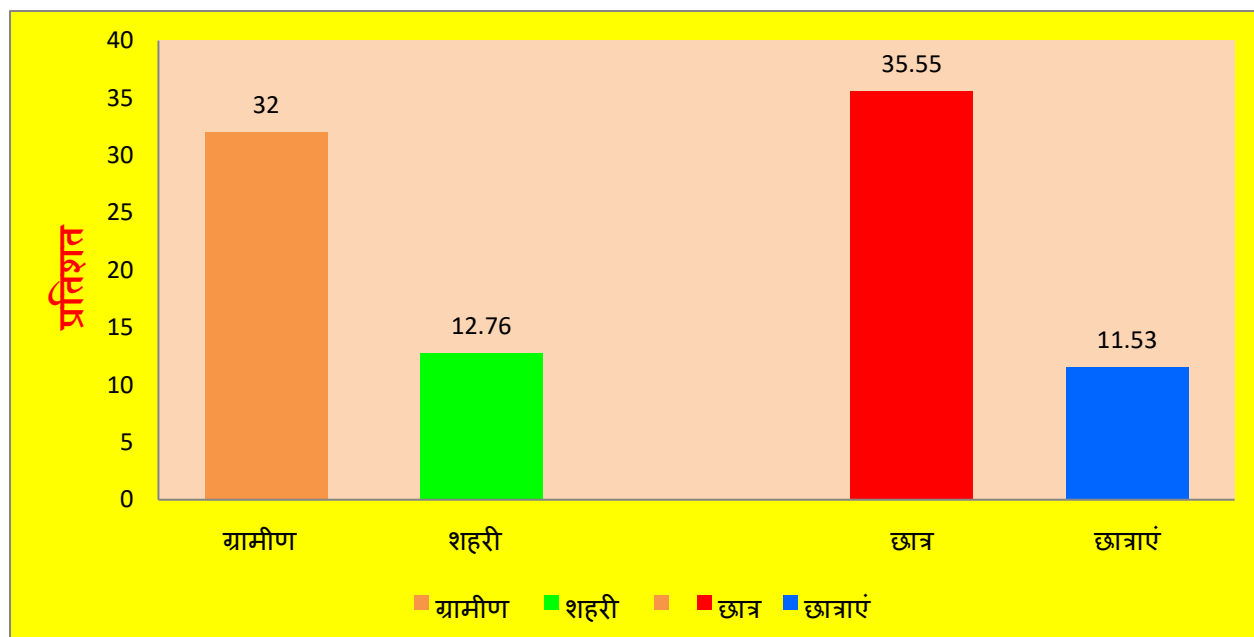
'बड़ी' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.14

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'बड़ी' शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण(32) तथा पांचवें भाग से भी कम शहरी(12.76) शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(35.55) त्रुटि की गई जबकि पांचवें भाग से भी कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(11.53) त्रुटि की गई|

विवेचन-उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- छोड़ो(3)
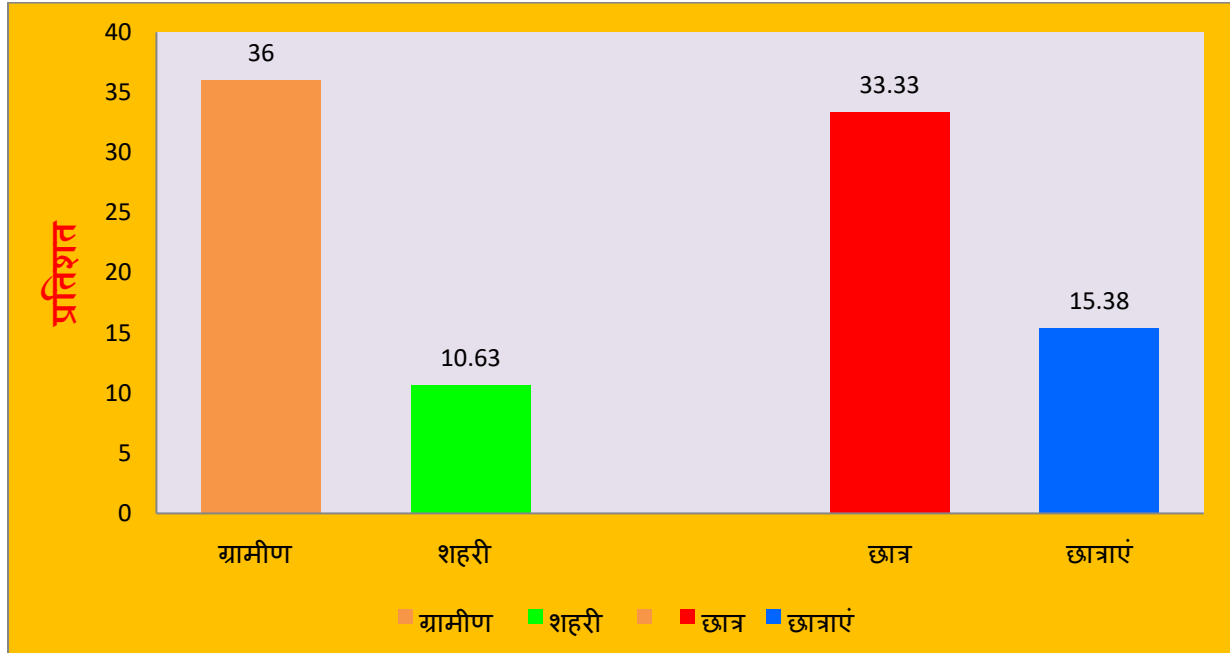
'छोड़ो'(3) शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.15

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'छोड़ो'(3) शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण (36) तथा पांचवें भाग से कम शहरी(10.63) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(33.33) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा पांचवें भाग से भी कम(15.38) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- ब्रिटिश-राज
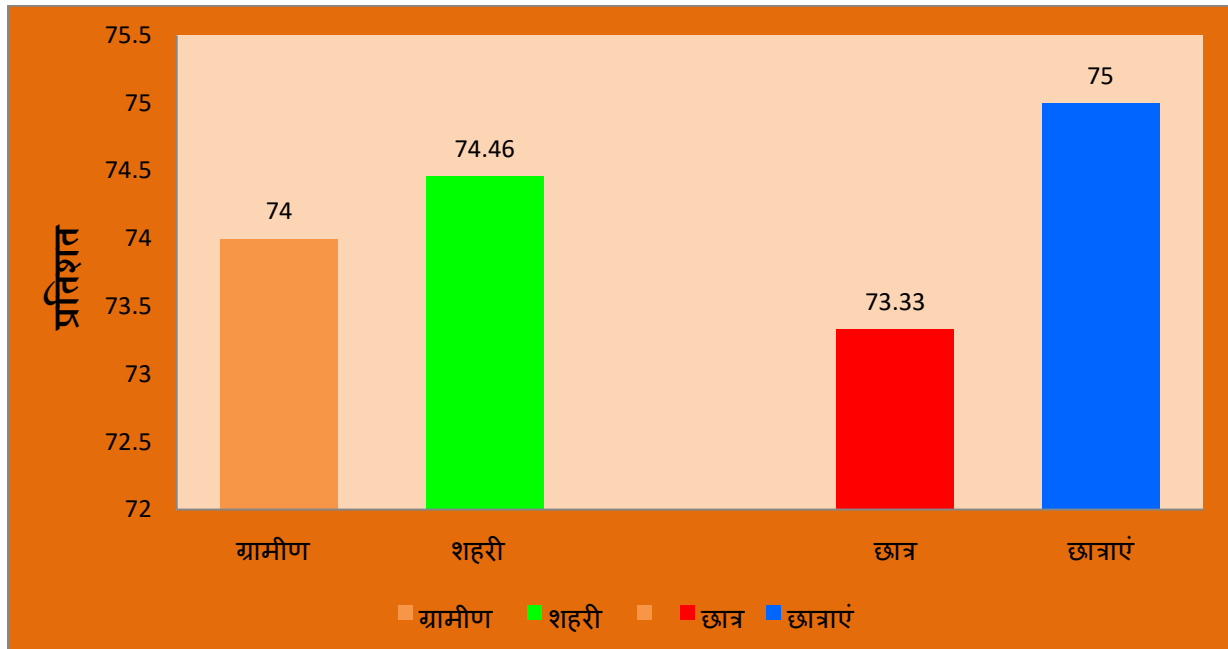
'ब्रिटिश-राज' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.16

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'ब्रिटिश-राज' शब्द को लगभग आधे से अधिक ग्रामीण(74) तथा आधे से ही अधिक शहरी(74.46) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(73.33) त्रुटि की गई जबकि आधे से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(75) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में दो रूपों ने त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं-

(ब) 'श' के स्थान पर 'स' का प्रयोग|

(स) योजक चिहन का प्रयोग न करना|

शब्द- अनपढ़
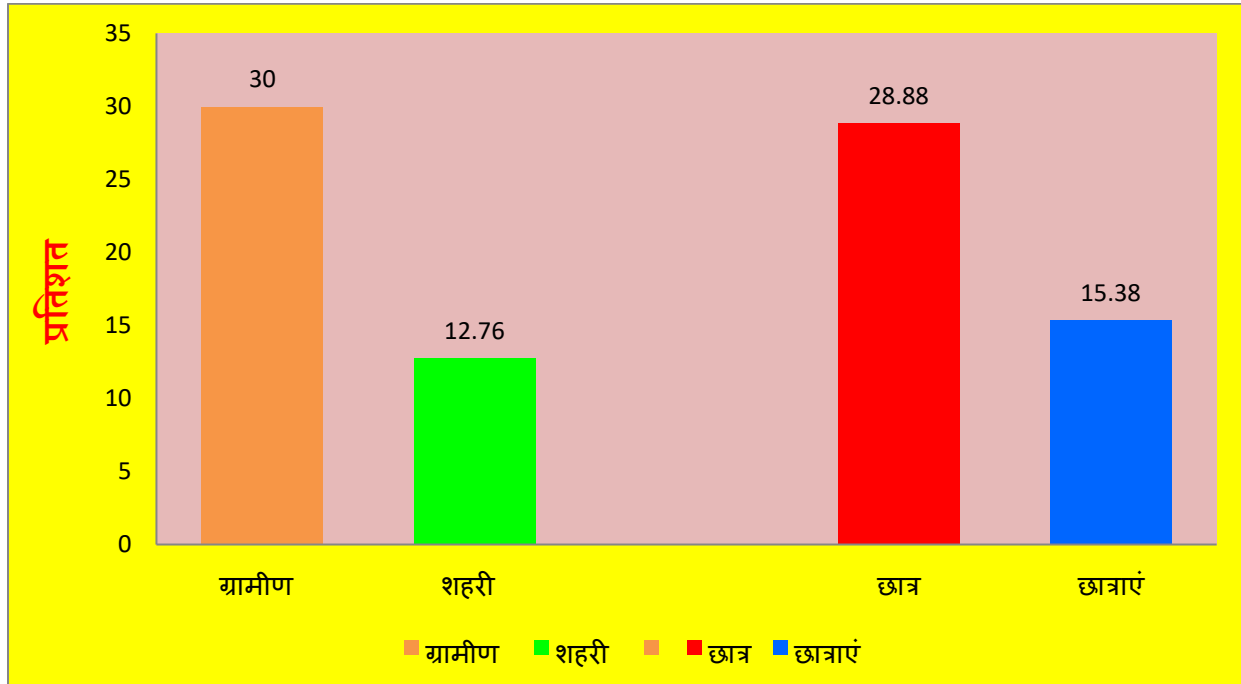
'अनपढ़' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.17

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'अनपढ़' शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण(30) तथा पांचवें भाग से कम शहरी(12.76) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(28.88) त्रुटि की गई जबकि पांचवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(15.38) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि दो रूपों में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'ढ़' के स्थान पर 'ड' का प्रयोग|

(ब) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- छोड़ो(4)
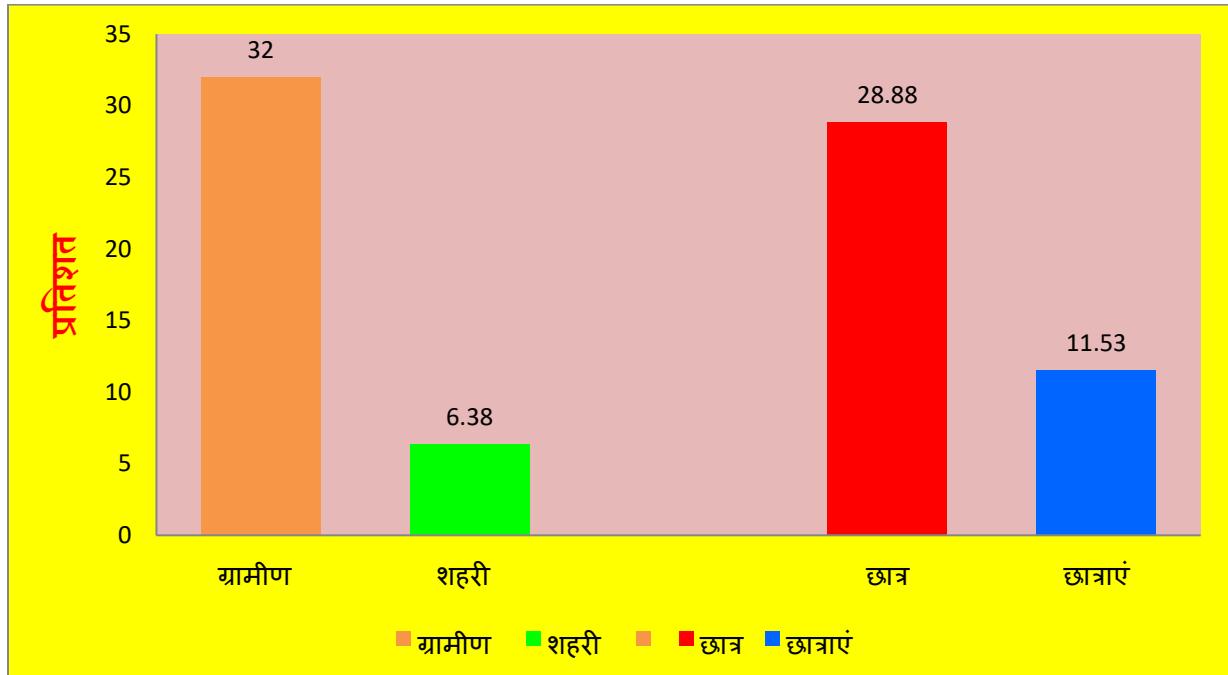
'छोड़ो' (4) शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.18

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'छोड़ो' (4) शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण(32) तथा लगभग पांचवें भाग से भी कम शहरी(6.38) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(28.88) त्रुटि की गई जबकि पांचवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(11.53) त्रुटि की गई|

विवेचन-

- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

  (अ) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- तवारीख
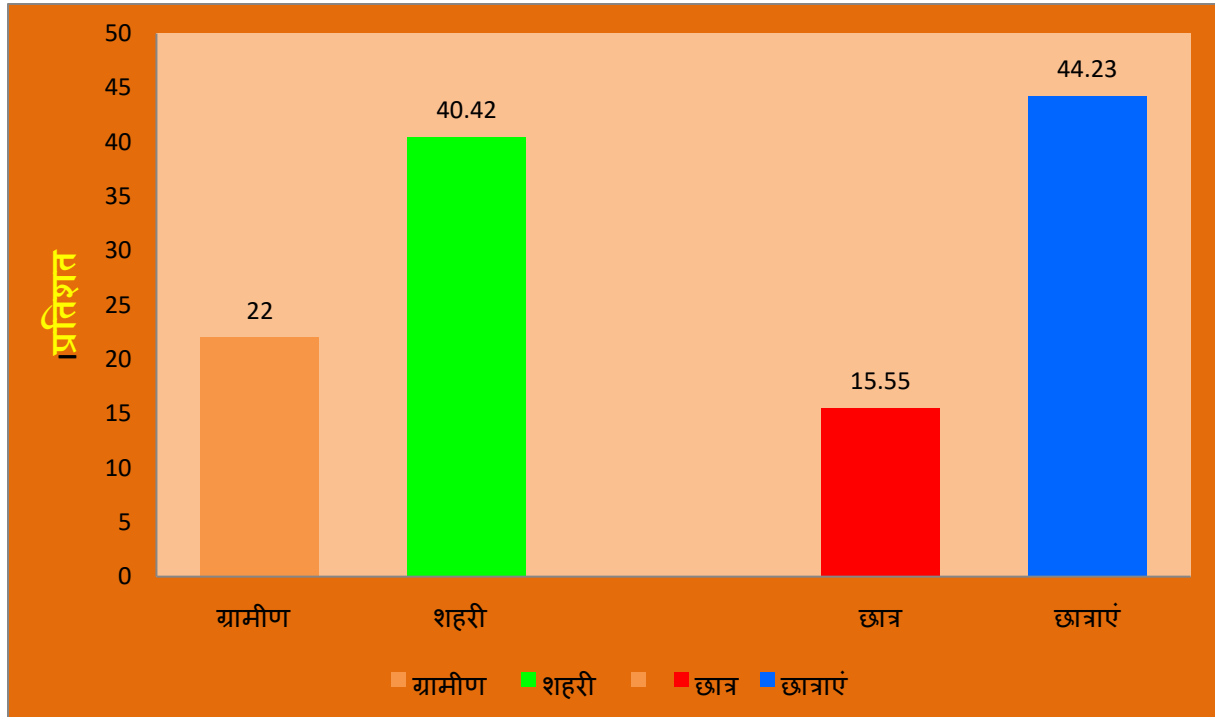
'तवारीख' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.19

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'तवारीख' शब्द को लगभग चौथाई से कम ग्रामीण(22) तथा आधे से कम शहरी(40.42) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|

- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर पांचवें हिस्से से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(15.55) त्रुटि की गई जबकि आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(44.23) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि दो रूपों में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'व' के स्थान पर 'ब' का प्रयोग|

(ब) 'ख' के स्थान पर 'क' का प्रयोग|

शब्द- यूसुफ
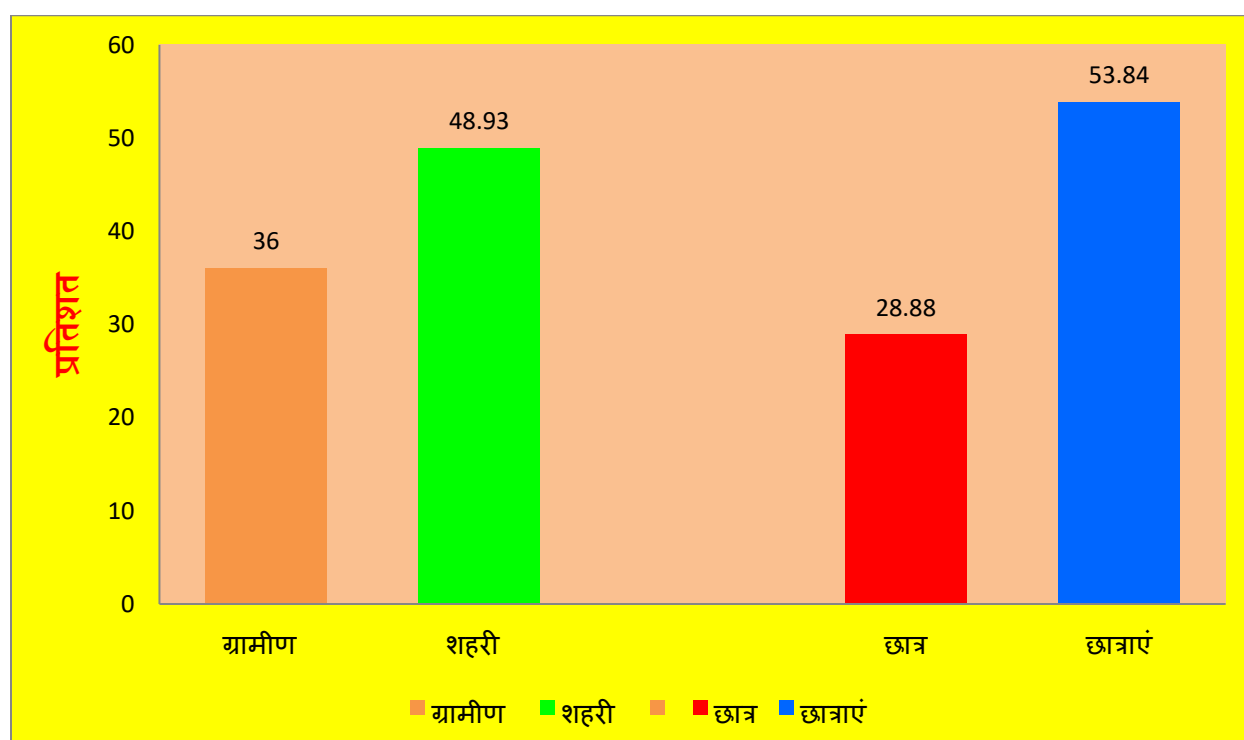
'यूसुफ' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.20

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'यूसुफ' शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण(36) तथा लगभग आधे से कम शहरी(48.93) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(28.88) त्रुटि की गई जबकि आधे से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(53.84) त्रुटि की गई|

विवेचन-

- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक रूप में ही दृष्टिगोचर होती है-

  (अ) 'यू' के स्थान पर 'यु' का प्रयोग|

शब्द- हैं(3)
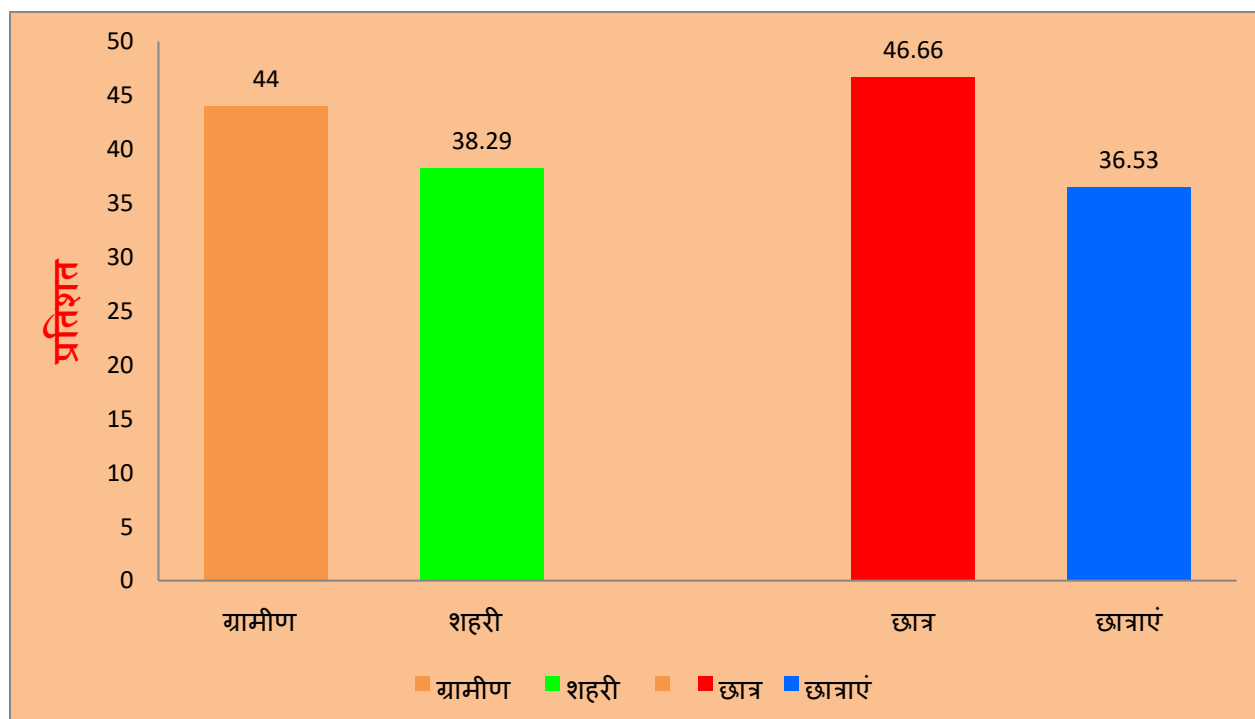
'हैं' (3) शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.21

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'हैं' (3) शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण (44) तथा आधे से ही कम शहरी (38.29) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(44) त्रुटि की गई जबकि आधे से कम ही प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(36.53) त्रुटि की गई|

विवेचन-

- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- हैं(4)
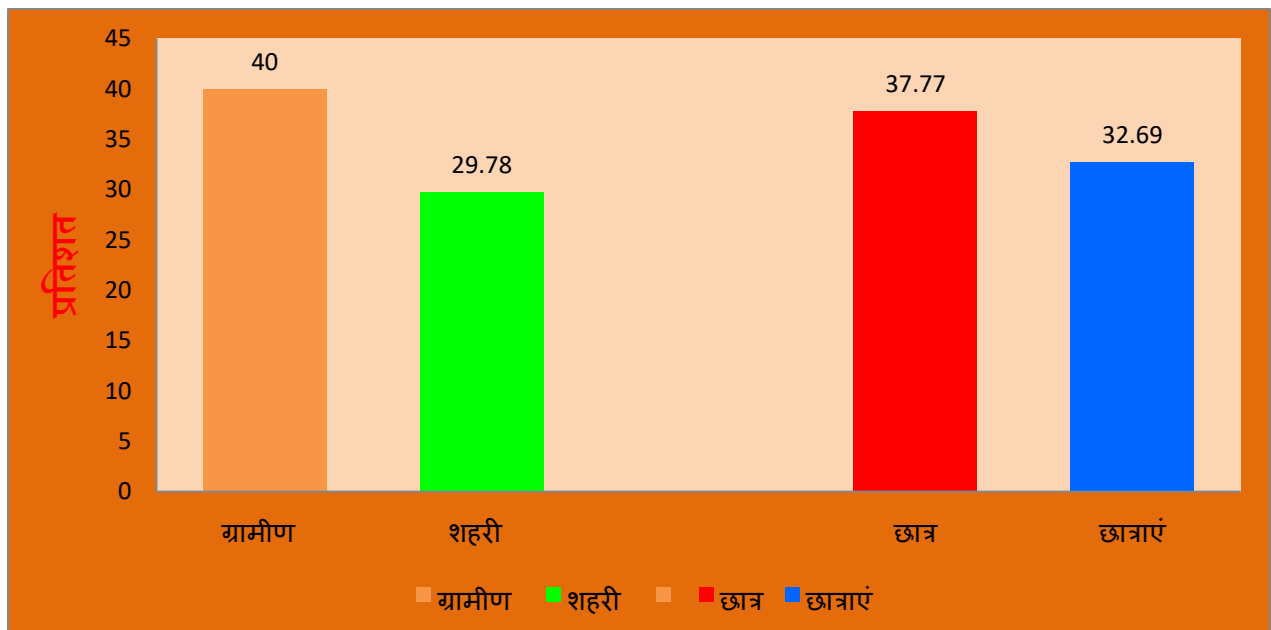
'हैं' (4) शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.22

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'हैं' शब्द को लगभग आधे के कम ग्रामीण(40) तथा आधे से कम ही शहरी(29.78) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(37.77) त्रुटि की गई जबकि आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(32.69) त्रुटि की गई|

विवेचन-

- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार (.) का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- जुड़ते
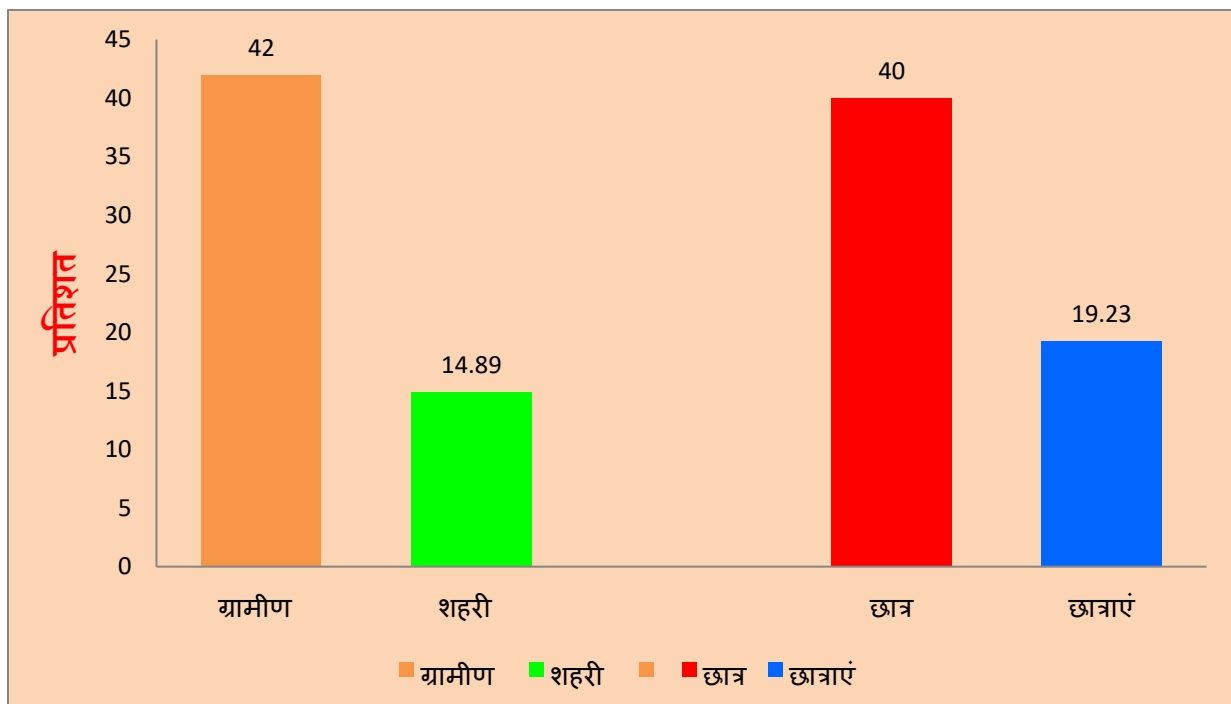
'जुड़ते' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.23

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'जुड़ी' शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण(42) तथा पांचवें हिस्से से कम शहरी(14.89) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(40) त्रुटि की गई जबकि पांचवें हिस्से से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(19.23) त्रुटि की गई|

विवेचन-

- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

  (अ) अनुस्वार का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- हैं(5)
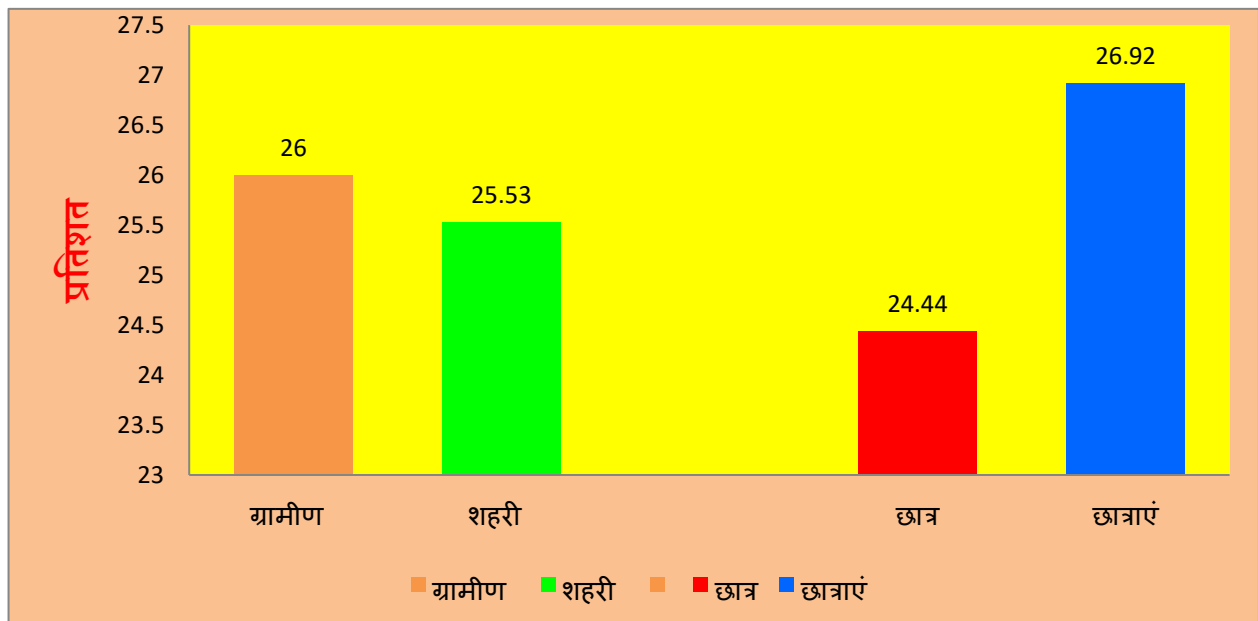
'हैं' (5) शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.24

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'हैं'(5) शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण(26) तथा आधे से कम शहरी(25.53) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(24.44) त्रुटि की गई जबकि आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(26.92) त्रुटि की गई|

विवेचन-

- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

  (अ) अनुस्वार का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- वीरों
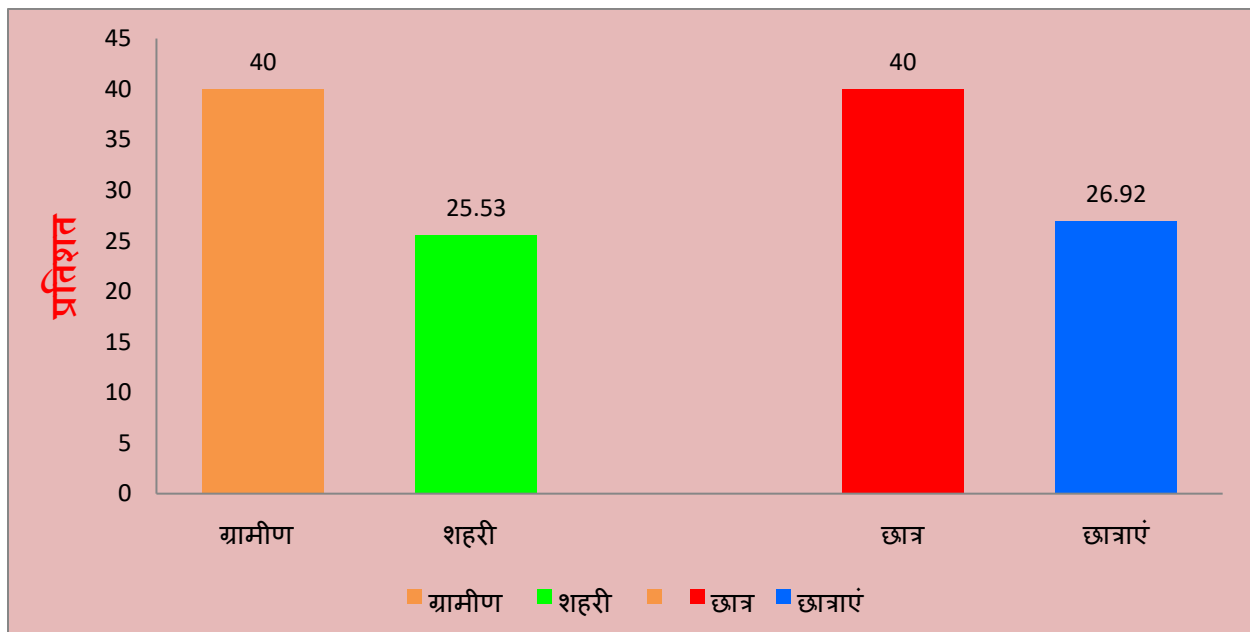
'वीरों' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.25

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'वीरों' शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण(40) तथा आधे से कम शहरी(25.53) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(40) त्रुटि की गई जबकि आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(26.92) त्रुटि की गई|

विवेचन-

- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि दो रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार का प्रयोग न किया जाना|

(ब) 'व' के स्थान पर 'ब' का प्रयोग|

शब्द-हैं(6)
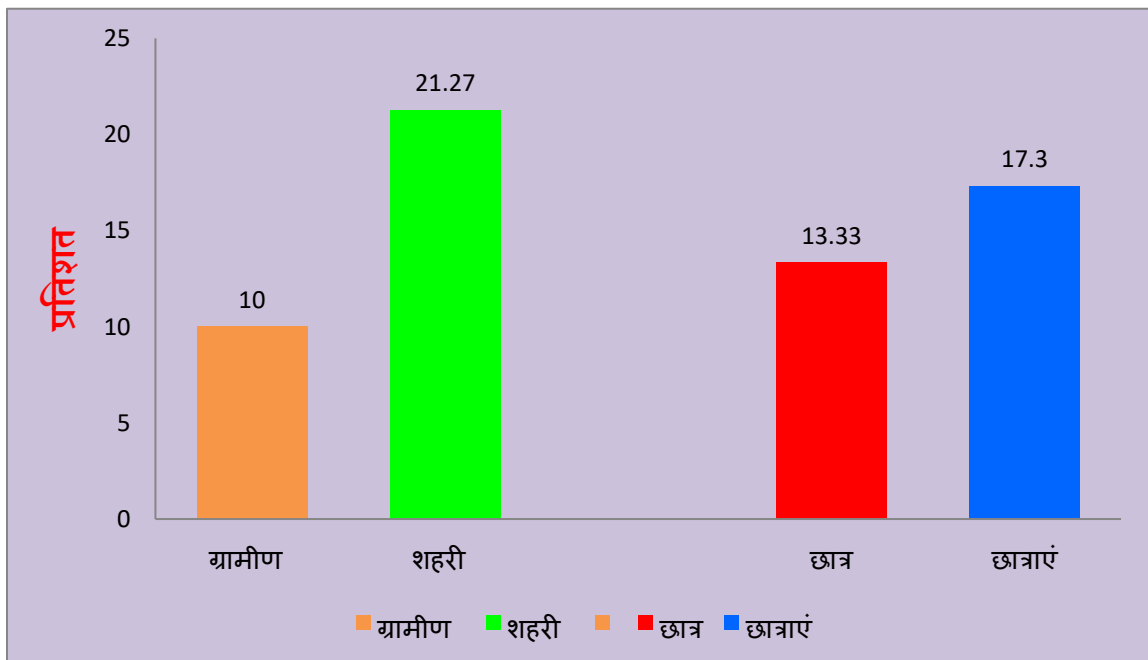
'हैं' (6) शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.26

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'हैं'(6) शब्द को लगभग पांचवें से कम ग्रामीण(10) तथा चौथाई भाग से कम शहरी(21.27) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर पांचवें भाग से भी कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(13.33) त्रुटि की गई जबकि पांचवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(17.3) त्रुटि की गई|

विवेचन-

- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-
  (अ) अनुस्वार का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- आन्दोलन
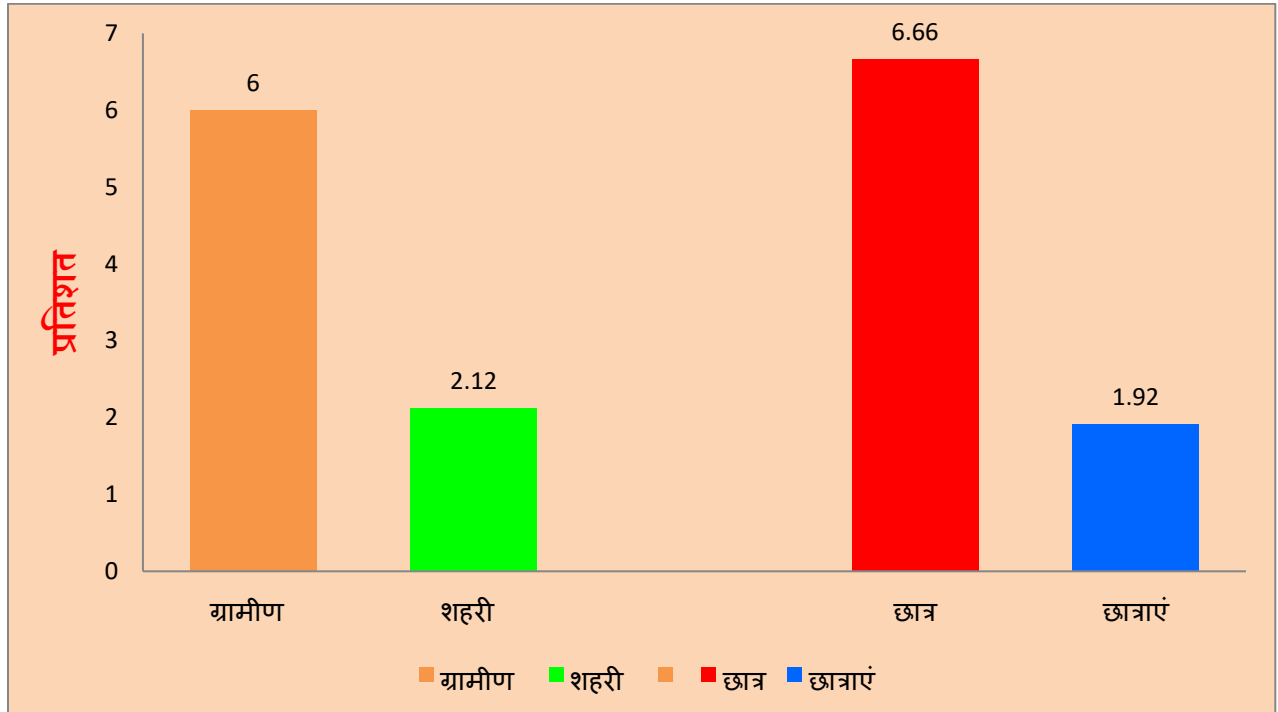
'आन्दोलन' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.27

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'आन्दोलन' शब्द को लगभग दसवें भाग से कम ग्रामीण(6) तथा बीसवें भाग से कम शहरी (2.1) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(6.66) त्रुटि की गई जबकि बीसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(1.92) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक रूप में ही दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'आ' के स्थान पर 'अ' का प्रयोग|

शब्द- महत्वपूर्ण
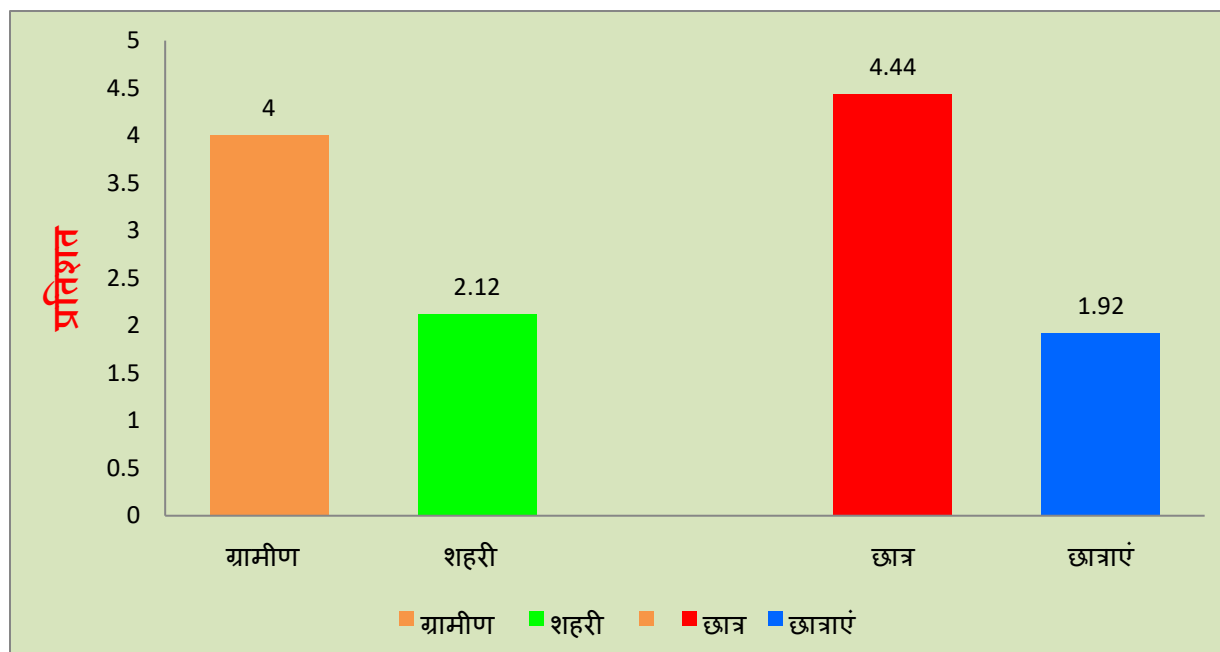
'महत्वपूर्ण' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.28

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'महत्वपूर्ण' शब्द को लगभग बीसवें भाग से भी कम ग्रामीण(4) तथा बीसवें भाग से भी कम शहरी(2.1) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर बीसवें भाग से भी कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(4.44) त्रुटि की गई जबकि बीसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा (1.92) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक रूप में ही दृष्टिगत होती है-

(अ) 'महत्वपूर्ण' शब्द को महत्व पूर्ण के रूप में लिखा गया|

शब्द- आन्दोलन(2)
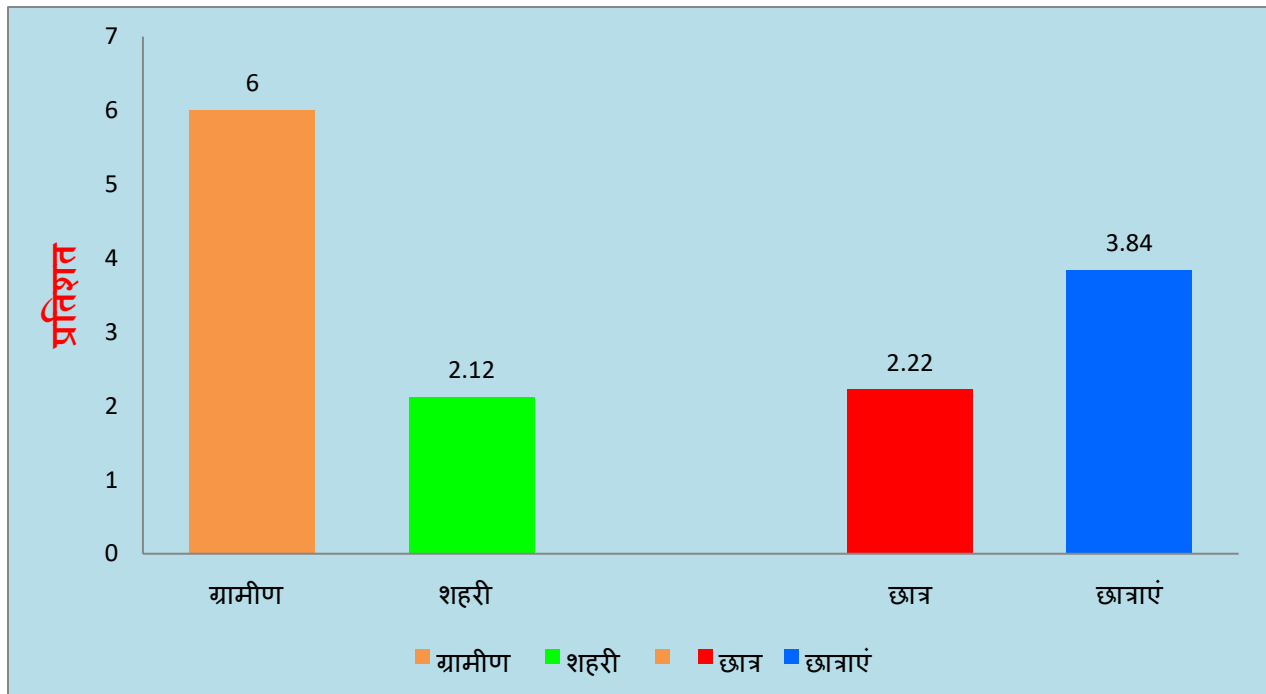
'आन्दोलन' (2) शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.29

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'आन्दोलन' शब्द को लगभग दसवें भाग से कम ग्रामीण(6) तथा बीसवें भाग से कम शहरी (2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर बीसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि बीसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(3.84) त्रुटि की गई|

विवेचन-

- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक रूप में ही दृष्टिगोचर होती है-

(अ) ‘आ’ के स्थान पर ‘अ’ का प्रयोग|
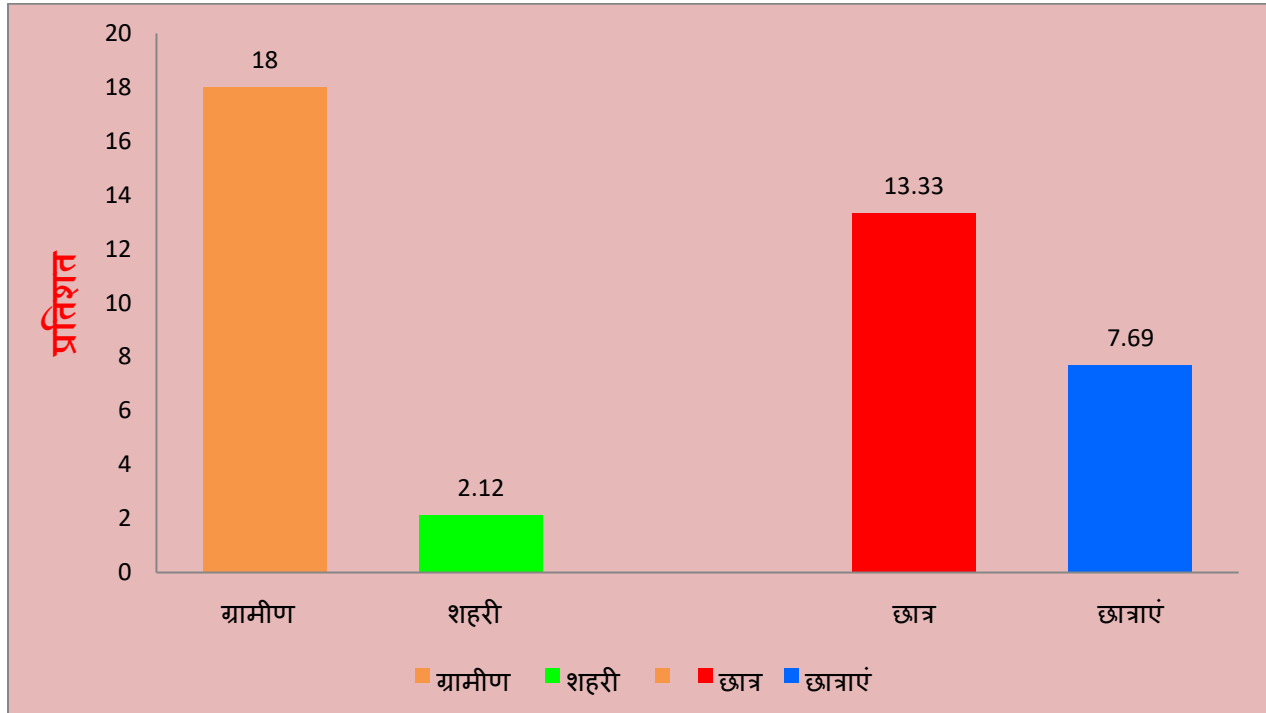
‘हिंदुस्तान’ शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.30

विश्लेषण-

- उपर्युक्त ‘हिंदुस्तान’ शब्द को लगभग पांचवें भाग से कम ग्रामीण(18) तथा बीसवें भाग से कम शहरी (2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर बीसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(1.33) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(7.69) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक रूप में ही दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार (.) का प्रयोग न किया जाना|
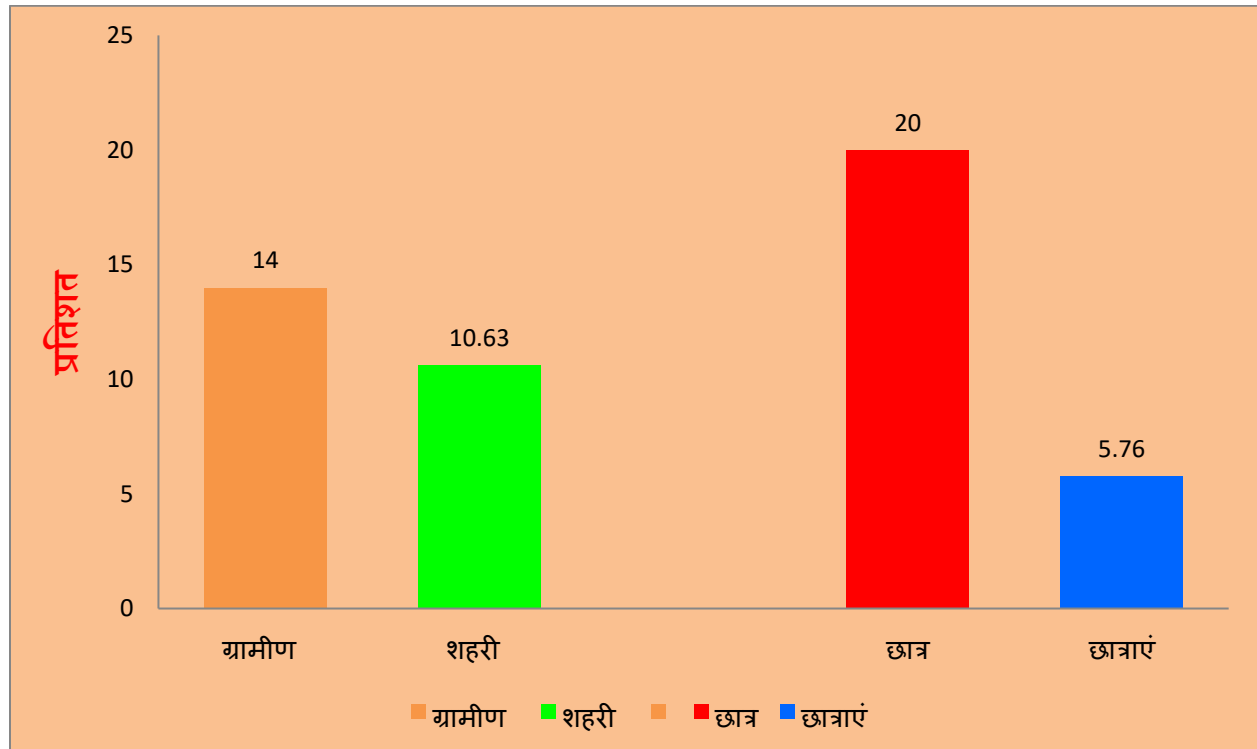
'क्रान्ति' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.31

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'क्रान्ति' शब्द को लगभग पांचवें भाग से कम ग्रामीण(14) तथा लगभग दसवें भाग के बराबर शहरी (10.63) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर पांचवें भाग के बराबर प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(20) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(5.76) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक रूप में ही दृष्टिगोचर होती है-

(अ) ‘क्रान्ति’ को क्राति के रूप में लिखा जाना|

शब्द- महीना
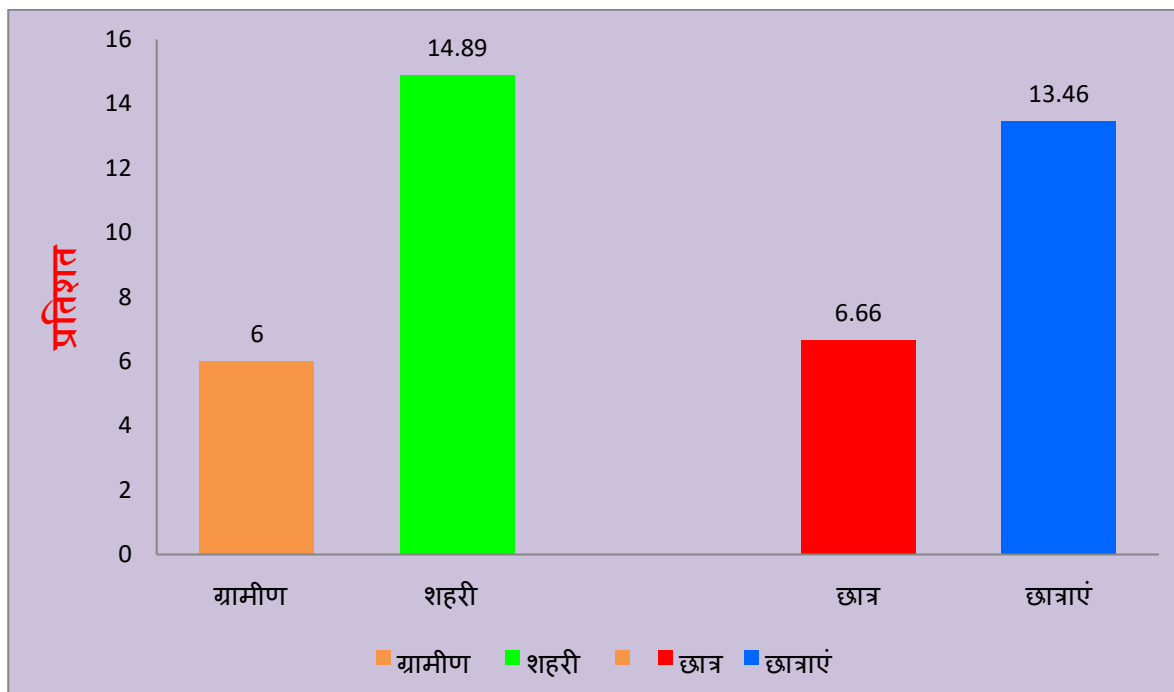
‘महीना’ शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.32

विश्लेषण-

- उपर्युक्त ‘महीना’ शब्द को लगभग दसवें भाग से कम ग्रामीण(6) तथा लगभग पांचवें भाग से कम शहरी (14) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(6.66) त्रुटि की गई जबकि बीसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(13.46) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक रूप में ही दृष्टिगोचर होती है-

(अ) मात्रा सम्बन्धी अशुद्धि 'ही' को 'हि' के रूप में लिखा गया|

शब्द- क्रान्ति(2)
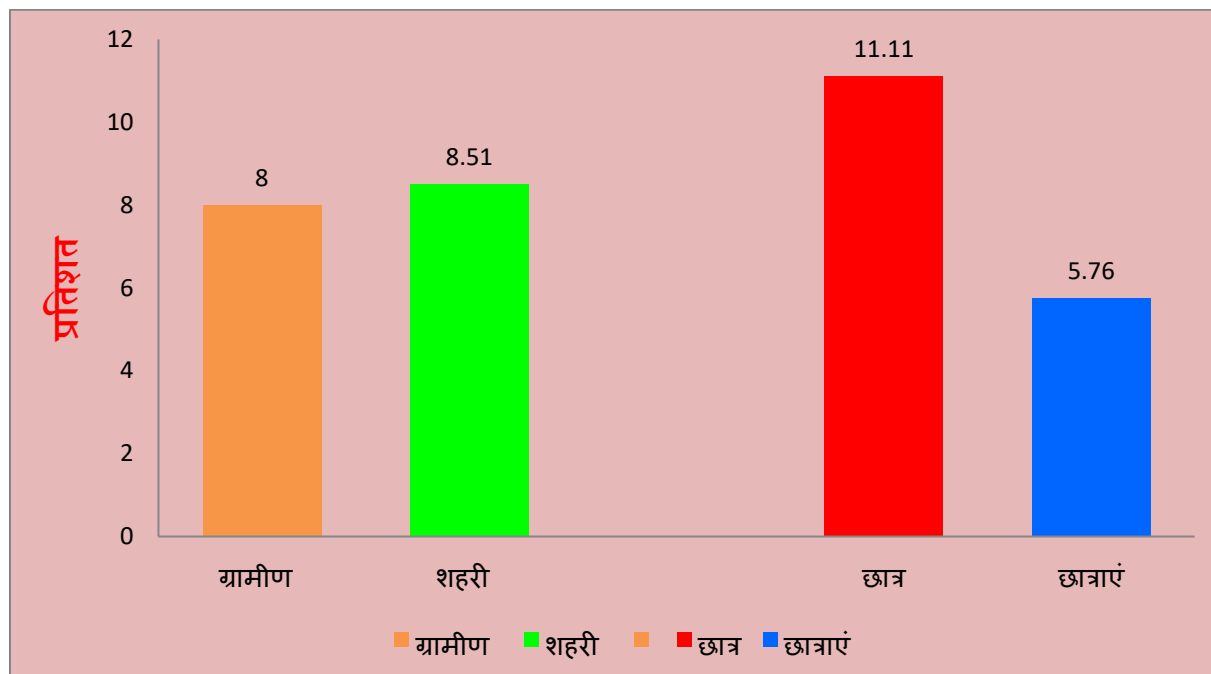
'क्रान्ति' (2) शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.33

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'क्रान्ति' शब्द को लगभग दसवें भाग से कम ग्रामीण(8) तथा लगभग दसवें भाग से कम शहरी (8.51) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर पांचवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(11.11) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(5.76) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक रूप में ही दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'क्रान्ति' को क्राति के रूप में लिखा गया|
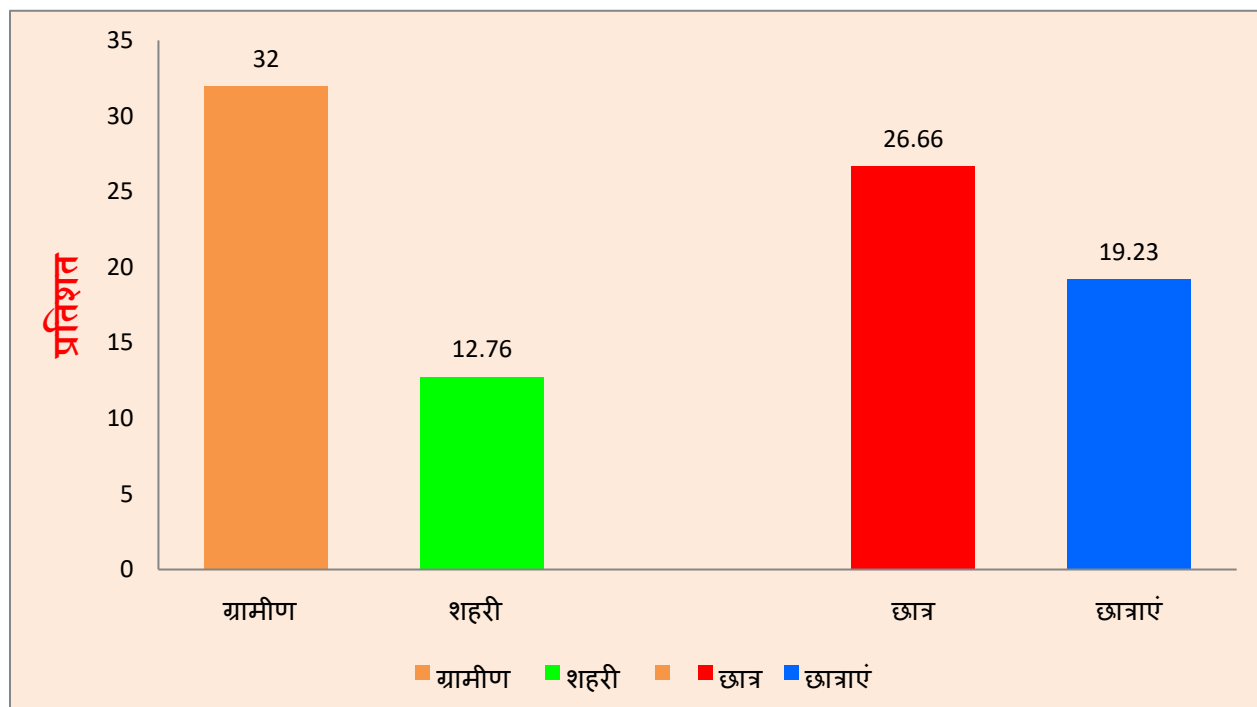
'पीढ़ी' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.34

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'पीढ़ी' शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण(32) तथा लगभग पांचवें भाग से कम शहरी (12.76) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर पांचवें भाग से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(26.66) त्रुटि की गई जबकि पांचवें भाग के बराबर प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(19.23) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि दो रूपों में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना|

(ब) मात्रा सम्बन्धी त्रुटि 'ढ़ी' को 'ढि' लिखा जाना|

शब्द- क्या
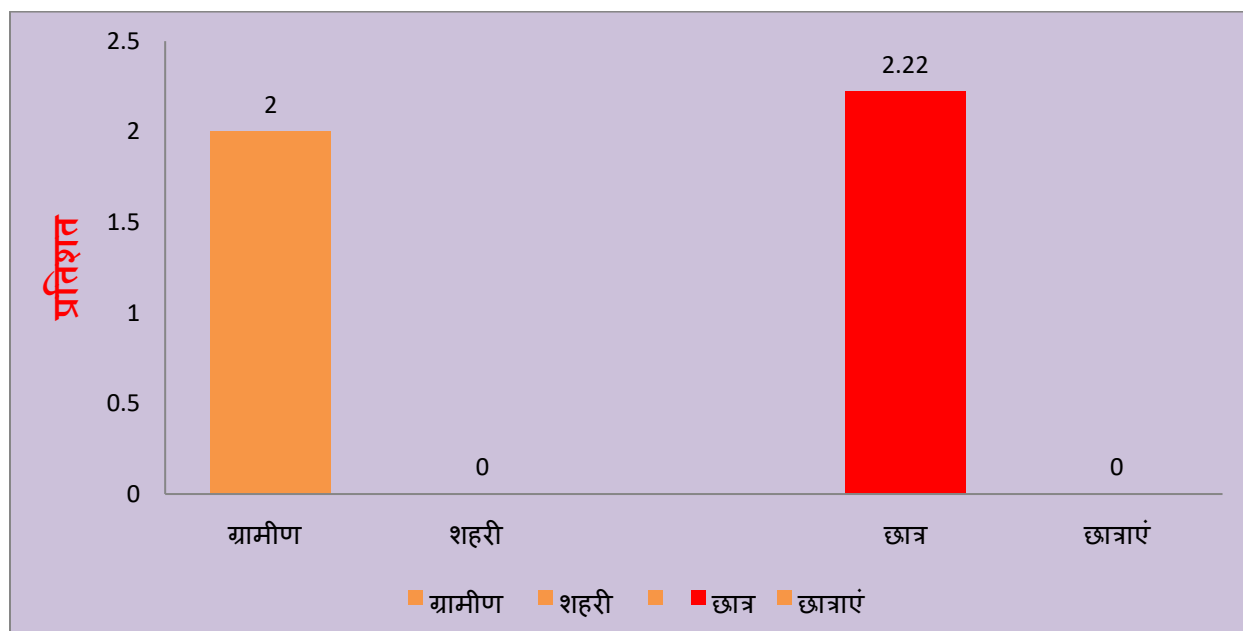
'क्या' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.35

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'क्या' शब्द को लगभग बीसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर बीसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि पां प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(0) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) ‘क्या’ के स्थान पर ‘किया’ का प्रयोग|

शब्द- पढ़ा
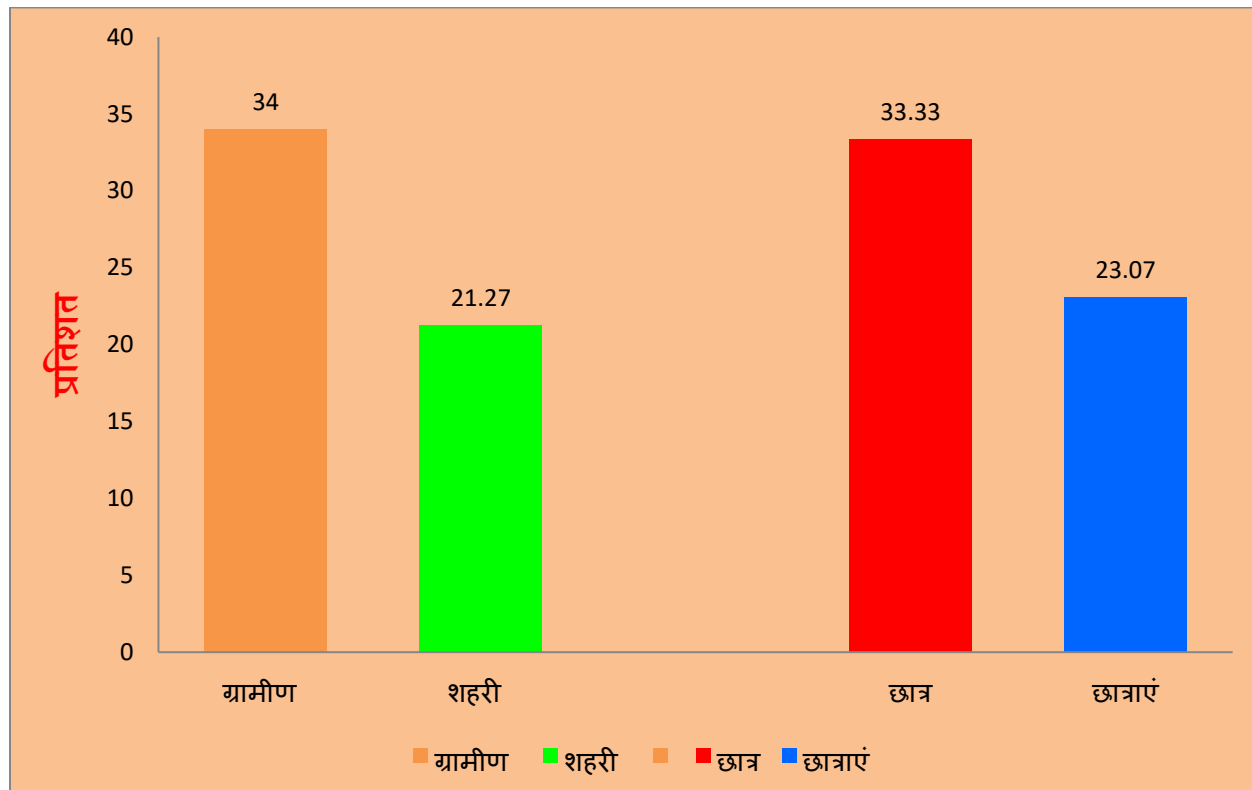
‘पढ़ा’ शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.36

विश्लेषण-

- उपर्युक्त ‘पढ़ा’ शब्द को लगभग आधे से कम ग्रामीण(34) तथा लगभग पांचवें भाग से अधिक शहरी (21.27) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|

- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर आधे से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(33.33) त्रुटि की गई जबकि पांचवें भाग से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(23.07) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- देश
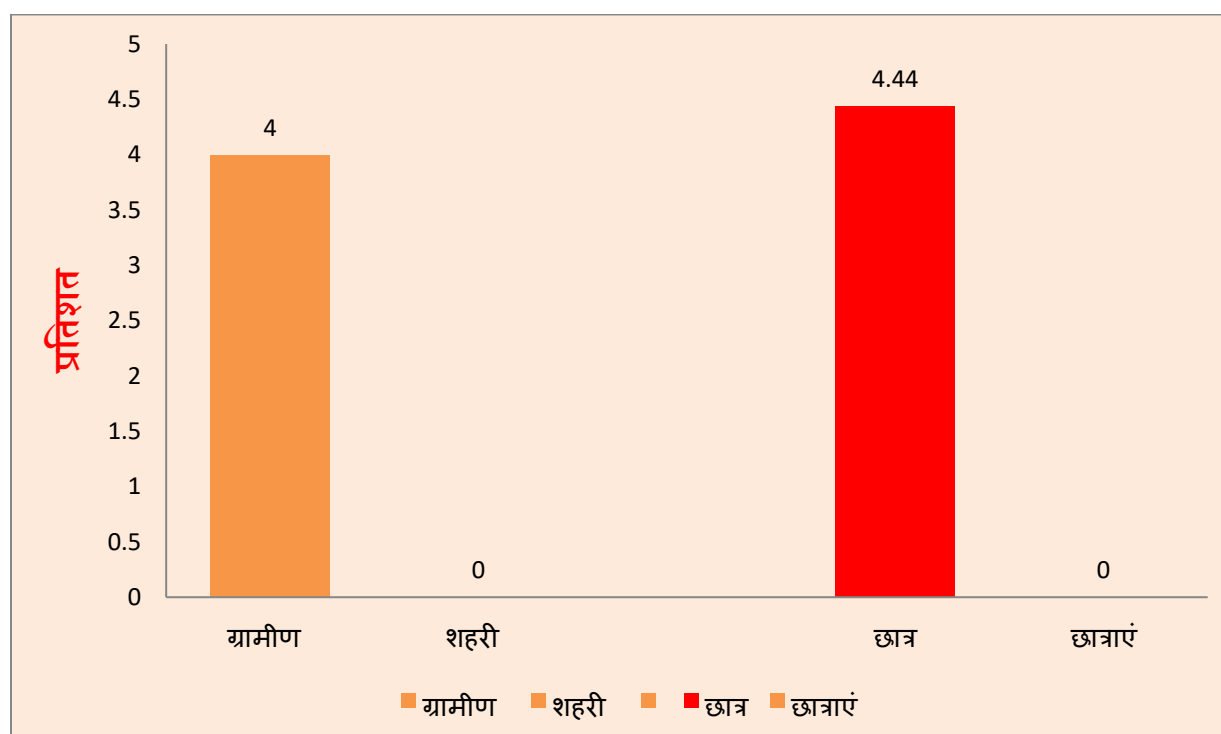
'देश' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.37

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'देश' शब्द को लगभग बीसवें भाग से कम ग्रामीण(4) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर बीसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(4.44) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(0) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'श' के स्थान पर 'स' का प्रयोग|

शब्द- गाँव
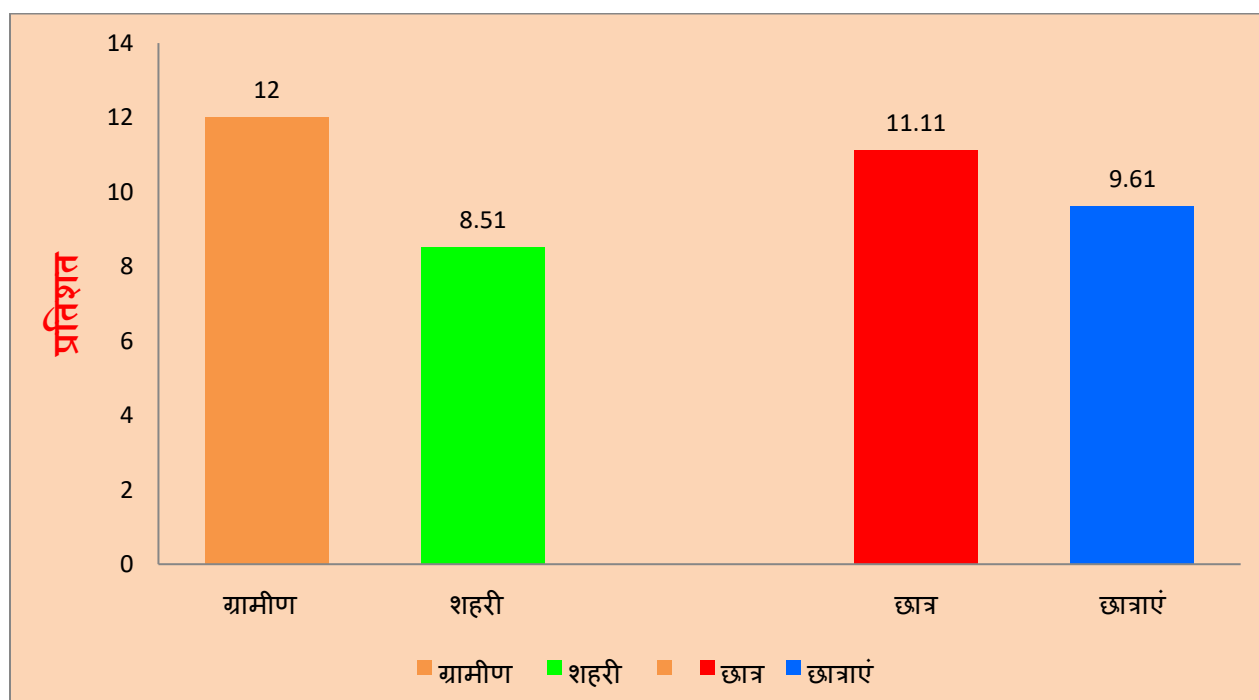
'गाँव' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.38

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'गाँव' शब्द को लगभग पांचवें से कम ग्रामीण(12) तथा लगभग दसवें भाग से कम शहरी (8.51) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर पांचवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(11.11) त्रुटि की गई जबकि लगभग दसवें भाग के बराबर प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(9.61) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुनासिक का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- कन्धे
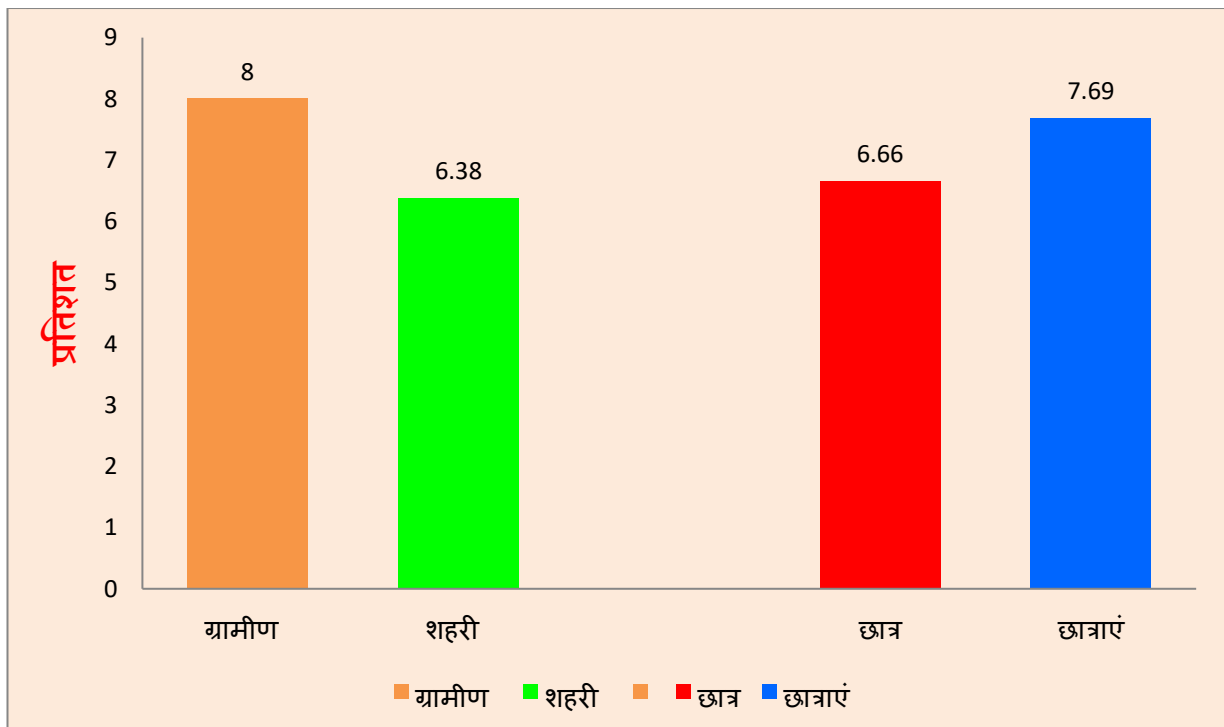
'कन्धे' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.39

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'कन्धे' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(8) तथा लगभग बीसवें भाग से अधिक शहरी (6.38) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(6.66) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(7.69) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'धे' के स्थान पर 'ध' का किया जाना|

शब्द- प्यारे
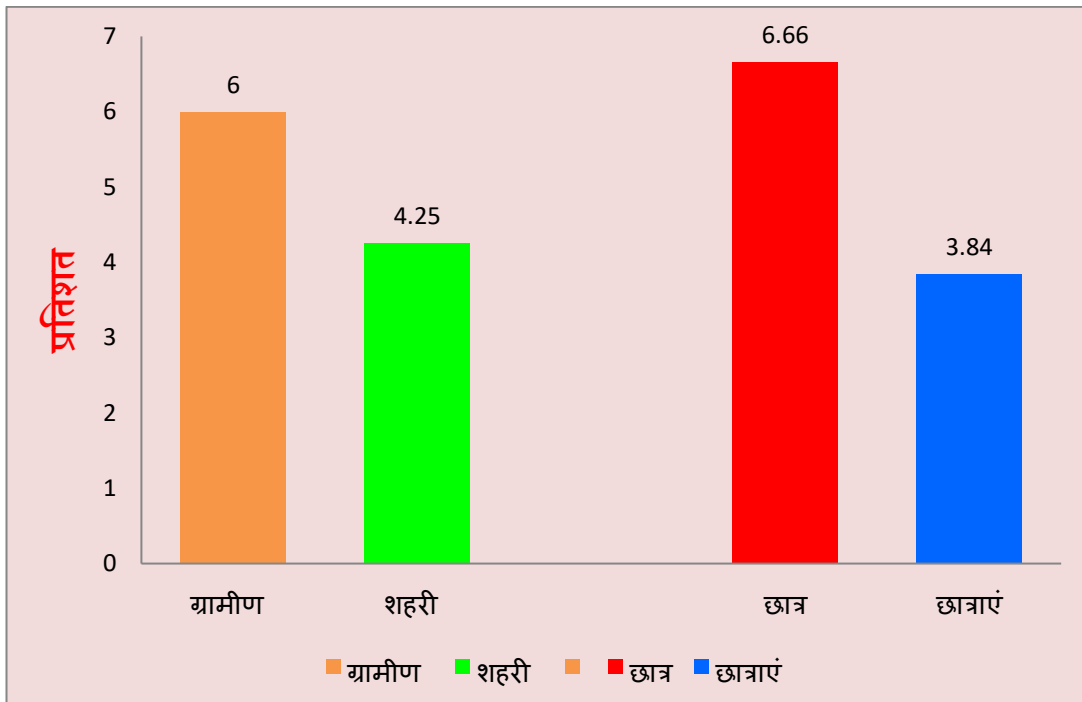
‘प्यारे’ शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.40

विश्लेषण-

- उपर्युक्त ‘प्यारे’ शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(8) तथा लगभग बीसवें भाग से कम शहरी (4.25) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(6.66) त्रुटि की गई जबकि बीसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(3.84) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) ‘प्यारे’ शब्द को गलत रूप में लिखा जाना|

शब्द-बात
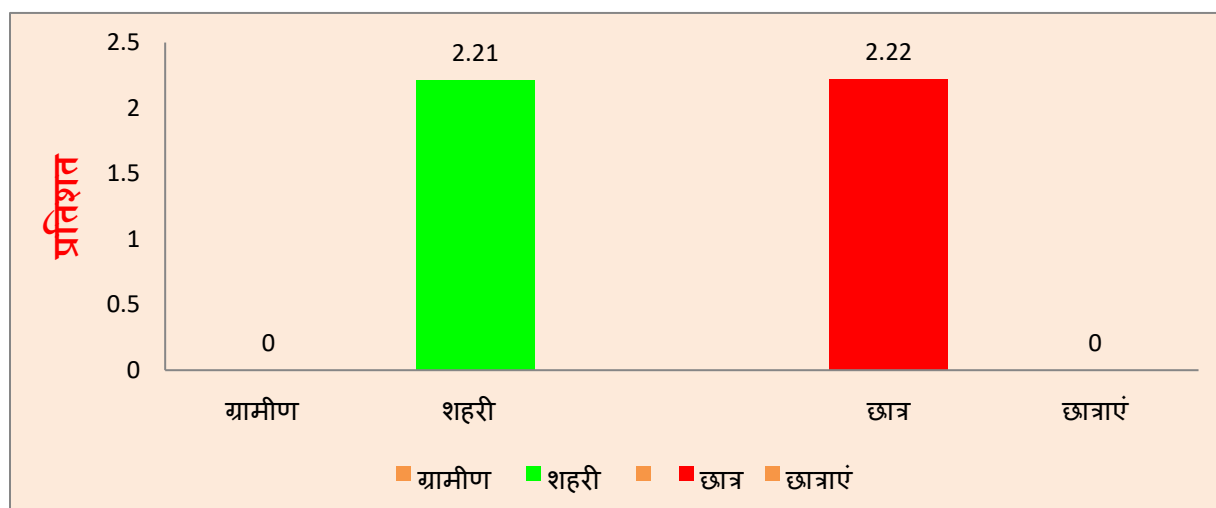
‘बात’ शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.41

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'बात' शब्द को बिना अशुद्धि के ग्रामीण(0) तथा बीसवें भाग से भी कम शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा(2.21) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर बीसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(0) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'ब' के स्थान पर 'व' का प्रयोग|

शब्द- अंग्रेजी
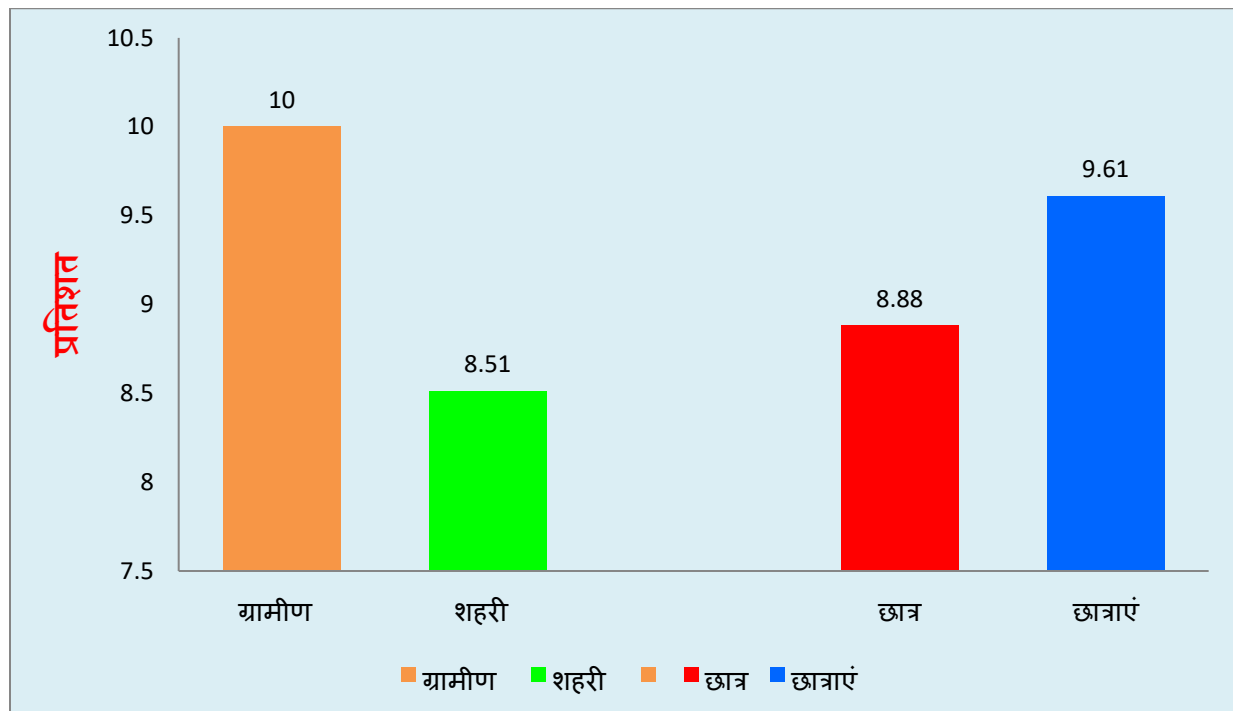
'अंग्रेजी' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.42

विश्लेषण-

- उपर्युक्त ‘अंग्रेजी’ शब्द को दसवें भाग के बराबर ग्रामीण(10) तथा लगभग बीसवें भाग से अधिक शहरी (8.51) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(8.88) त्रुटि की गई जबकि बीसवें भाग से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(9.61) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार (.) का प्रयोग न किया जाना||

शब्द- जनमानस
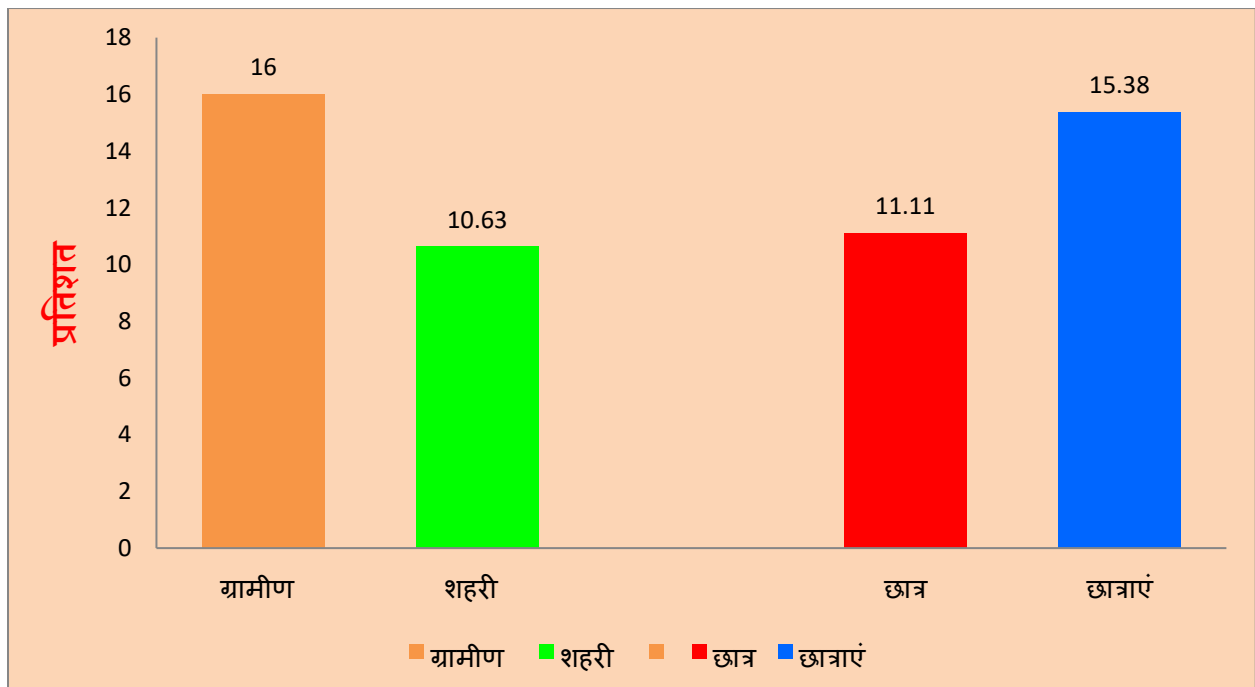
‘जनमानस’ शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.43

विश्लेषण-

- उपर्युक्त ‘जनमानस’ शब्द को दसवें भाग से अधिक ग्रामीण(16) तथा लगभग दसवें भाग के बराबर शहरी (10.63) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(11.11) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(15.38) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) ‘जनमानस’ शब्द को सही रूप में नहीं लिखा गया|

शब्द- जूझते
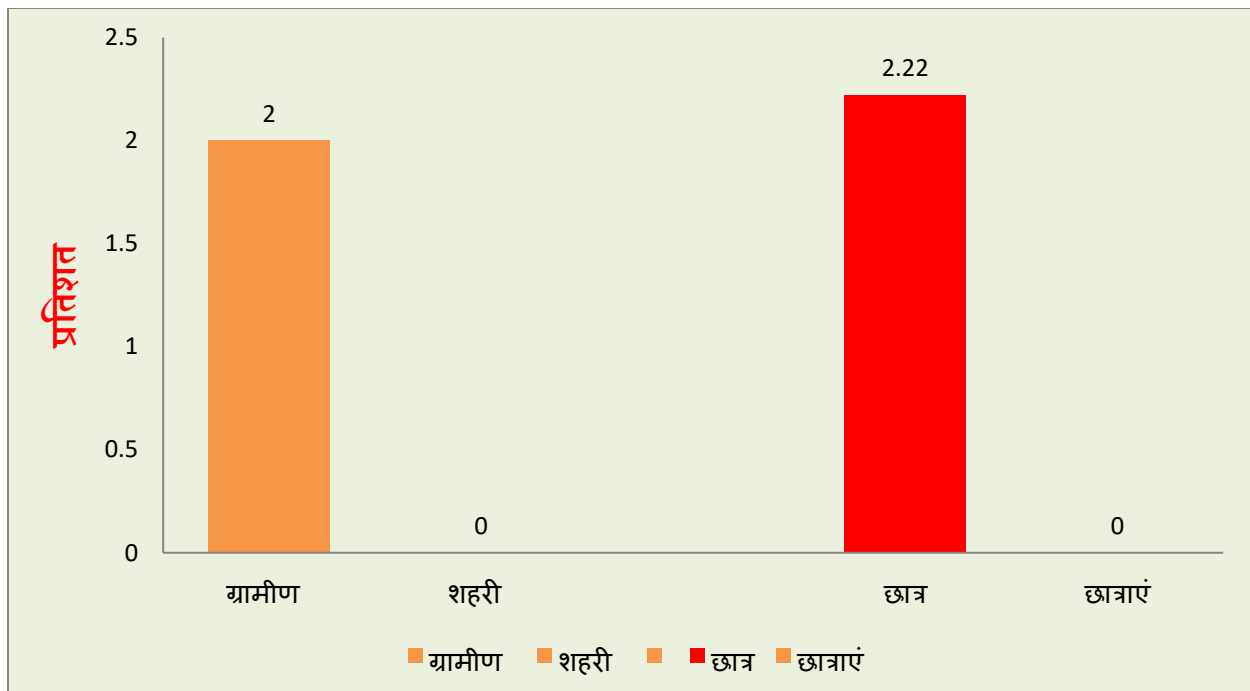
‘जूझते’ शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.44

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'जूझते' शब्द को लगभग बीसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर बीसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(0) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'जू' के स्थान पर 'जु' का प्रयोग|

शब्द- घटनाएँ
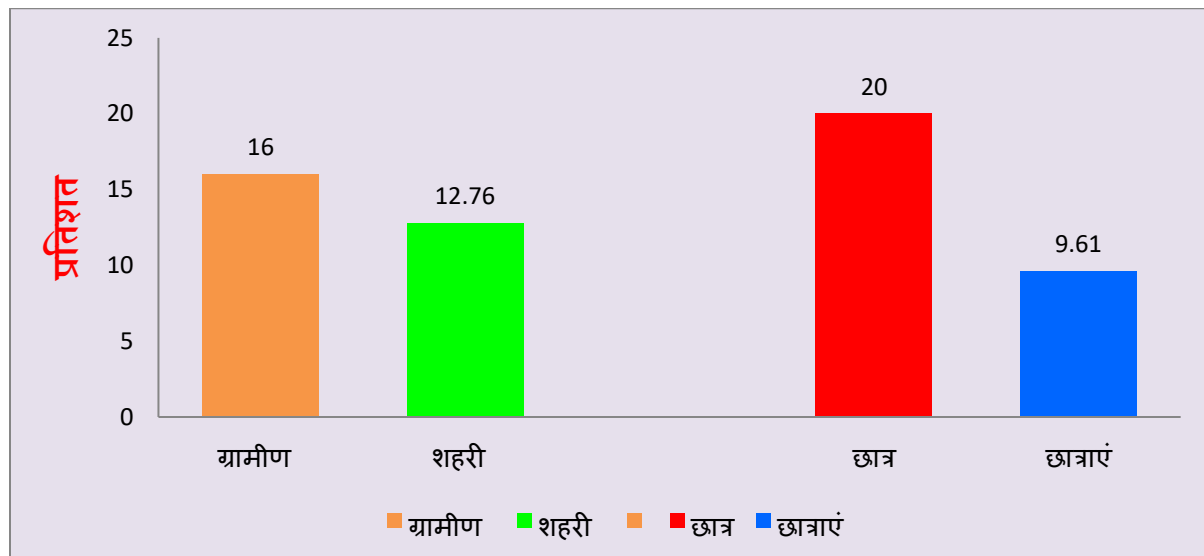
'घटनाएँ' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.45

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'घटनाएँ' शब्द को दसवें भाग से अधिक ग्रामीण(16) तथा दसवें भाग से अधिक शहरी (12.76) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर बीसवें भाग के बराबर प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(20) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(9.61) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुनासिक का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- संघर्ष
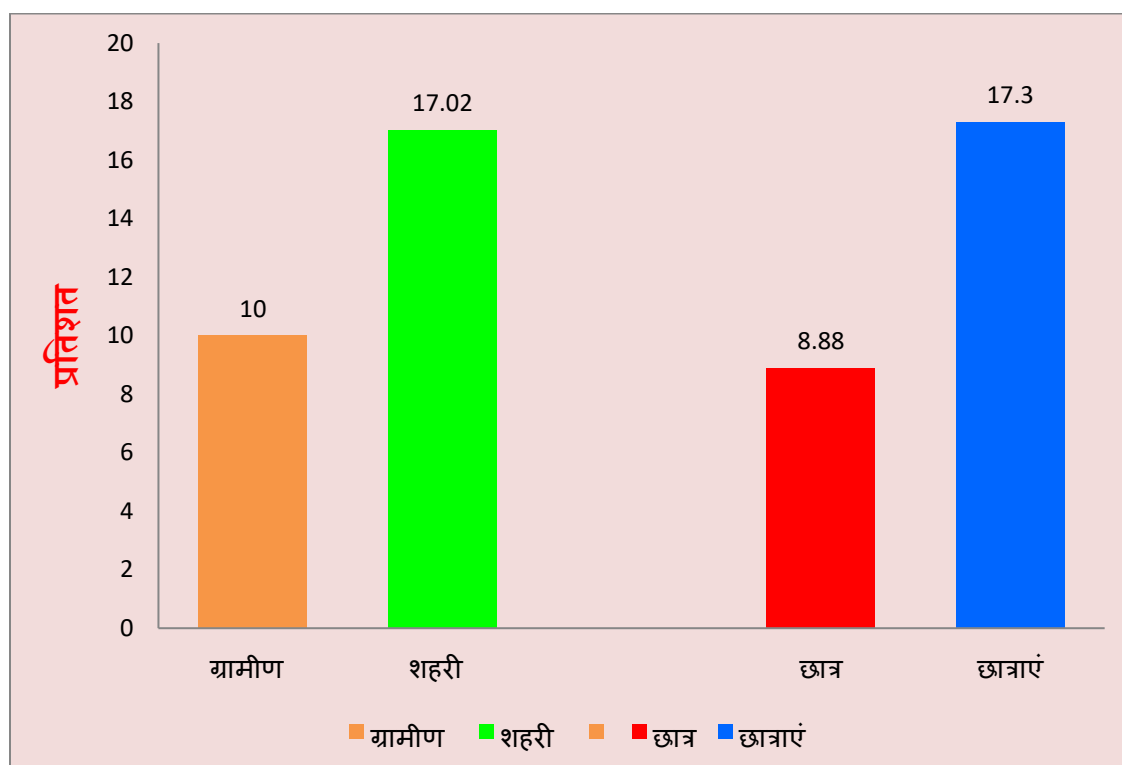
'संघर्ष' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.46

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'संघर्ष' शब्द को दसवें भाग के बराबर ग्रामीण(10) तथा दसवें भाग से अधिक शहरी (17.02) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(8.88) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(17.3) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना|

शब्द-डॉ.
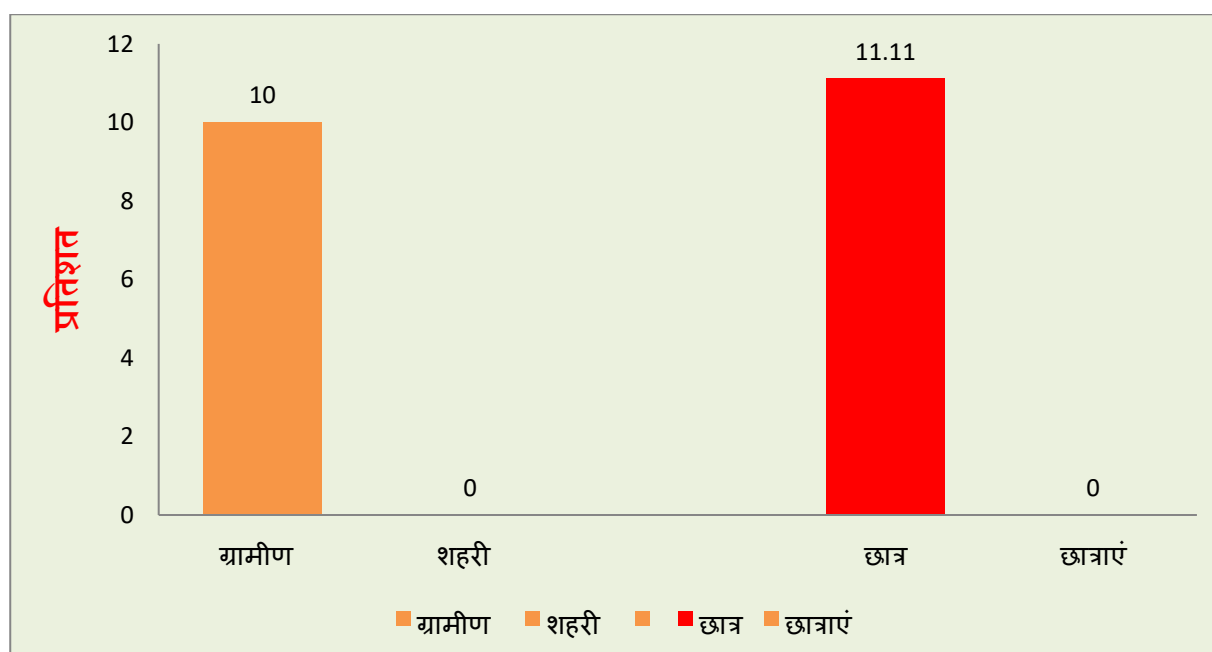
'डॉ.' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या-4.47

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'डॉ.' शब्द को लगभग दसवें भाग के बराबर ग्रामीण(10) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर पांचवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(11.11) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(0) त्रुटि की गई|

विवेचन-उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुनासिक का प्रयोग न किया जाना|

शब्द- चाहिए
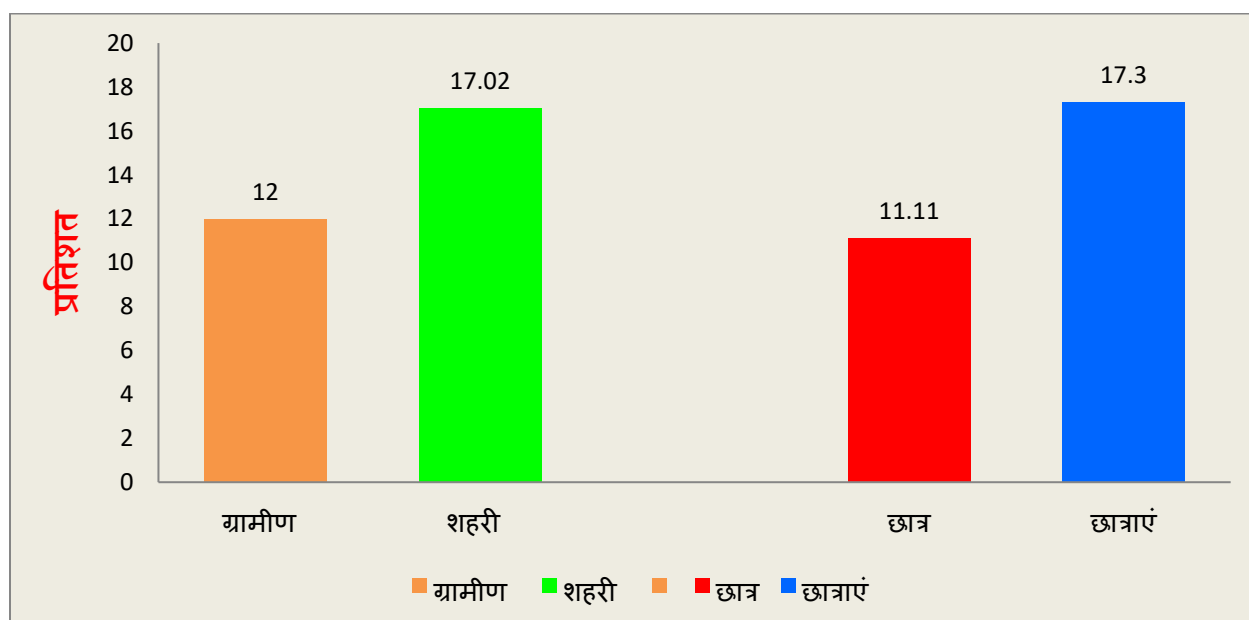
'चाहिए' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.48

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'चाहिए' शब्द को दसवें भाग से अधिक ग्रामीण(12) तथा दसवें भाग से अधिक शहरी (17.02) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(11.11) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(17.3) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'चा' के स्थान पर 'च' का प्रयोग किया जाना|

शब्द- कि
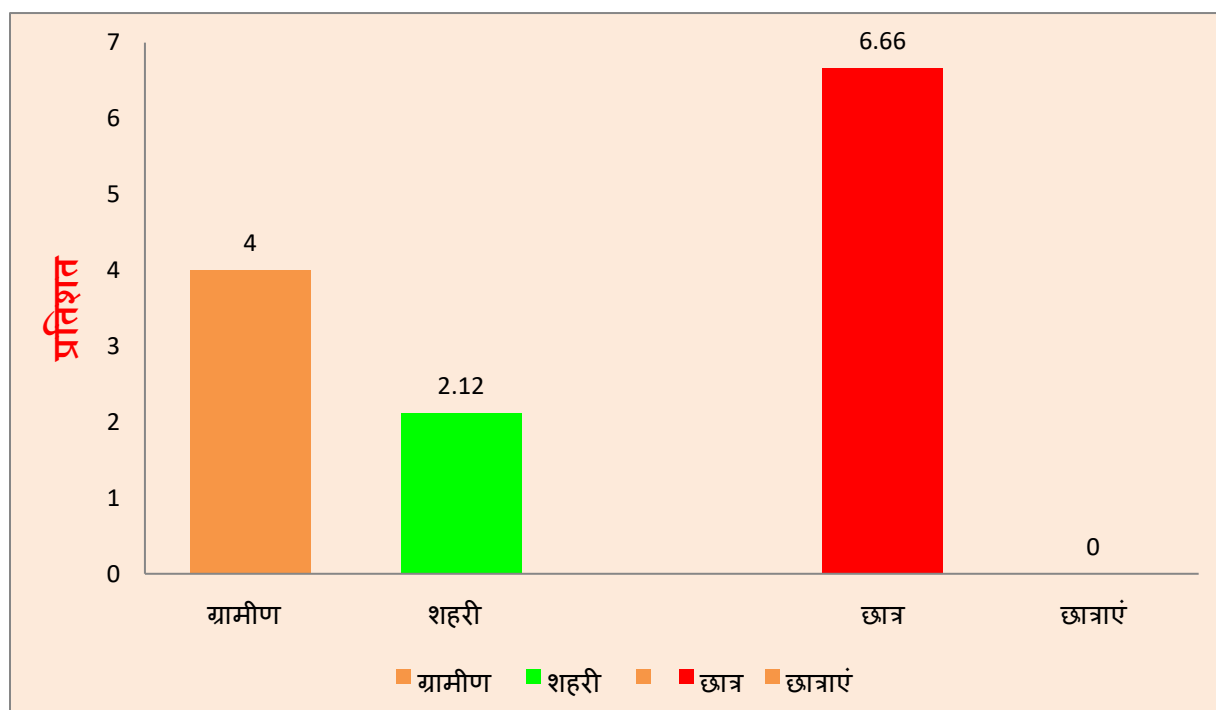
'कि' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.49

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'कि' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(4) तथा दसवें भाग से कम शहरी (2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से भी कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(6.66) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(0) कोई त्रुटि नहीं की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'कि' के स्थान पर 'की' का प्रयोग किया जाना|

शब्द- महीने
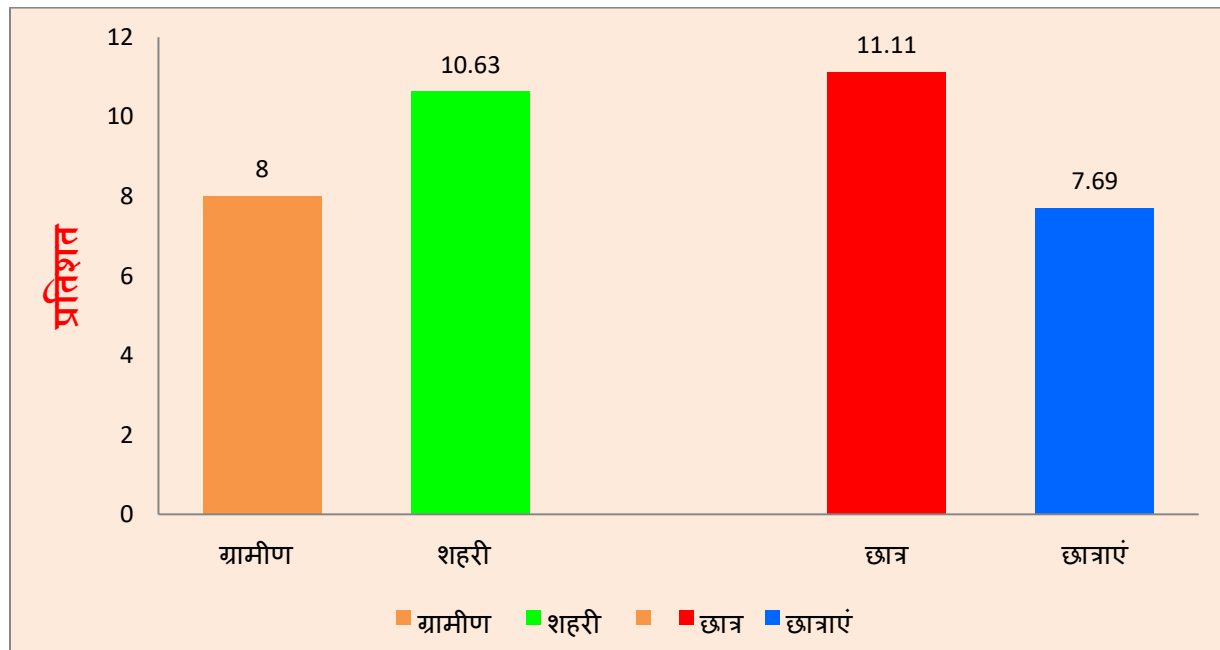
'महीने' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.50

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'महीने' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(8) तथा दसवें भाग से अधिक शहरी (10.63) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(11.11) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(7.69) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'ही' के स्थान पर 'हि' का प्रयोग किया जाना|

शब्द- भव्य
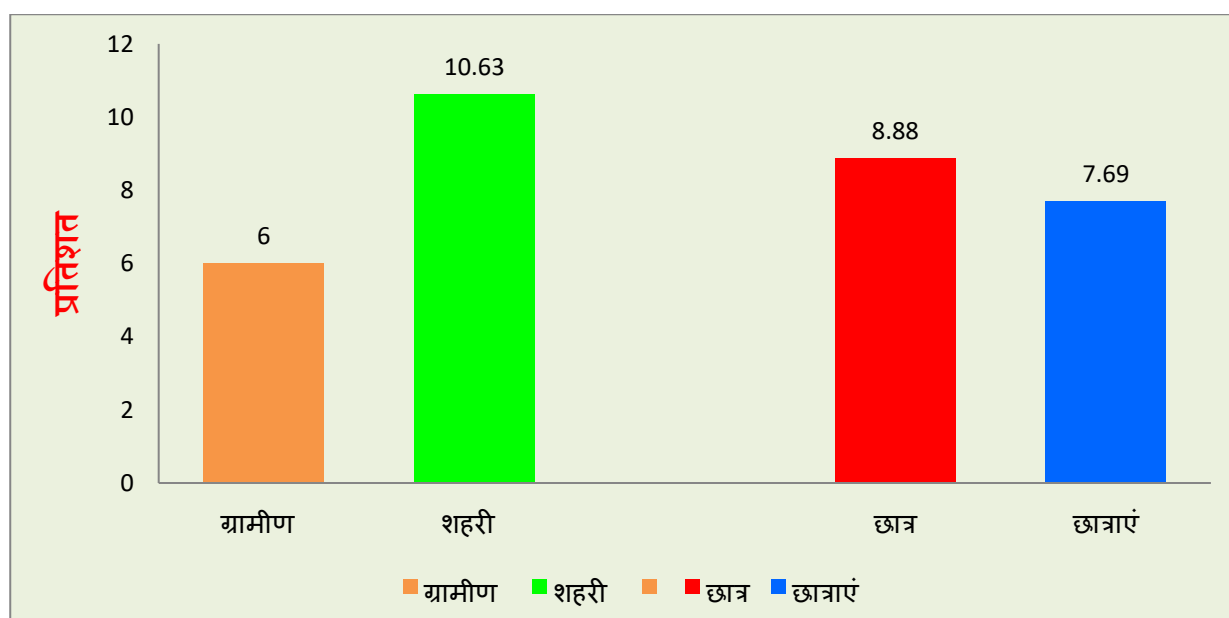
'भव्य' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.51

विश्लेषण-

- उपर्युक्त ‘भव्य’ शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(6) तथा दसवें भाग से अधिक शहरी (10.63) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(8.88) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(7.69) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) ‘भव्य’ शब्द को सही रूप में न लिखा जाना|

शब्द- मुक्ति
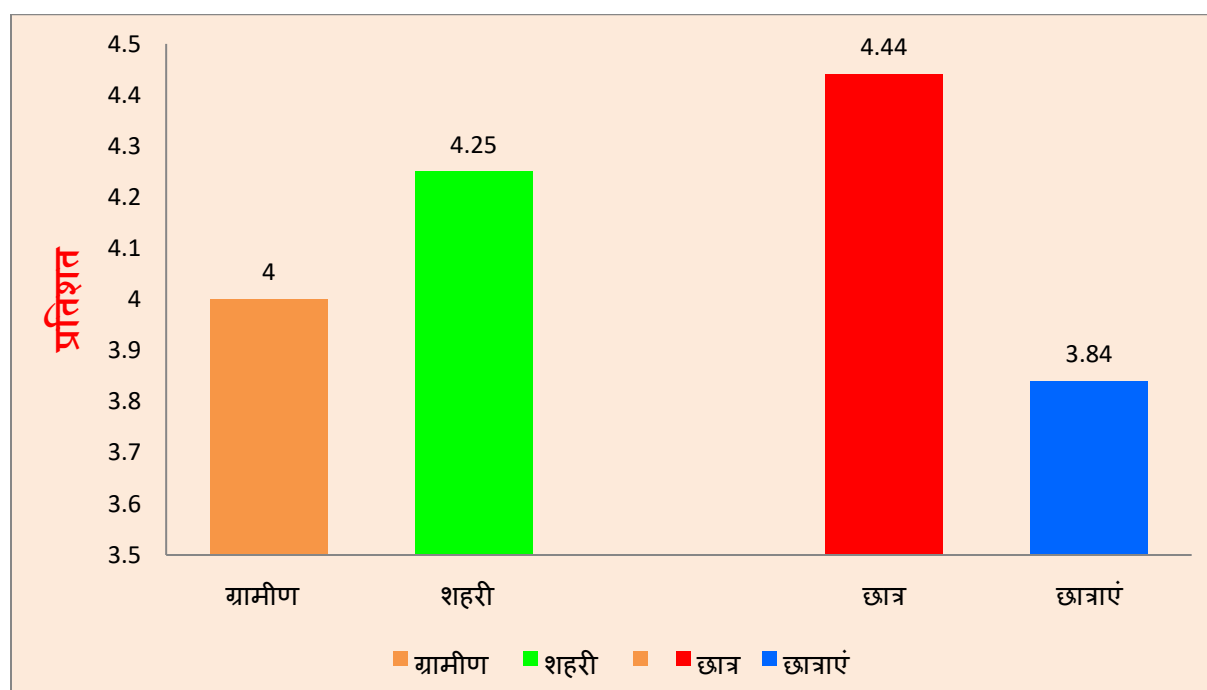
‘मुक्ति’ शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.52

विश्लेषण-

- उपर्युक्त ‘मुक्ति’ शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(4) तथा दसवें भाग से कम शहरी (4.25) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(4.44) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(3.84) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) ‘ति’ के स्थान पर ‘ती’ का प्रयोग किया जाना|

शब्द- अली
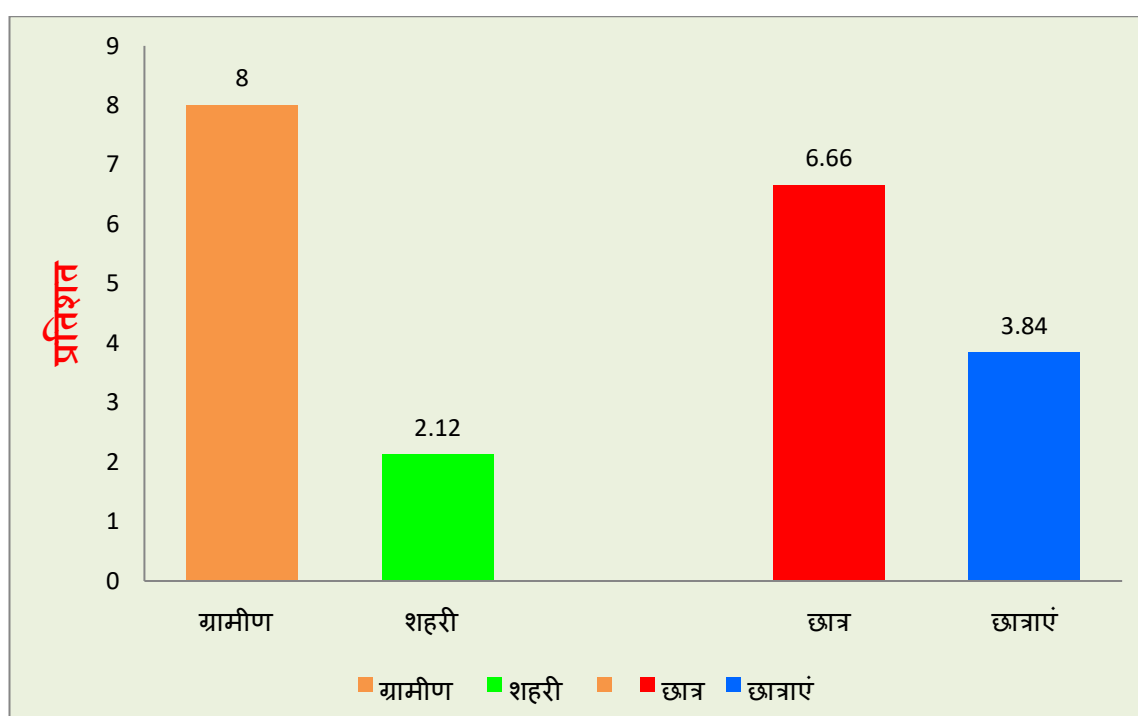
‘अली’ शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.53

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'अली' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(8) तथा दसवें भाग से कम शहरी (2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(6.66) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(3.84) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'ली' के स्थान पर 'लि' का प्रयोग किया जाना|

शब्द- असहयोग
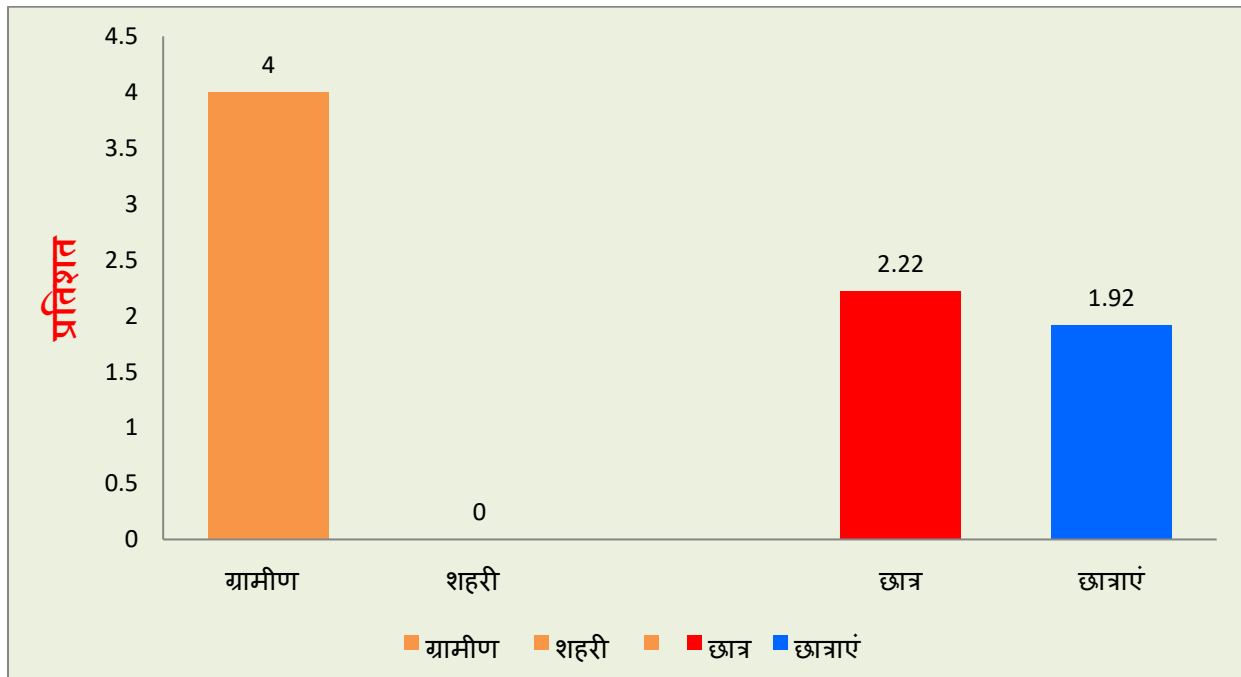
'असहयोग' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.54

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'असहयोग' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(4) तथा शून्य शहरी (0) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(1.92) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'असहयोग' शब्द को सही रूप में न लिखा जाना|

शब्द- बहुत
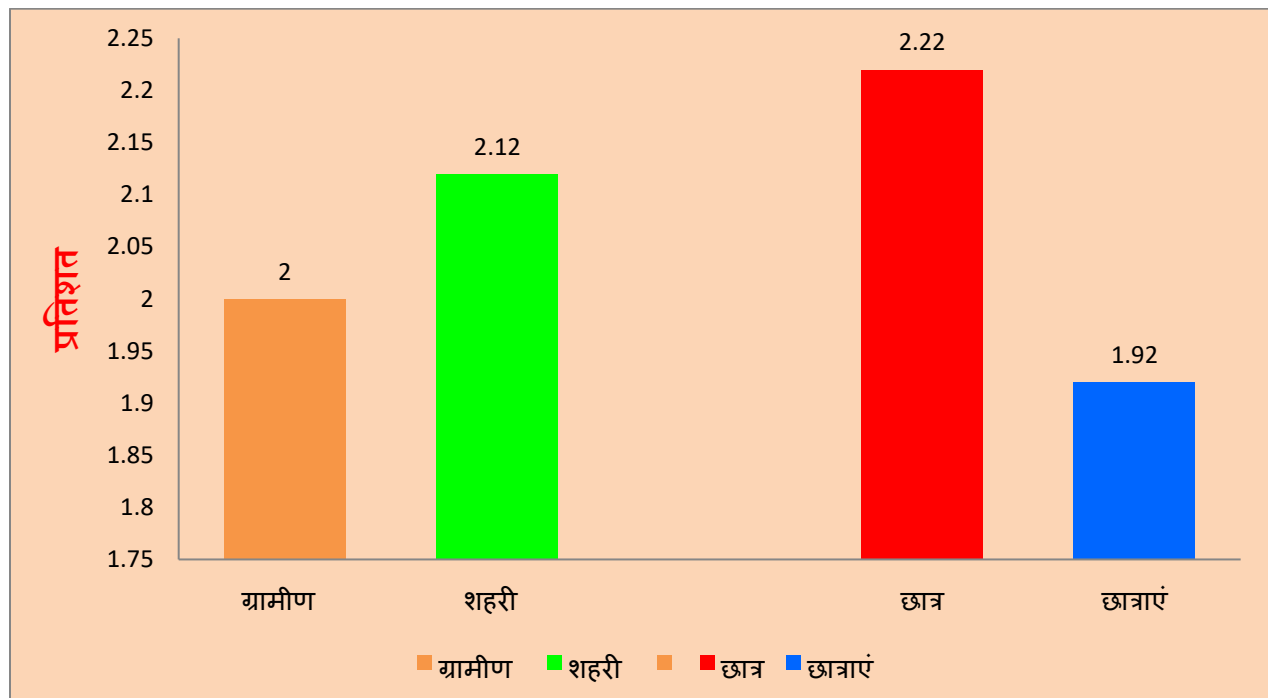
'बहुत' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.55

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'बहुत' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा दसवें भाग से कम शहरी (2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(1.92) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'ब' के स्थान पर 'व' का प्रयोग किया जाना|

शब्द- प्रेरणा
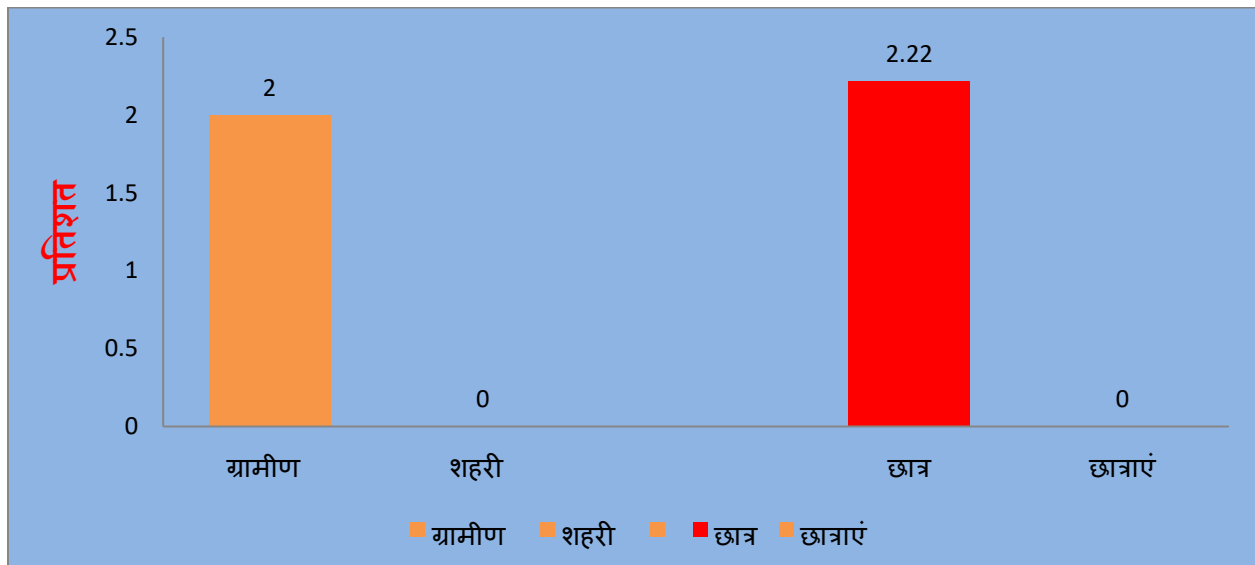
'प्रेरणा' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.56

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'प्रेरणा' शब्द को लगभग दसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(0) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'प्रेरणा' शब्द का सही रूप में नहीं लिखा जाना|

शब्द- है
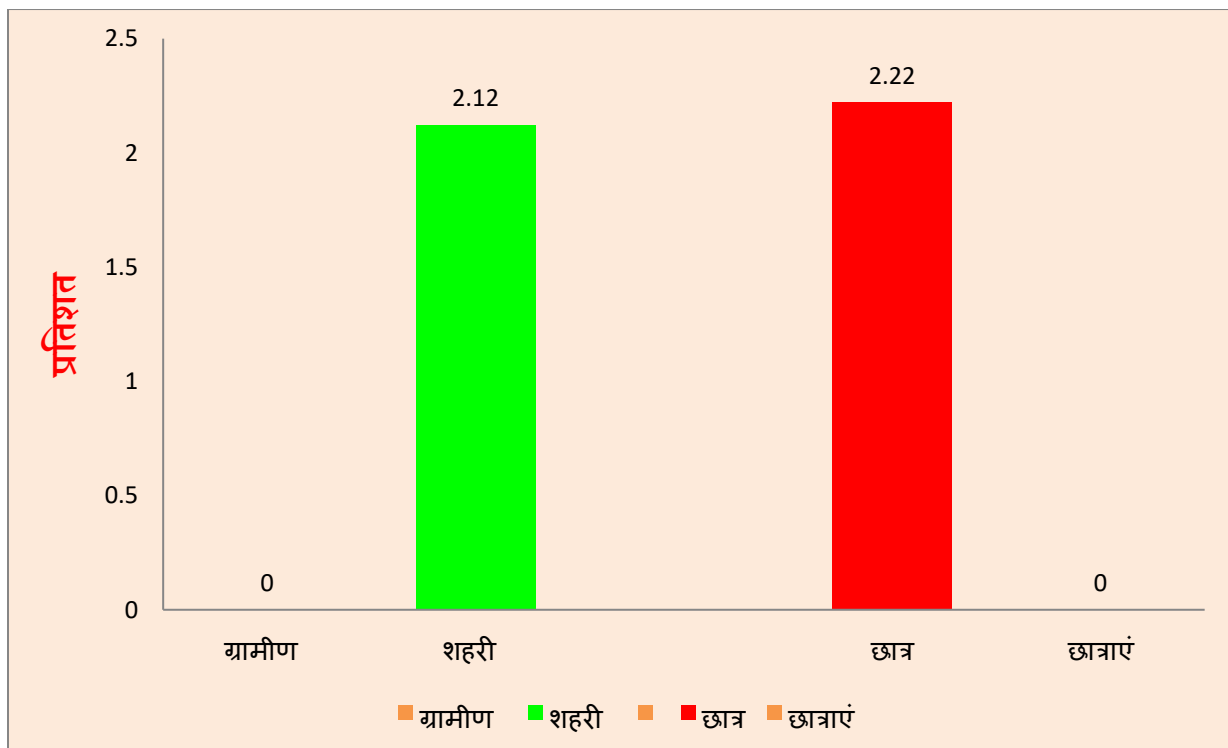
'है' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.57

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'है' शब्द को शून्य ग्रामीण(0) तथा दसवें भाग से कम शहरी(2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.20) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(0) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार (.) का प्रयोग सही रूप में नहीं किया जाना|

शब्द- ने
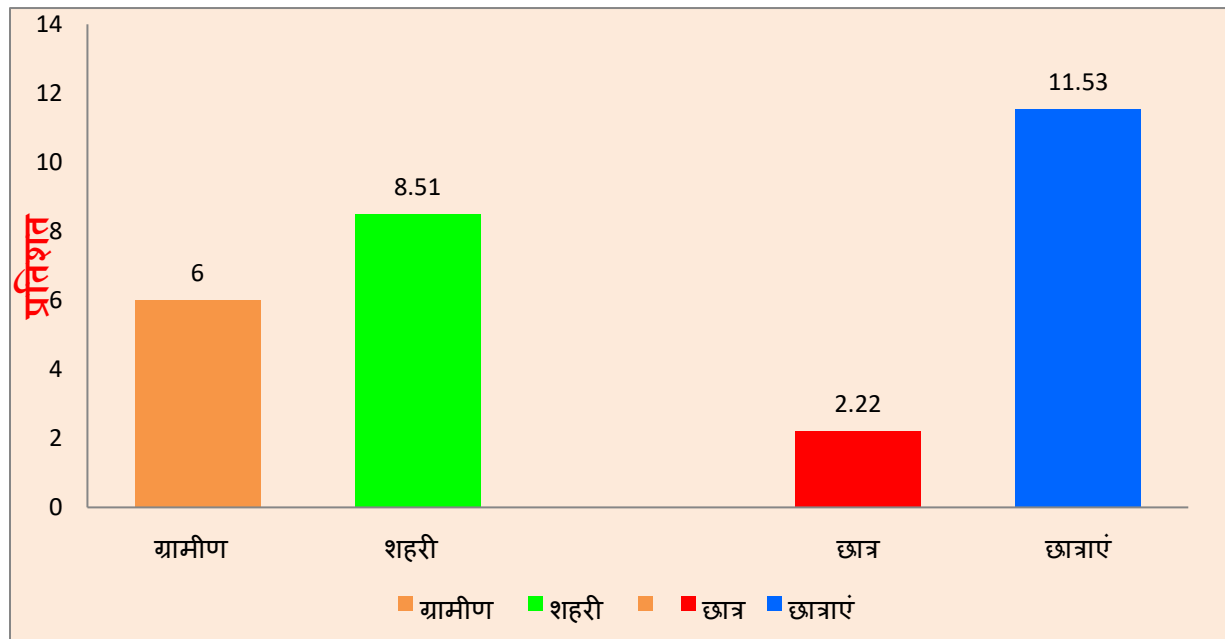
'ने' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.58

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'ने' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(6) तथा दसवें भाग से कम शहरी (8.51) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि पांचवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(11.53) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'ने' को सही रूप में नहीं लिखा गया|

शब्द- कन्धा
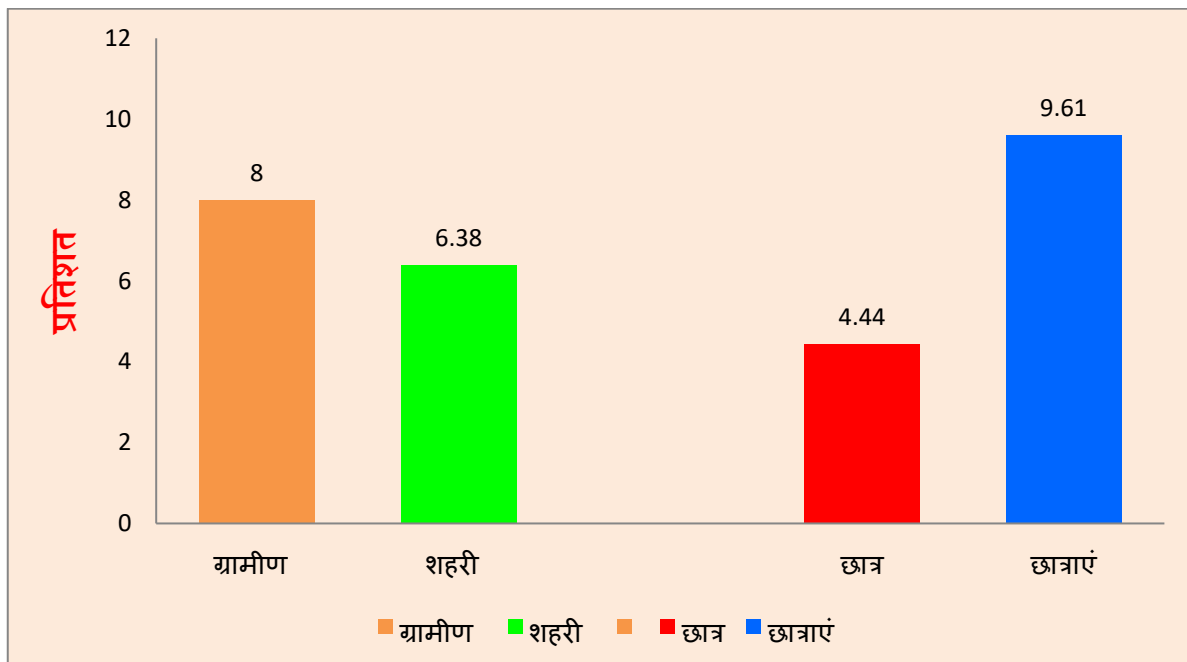
'कन्धा' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.59

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'कन्धा' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(8) तथा दसवें भाग से कम शहरी (6.38) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(4.44) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(9.61) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार का प्रयोग सही प्रकार के नहीं किया गया|

शब्द- पचहत्तरवीं
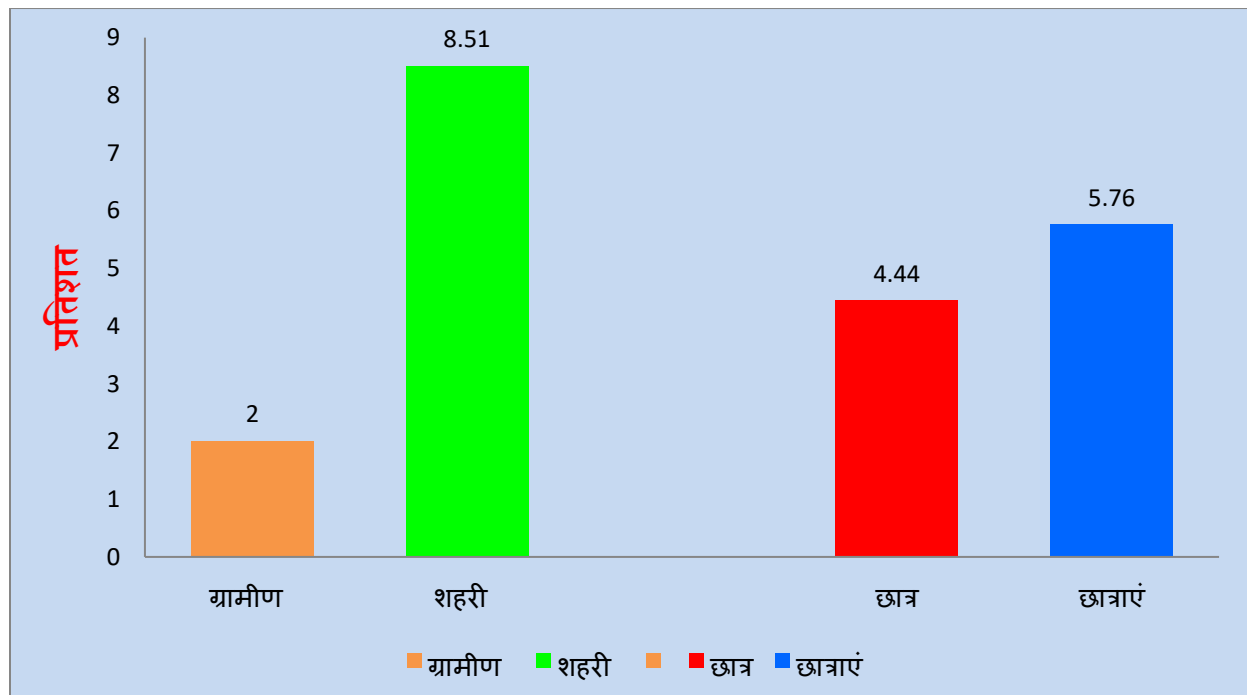
'पचहत्तरवीं' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.60

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'पचहत्तरवीं' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा दसवें भाग से कम शहरी (8.51) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(4.44) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(5.76) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार का प्रयोग सही प्रकार के नहीं किया गया|

(ब) शब्द को ठीक रूप में नहीं लिखा गया|

शब्द- मनाने
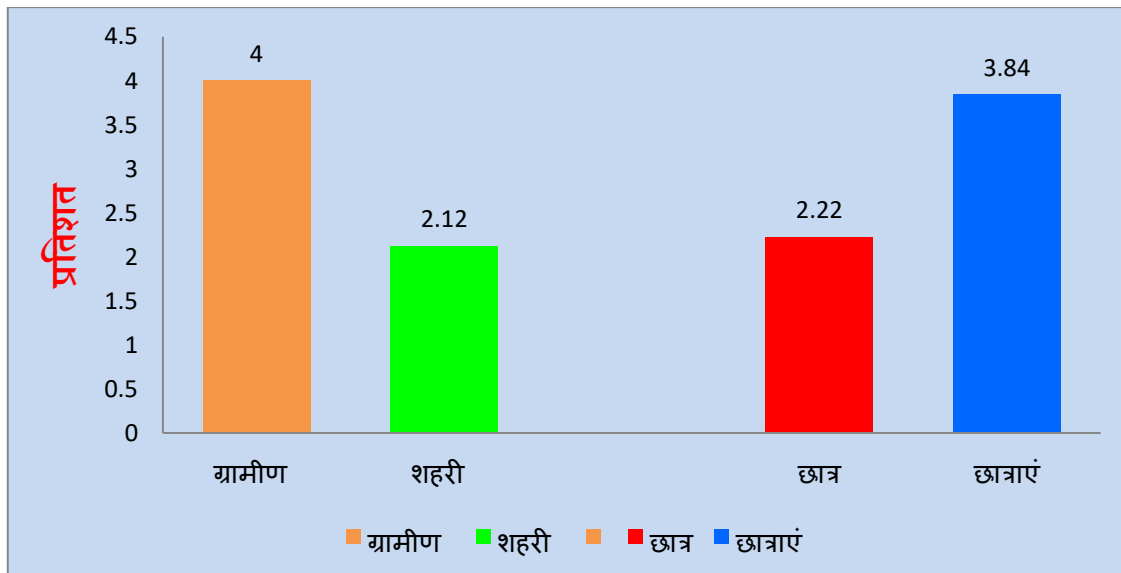
'मनाने' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.61

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'मनाने' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(4) तथा दसवें भाग से कम शहरी (2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(3.84) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'म' के स्थान पर 'ब' का प्रयोग किया गया|

शब्द- कोने
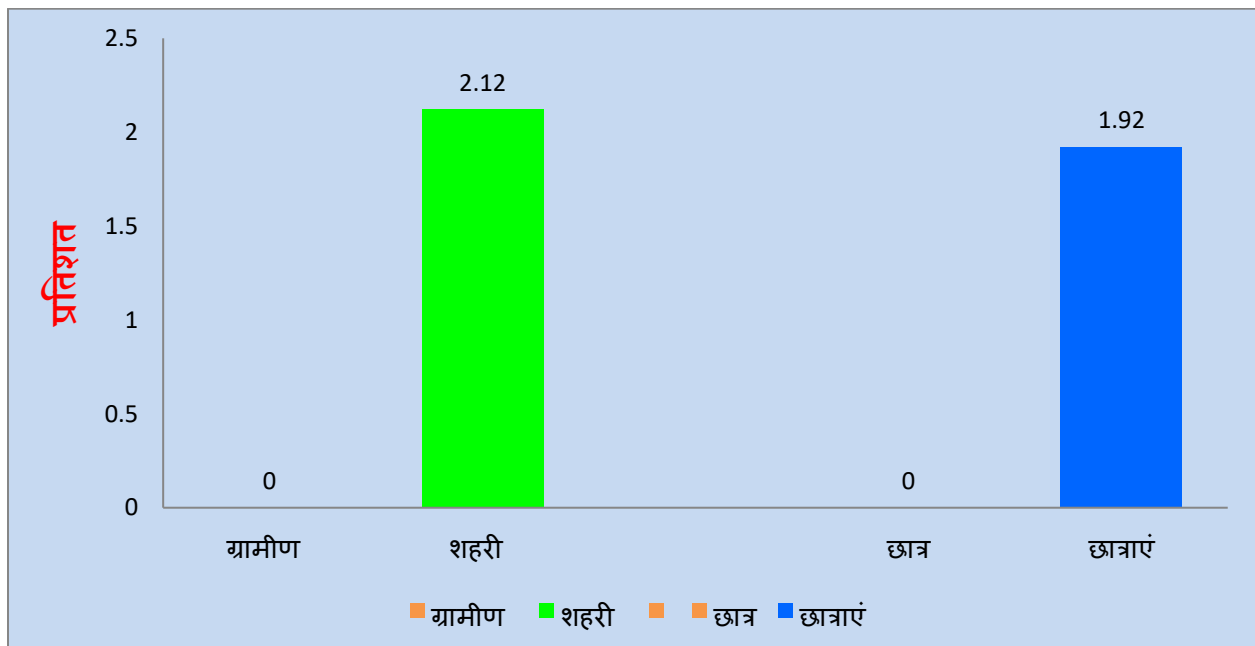
'कोने' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.62

विश्लेषण-

- उपर्युक्त ‘कोने’ शब्द को शून्य ग्रामीण(0) तथा दसवें भाग से कम शहरी(2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा शून्य (0) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा दसवें भाग से भी कम(1.92) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) ‘ने’ के स्थान पर ‘नो’ का प्रयोग किया जाना|

शब्द- प्रारम्भ
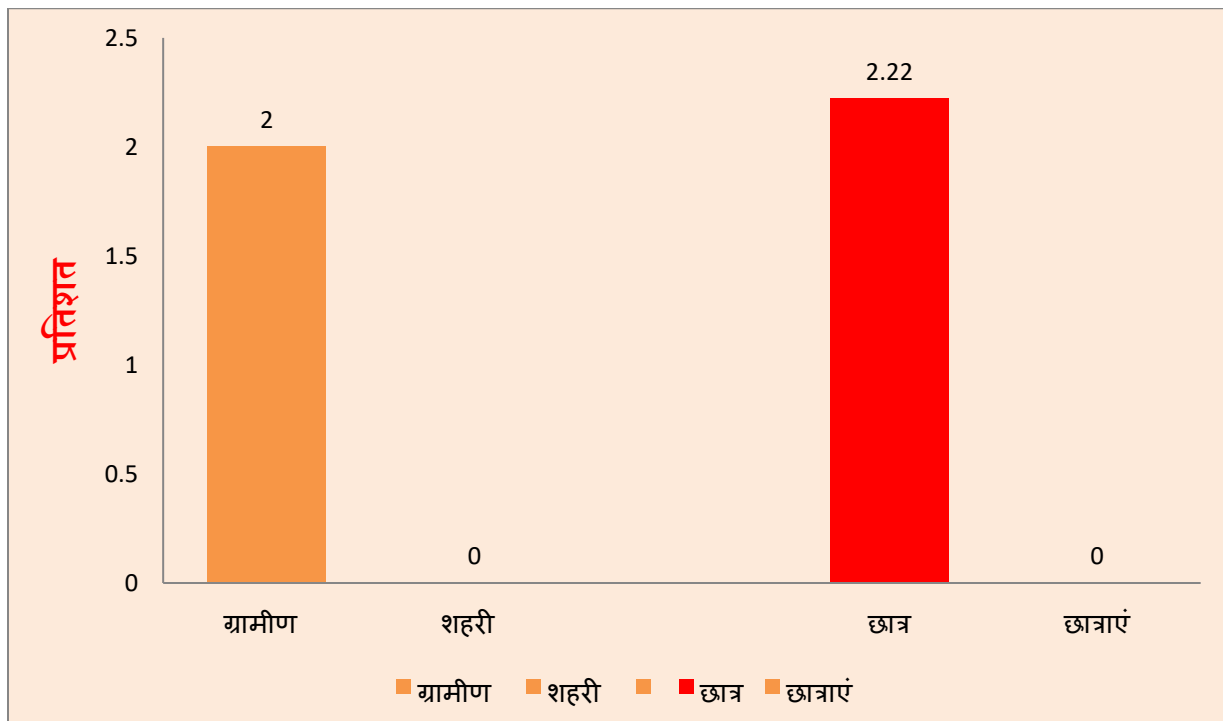
‘प्रारम्भ’ शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.63

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'प्रारम्भ' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा शून्य(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा शून्य(0) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार (.) का प्रयोग सही रूप में नहीं किया जाना|

शब्द- झेलते
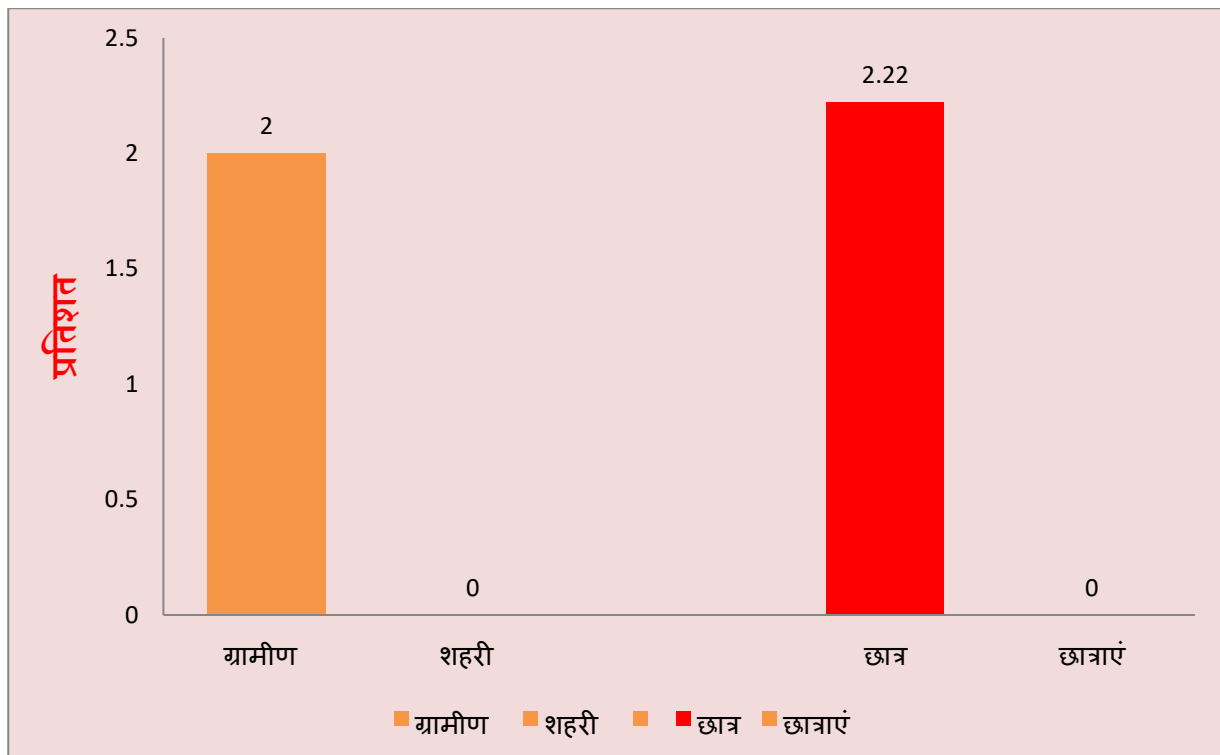
'झेलते' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.64

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'झेलते' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा शून्य(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा शून्य(0) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'झ' को 'म' के रूप में लिखा जाना ।

शब्द- सत्ता
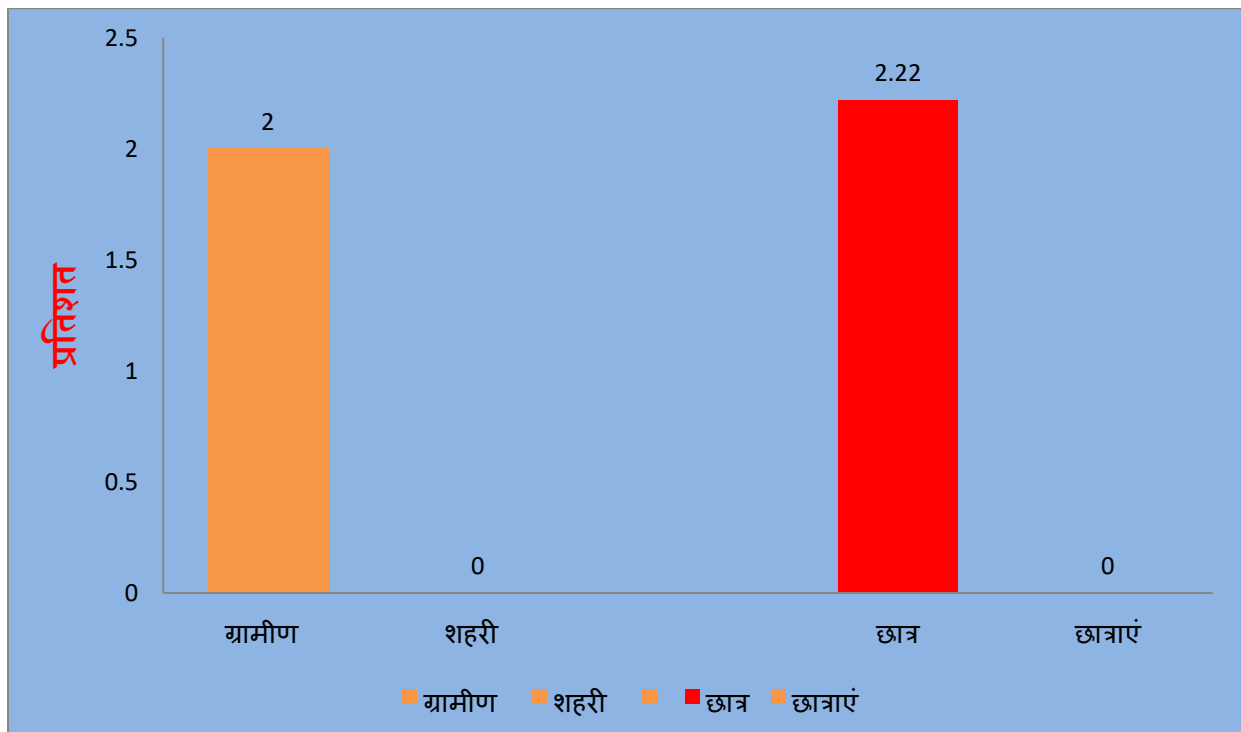
'सत्ता' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.65

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'सत्ता' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा शून्य(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा शून्य(0) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'त' को 'क' के रूप में लिखा जाना|

शब्द- स्वतन्त्रता
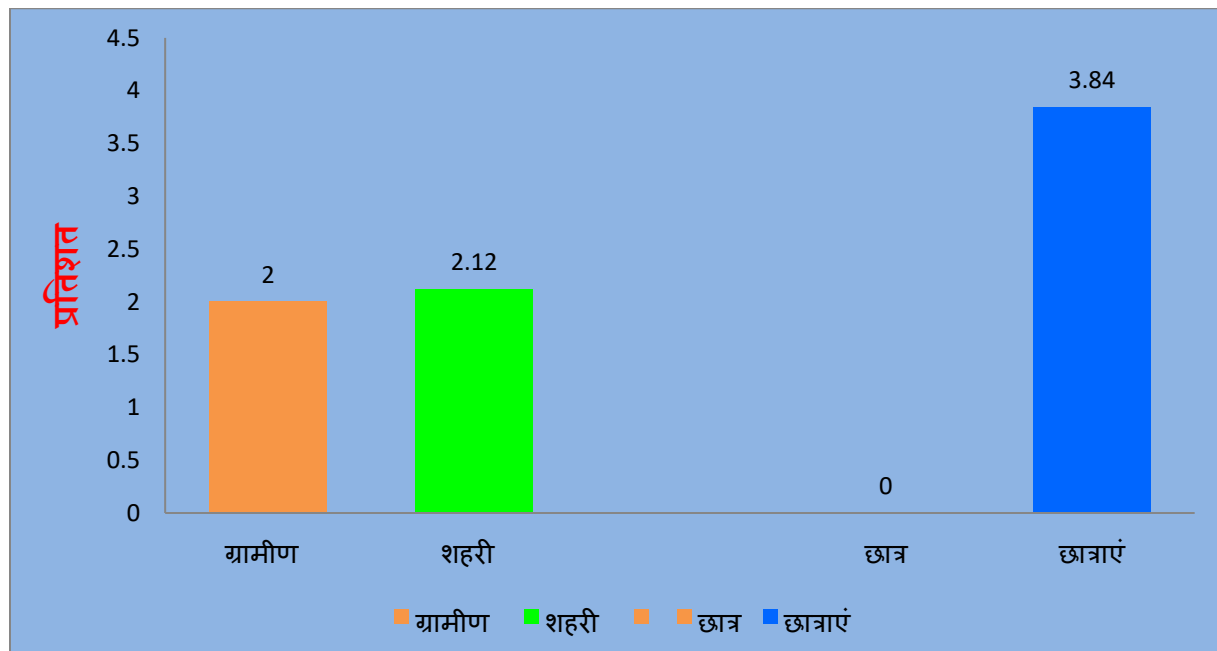
'स्वतन्त्रता' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.66

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'स्वतन्त्रता' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा दसवें भाग से ही कम शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा(2.12) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा शून्य(0) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा दसवें भाग से कम(3.84) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अतिरिक्त अनुस्वार(.) का प्रयोग किया जाना|

शब्द- सहज
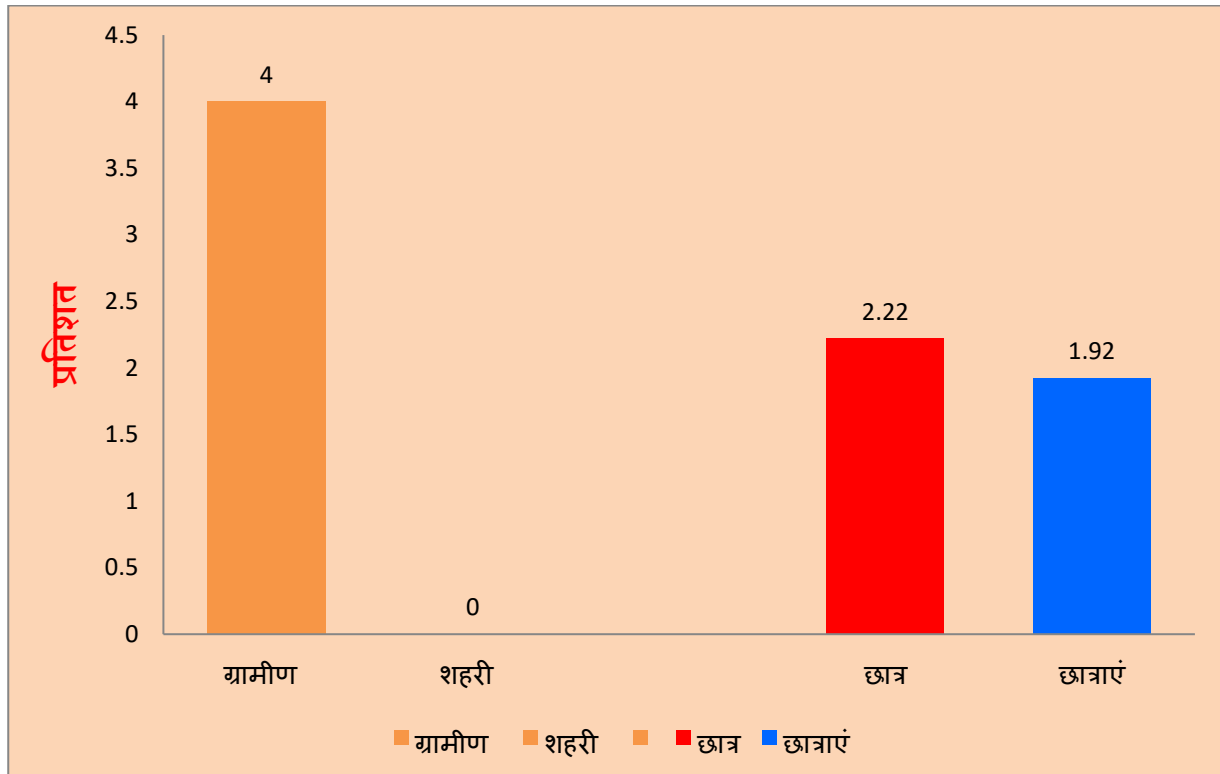
'सहज' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.67

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'सहज' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(4) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा शून्य(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा दसवें भाग से कम(2.22) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा दसवें भाग से कम(1.92) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'स' के स्थान पर 'श' का प्रयोग किया जाना|

शब्द- तपस्या
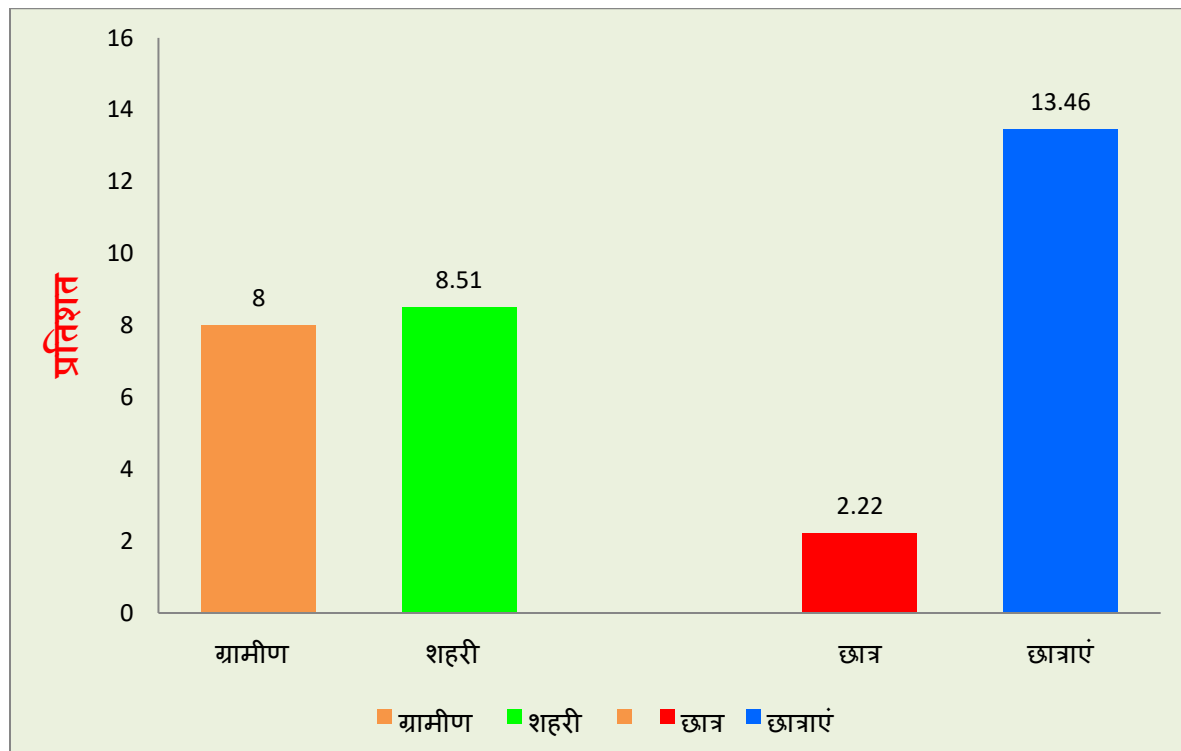
'तपस्या' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.68

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'तपस्या' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(8) तथा दसवें भाग से कम शहरी (8.51) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि पांचवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(13.46) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'स' के स्थान पर 'श' का प्रयोग किया गया|

शब्द- संकल्पित
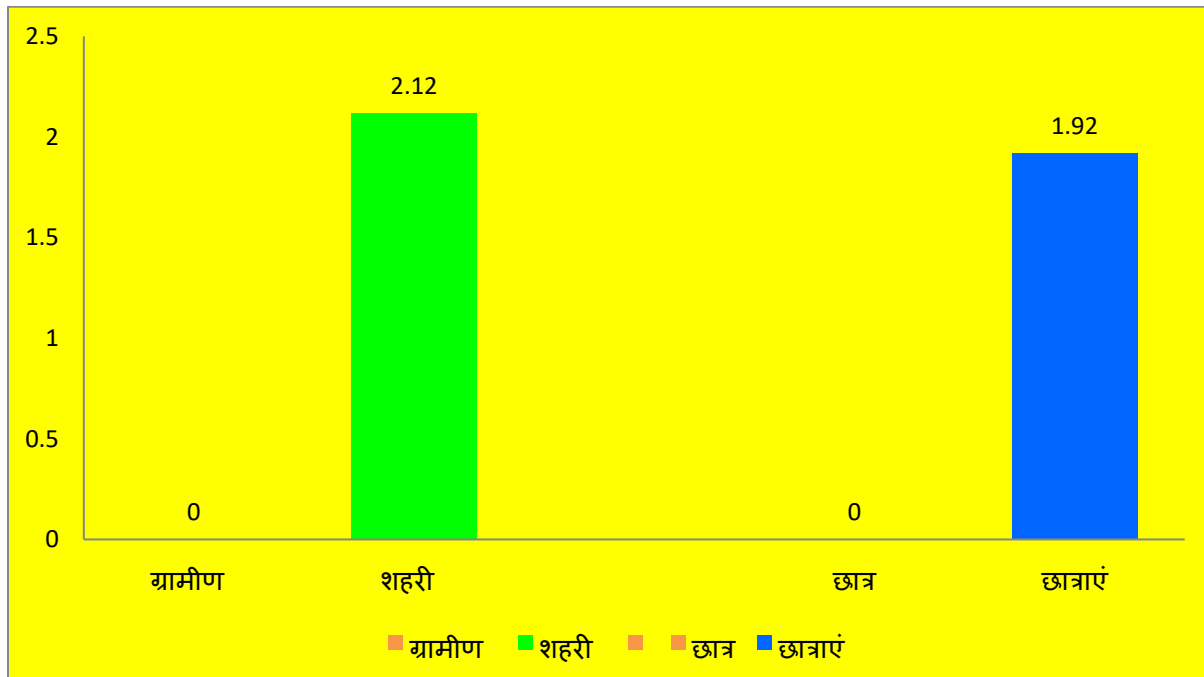
'संकल्पित' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.69

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'संकल्पित' शब्द को शून्य ग्रामीण(0) तथा दसवें भाग से कम शहरी(2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा शून्य (0) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा दसवें भाग से भी कम(1.92) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार(.) का प्रयोग न किया जाना| |

शब्द- दिया
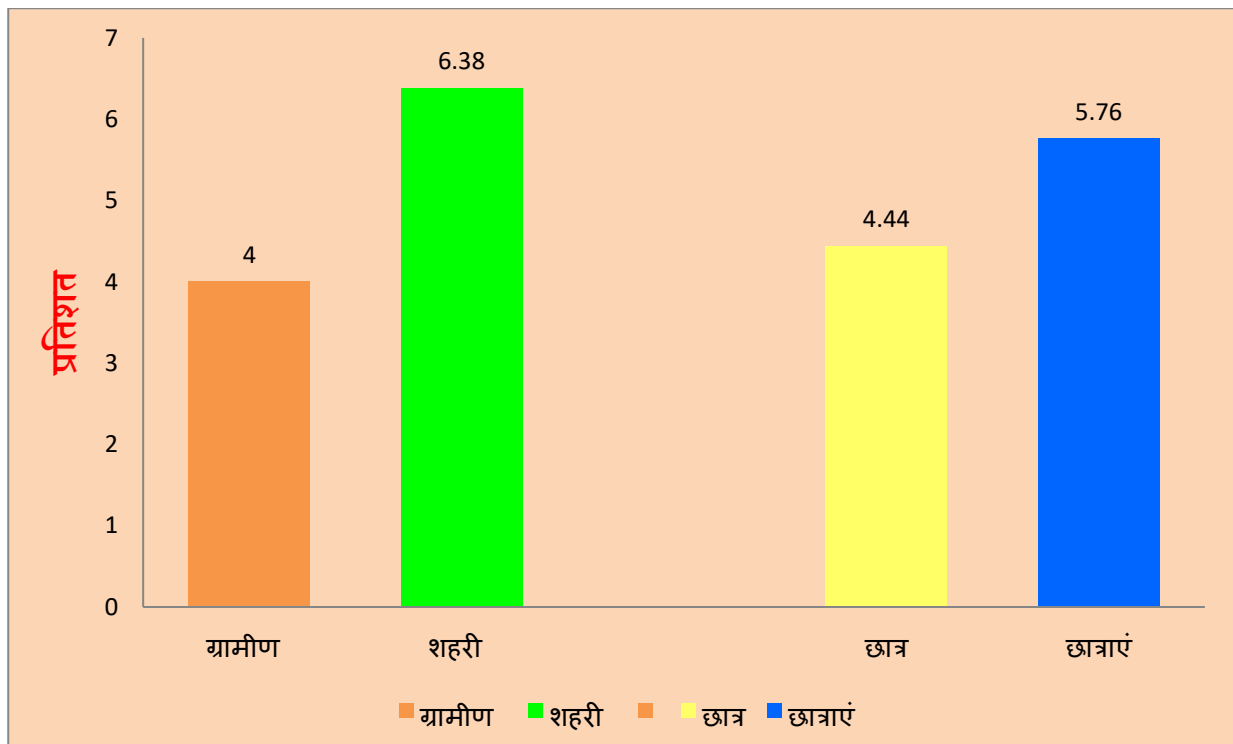
'दिया' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.70

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'दिया' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(4) तथा दसवें भाग से कम शहरी (6.38) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(4.44) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(5.76) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'द' के स्थान पर 'ल' का प्रयोग किया गया|

शब्द- आजादी
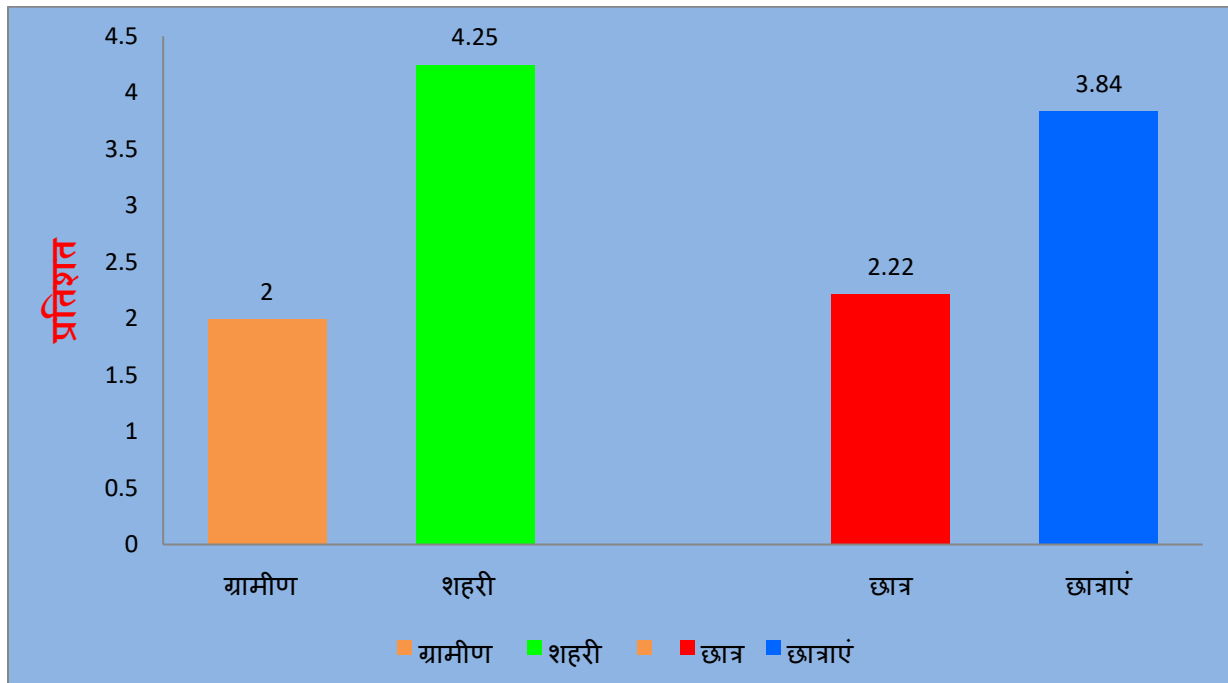
'आजादी' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.71

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'आजादी' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा दसवें भाग से कम शहरी (4.25) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(3.84) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'द' के स्थान पर 'ल' का प्रयोग किया गया|

शब्द- भारतीय
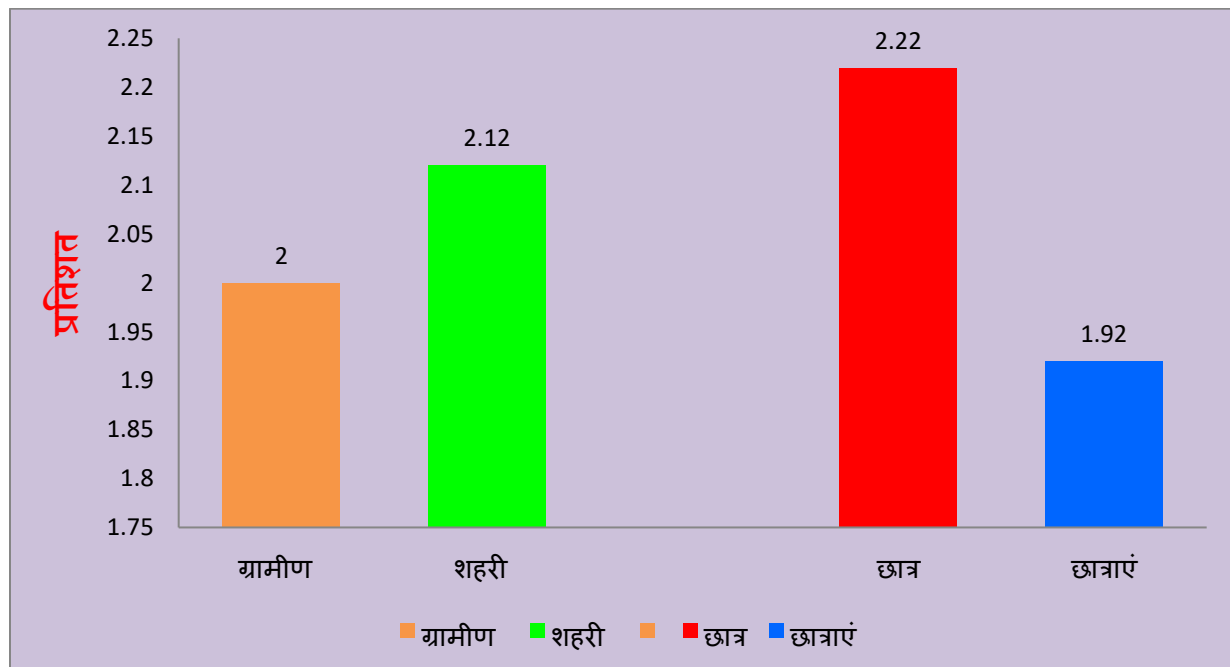
'भारतीय' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.72

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'भारतीय' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा दसवें भाग से कम शहरी (2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(1.92) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'ती' के स्थान पर 'ति' का प्रयोग किया गया|

शब्द- महीना
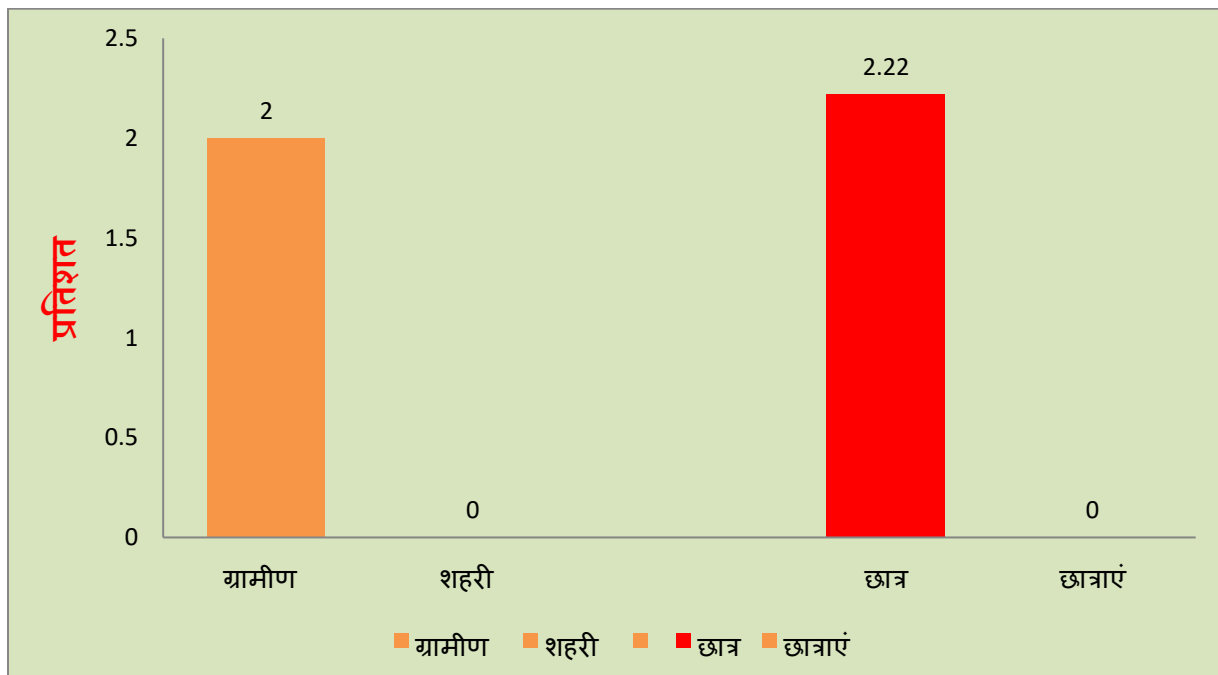
'महीना' (2) शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.73

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'महीना' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा शून्य(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(2.22) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा शून्य(0) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'ही' को 'हि' के रूप में लिखा जाना|

शब्द- मेहर
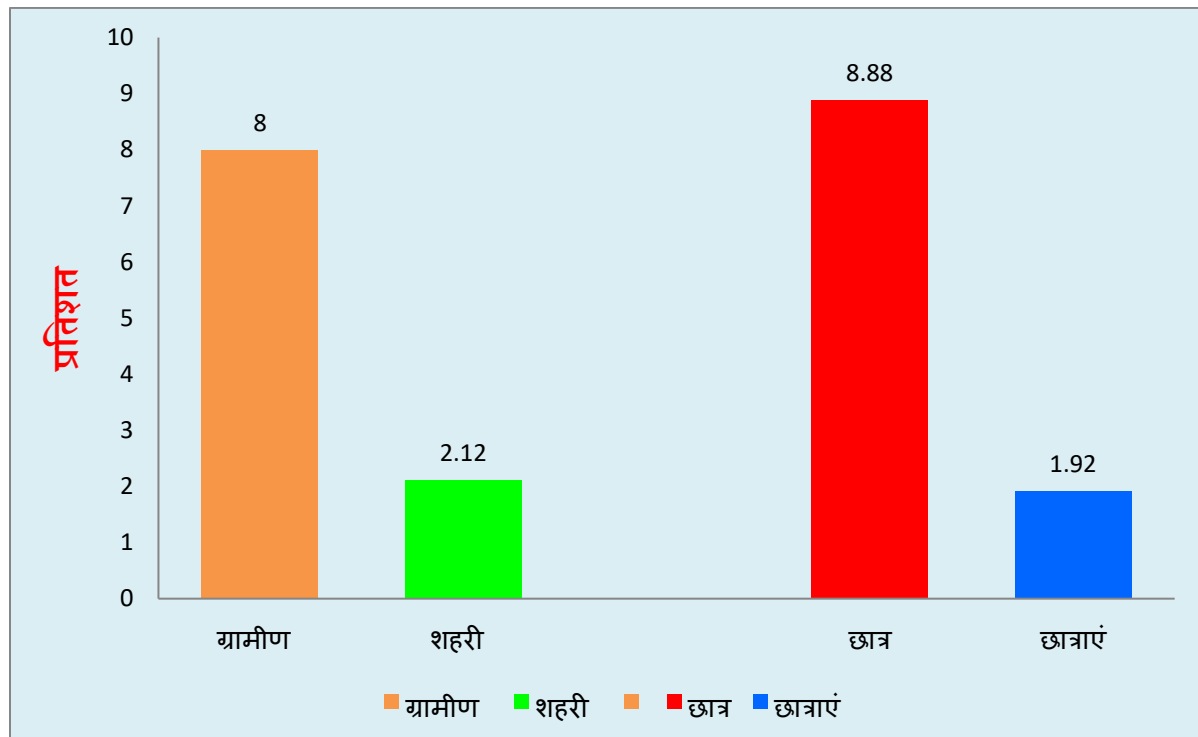
'मेहर' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.74

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'मेहर' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(8) तथा दसवें भाग से कम शहरी (2.12) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(8.88) त्रुटि की गई जबकि दसवें भाग से कम प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(1.92) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'मे' के स्थान पर 'म' का प्रयोग किया गया|

शब्द- में(2)
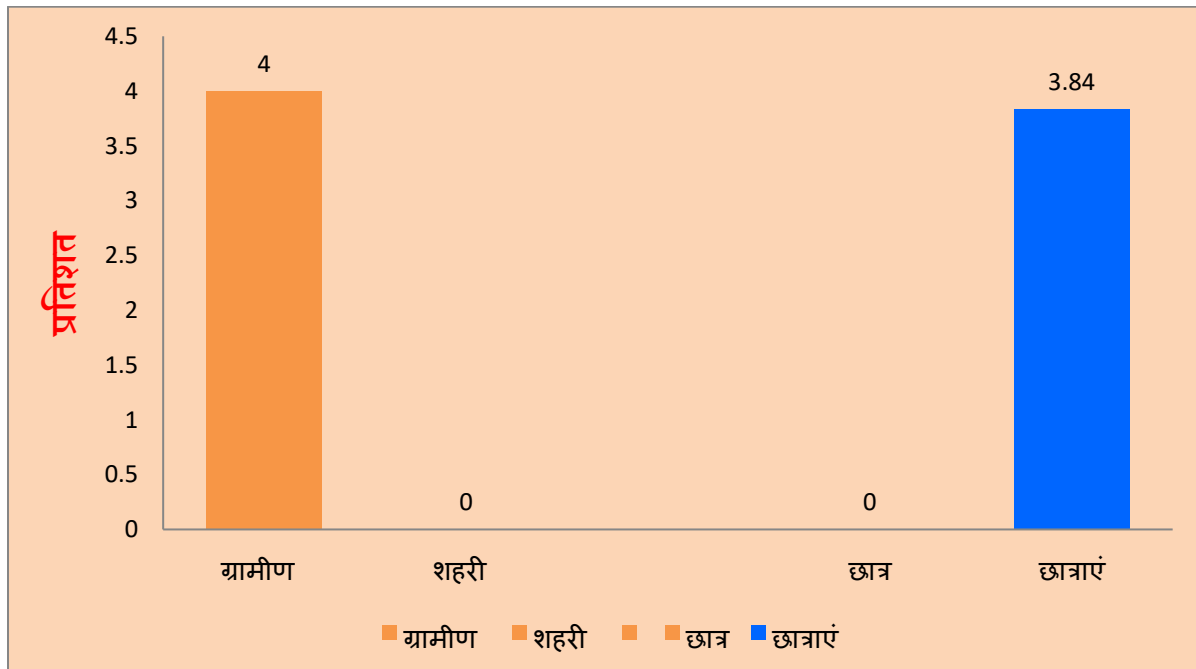
'में' (2) शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.75

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'में'(2) शब्द को ग्रामीण(4) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा शून्य(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा शून्य (0) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा दसवें भाग से भी कम(3.84) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) अनुस्वार (.) का प्रयोग नहीं किया गया| |

शब्द- की
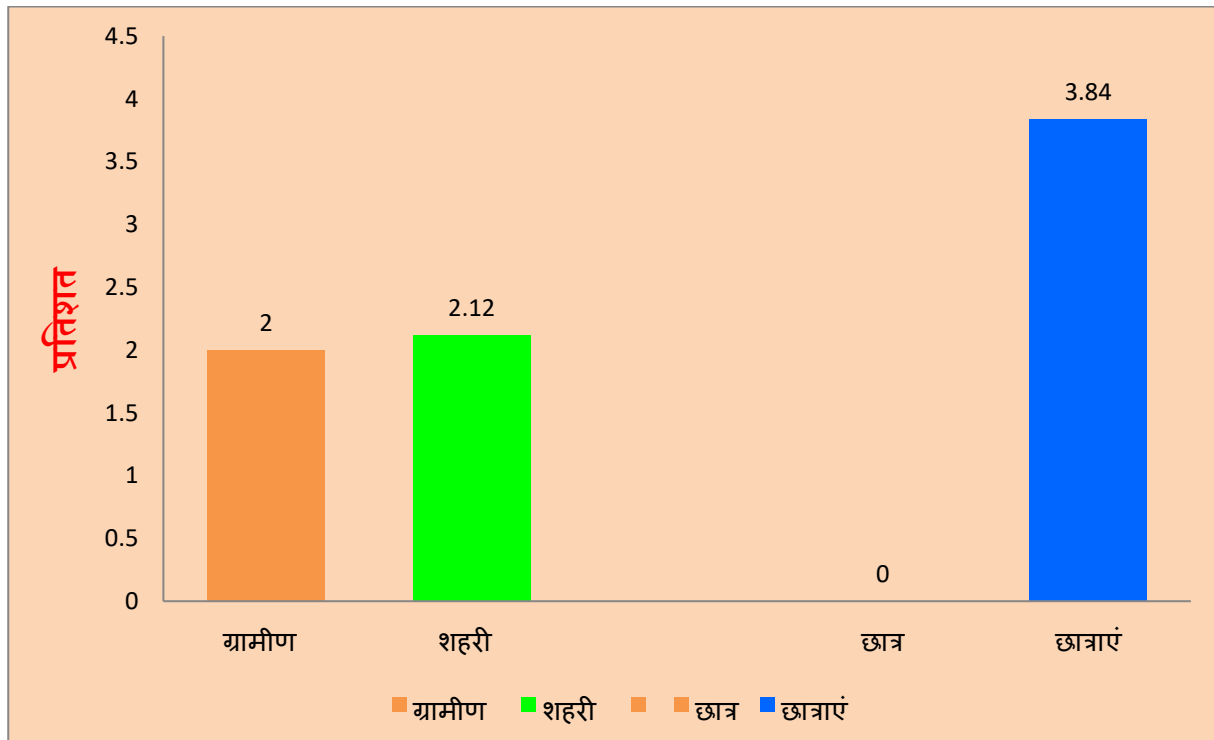
'की' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.76

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'स्वतन्त्रता' शब्द को दसवें भाग से कम ग्रामीण(2) तथा दसवें भाग से ही कम शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा(2.12) अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा शून्य(0) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा दसवें भाग से कम(3.84) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'की' से स्थान पर कि का प्रयोग किया गया||

शब्द- की(2)
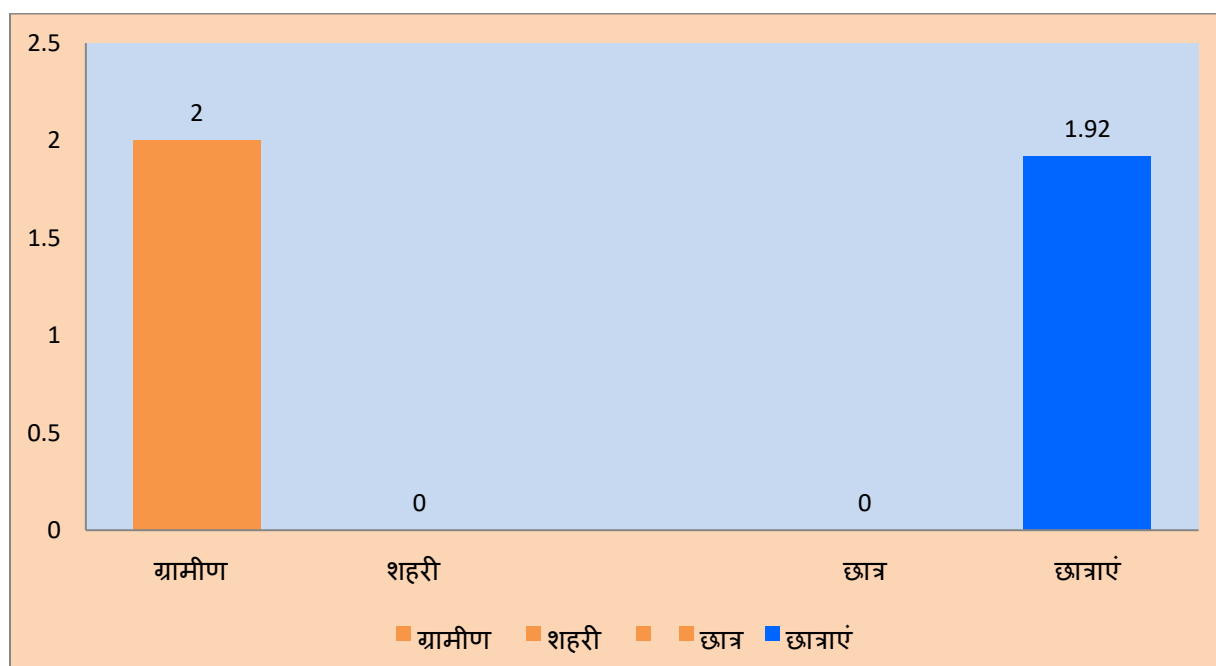
'की' (2) शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.77

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'की'(2) शब्द को ग्रामीण(2) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा शून्य(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|

- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा शून्य (0) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा दसवें भाग से भी कम(1.92) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'की' के स्थान पर 'कि' का प्रयोग किया गया |

शब्द- आजाद
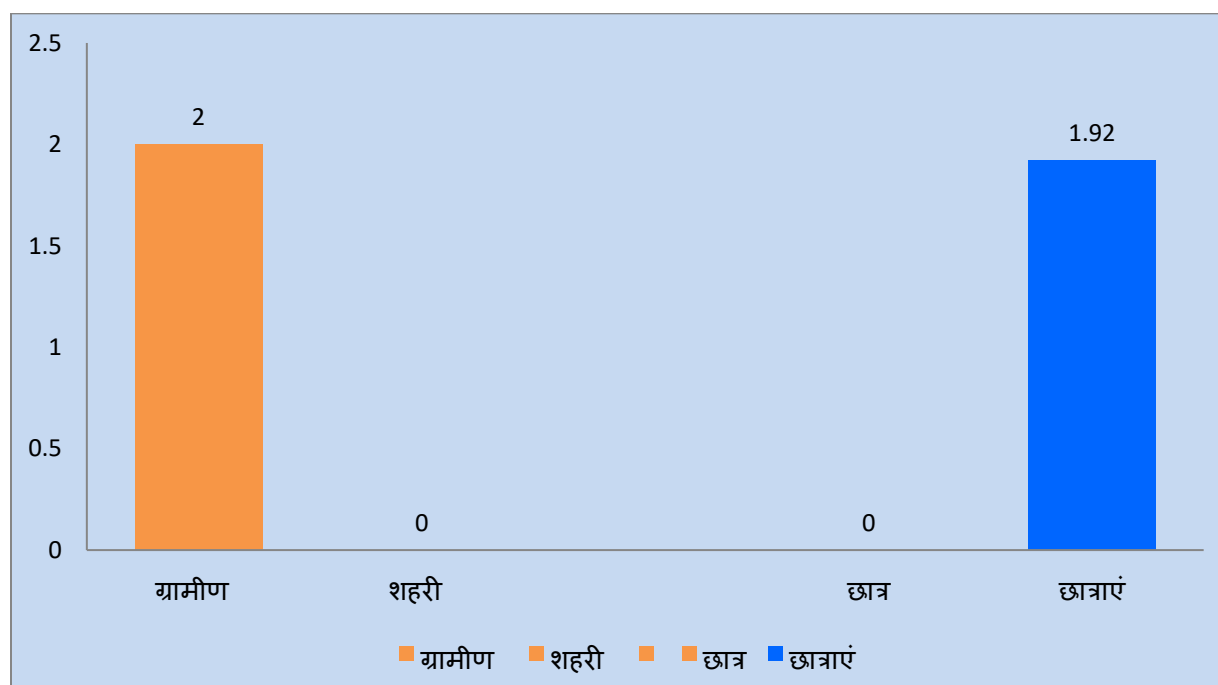
'आजाद' शब्द के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.78

विश्लेषण-

- उपर्युक्त 'आजाद' शब्द को ग्रामीण(2) तथा शहरी प्रशिक्षुओं द्वारा शून्य(0) अशुद्ध रूप में लिखा गया|

- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा शून्य (0) त्रुटि की गई जबकि प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा दसवें भाग से भी कम(1.92) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूपमें दृष्टिगोचर होती है-

(अ) 'आ' के स्थान पर 'अ' का प्रयोग किया गया|

विराम चिहन- (|)
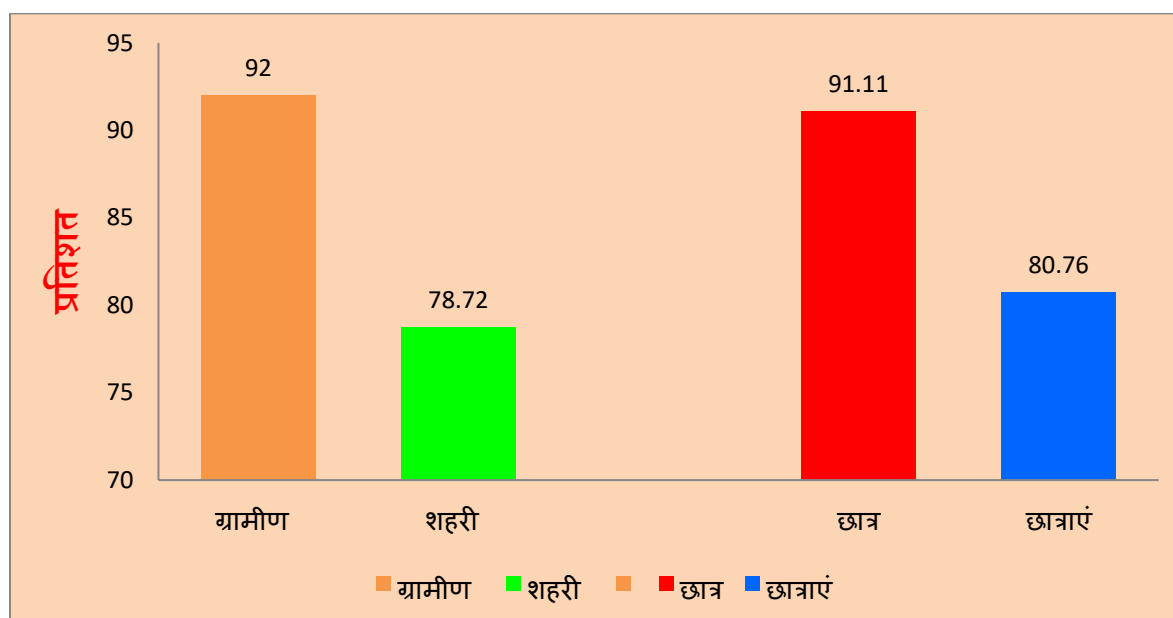
विराम चिहन (|) के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.79

विश्लेषण-

- उपर्युक्त विराम चिहन (|) को नब्बे प्रतिशत से अधिक ग्रामीण(92) तथा 75 प्रतिशत से अधिक शहरी (78.72) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|

- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर नब्बे प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(91.11) त्रुटि की गई जबकि लगभग अस्सी प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(80.76) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) '|' के स्थान पर ',' का प्रयोग किया गया|
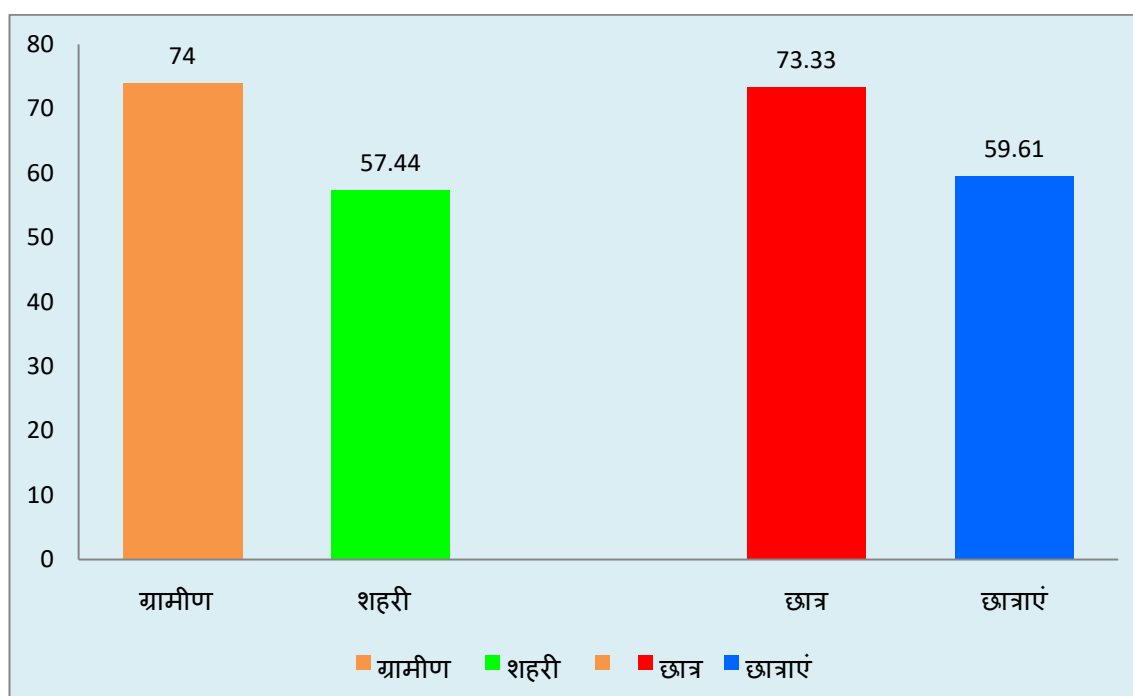
विराम चिहन- (|) 2

विराम चिहन (|) (2) के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.80

विश्लेषण-

- उपर्युक्त विराम चिहन (|) को सत्तर प्रतिशत से अधिक ग्रामीण (74) तथा आधे से अधिक से अधिक शहरी (57.44) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर सत्तर प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(73.33) त्रुटि की गई जबकि लगभग आधे से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(59.61) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) '|' के स्थान पर ',' का प्रयोग किया गया|
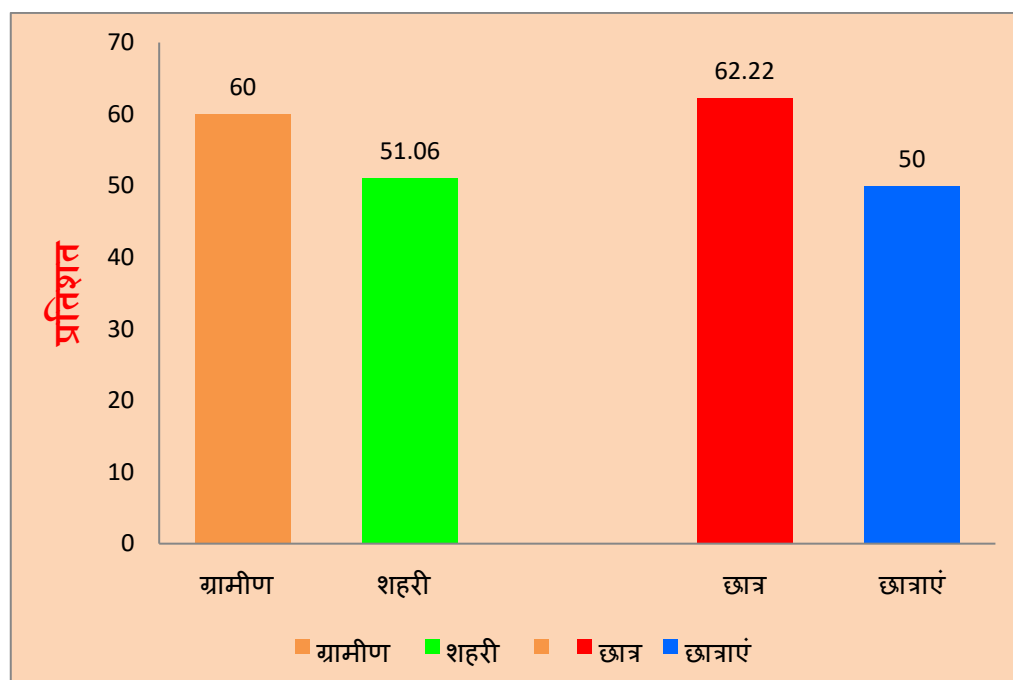
विराम चिहन (|) 3

विराम चिहन (|) (3) के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.81

विश्लेषण-

- उपर्युक्त विराम चिहन (|) को साठ प्रतिशत ग्रामीण (60) तथा आधे से अधिक से अधिक शहरी (51.06) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर साठ प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(62.22) त्रुटि की गई जबकि आधे प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(50) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) '|' के स्थान पर ',' का प्रयोग किया गया|
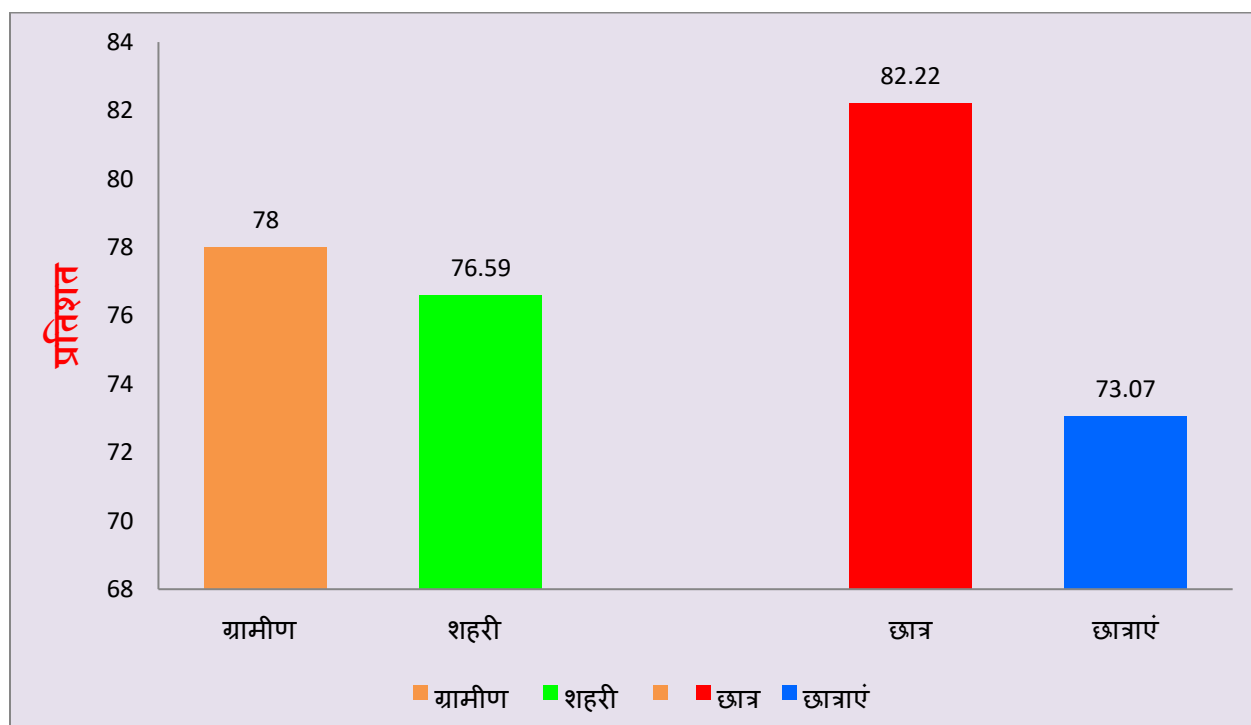
विराम चिहन(,)

विराम चिहन (,) के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.82

विश्लेषण-

- उपर्युक्त विराम चिहन (,) को पचहत्तर प्रतिशत सेअधिक ग्रामीण (78) तथा पचहत्तर प्रतिशत से अधिक शहरी (76.59) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर अस्सी प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(82.22) त्रुटि की गई जबकि सत्तर प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(73.03) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) ',' के स्थान पर '|' का प्रयोग किया गया|
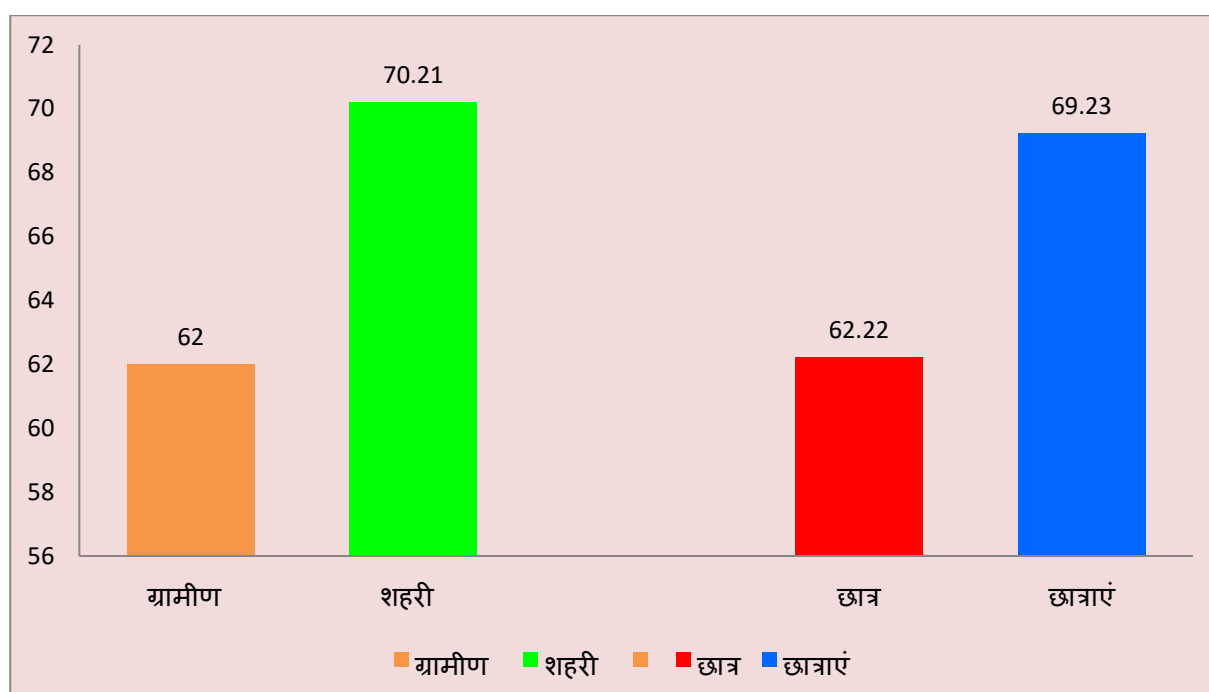
विराम चिहन (,) 2

विराम चिहन (,) (2) के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.83

विश्लेषण-

- उपर्युक्त विराम चिहन (,) को साठ प्रतिशत से अधिक ग्रामीण (62) तथा लगभग सत्तर प्रतिशत से अधिक से शहरी (70.21) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर साठ प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(62.22) त्रुटि की गई जबकि साठ प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(69.23) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) ‘,’ के स्थान पर ‘|’ का प्रयोग किया गया|
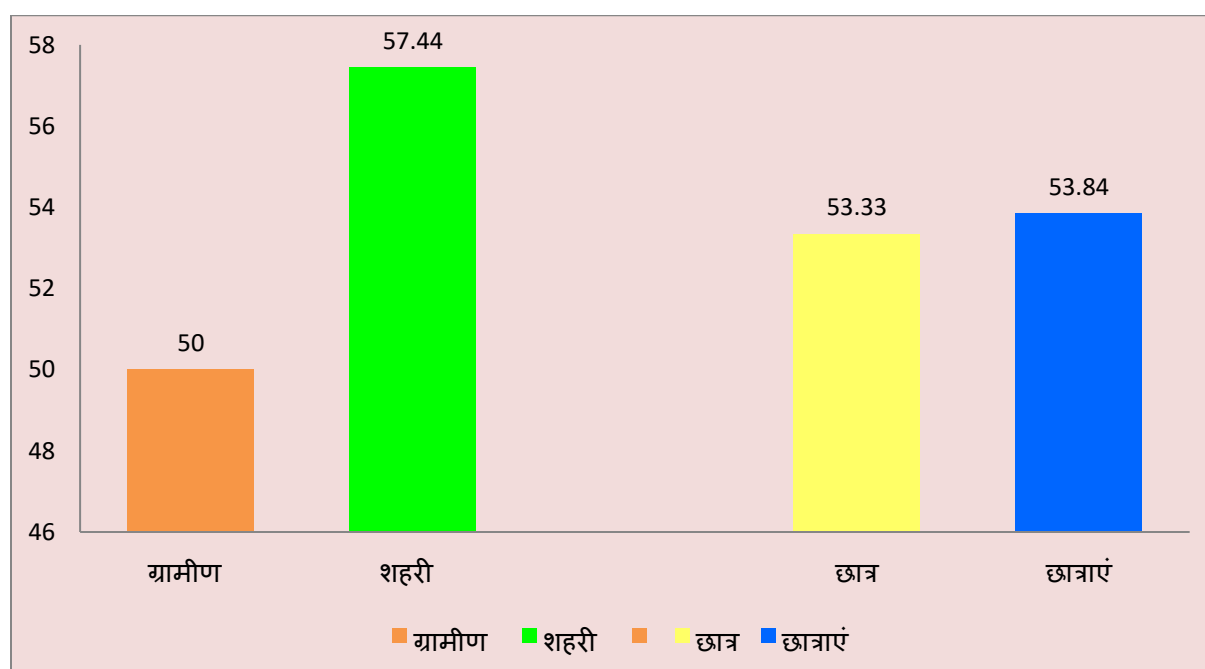
विराम चिहन (,) 3

विराम चिहन (,) (3) के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

चित्र संख्या- 4.84

विश्लेषण-

- उपर्युक्त विराम चिहन (,) को पचास प्रतिशत ग्रामीण (50) तथा लगभग पचास प्रतिशत से अधिक से शहरी (57.44) प्रशिक्षुओं द्वारा अशुद्ध रूप में लिखा गया|
- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन करने पर पचास प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा(53.33) त्रुटि की गई जबकि पचास प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा(53.84) त्रुटि की गई|

विवेचन- उपर्युक्त शब्द में त्रुटि एक ही रूप में दृष्टिगोचर होती है-

(अ) ',' के स्थान पर '|' का प्रयोग किया गया|

उपर्युक्त दिये गए विराम चिहन को लगाने में हुई त्रुटि के अन्तर्गत शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षुओं में अधिक अन्तर है| शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षुओं द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षुओं से अधिक त्रुटियाँ की गई हैं| वहीं दूसरी ओर प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं के बीच बहुत सूक्ष्म अन्तर है| जहां प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा कम त्रुटियाँ की गई हैं, वहीं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं द्वारा की गई त्रुटियों की संख्या अधिक है| अतः इससे स्पष्ट होता है कि शहरी प्रशिक्षुओं की लेखन कौशल दक्षता ग्रामीण प्रशिक्षुओं से उच्च नहीं है| वहीं दूसरी ओर प्रशिक्षु अध्यापिकाओं की लेखन कौशल दक्षता प्रशिक्षु अध्यापकों से उच्च नहीं है|

अशुद्धियों का प्रतिशत विश्लेषण-

- 48.45 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'देशवासियों'** में त्रुटि की है|
- 16.49 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'में'** में त्रुटि की है|
- 34.02 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'जुड़ी'** में त्रुटि की है|
- 38.14 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'छोड़ो'** में त्रुटि की है|
- 42.26 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'वर्षगाँठ'** में त्रुटि की है|
- 68.04 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'हैं'** में त्रुटि की है|

- 27.83 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘छोड़ो’** में त्रुटि की है|
- 16.49 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘देशवासी’** में त्रुटि की है|
- 3.09 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘लड़ते’** में त्रुटि की है|
- 50.51 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘हैं’** में त्रुटि की है|
- 22.68 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘बड़ी’** में त्रुटि की है|
- 23.71 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘छोड़ो’** में त्रुटि की है|
- 74.22 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘ब्रिटिश-राज’** में त्रुटि की है|
- 21.64 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘अनपढ़’** में त्रुटि की है|
- 19.58 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘छोड़ो’** में त्रुटि की है|
- 30.92 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘तवारीख’** में त्रुटि की है|
- 42.26 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘यूसुफ’** में त्रुटि की है|
- 41.23 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘हैं’** में त्रुटि की है|
- 35.05 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘हैं’** में त्रुटि की है|
- 29.89 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘जुड़ते’** में त्रुटि की है|
- 25.77 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘हैं’** में त्रुटि की है|
- 32.89 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘वीरों’** में त्रुटि की है|
- 15.46 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘हैं’** में त्रुटि की है|
- 4.12 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘आन्दोलन’** में त्रुटि की है|
- 3.09 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘महत्वपूर्ण’** में त्रुटि की है|

- 4.12 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'आन्दोलन'** में त्रुटि की है|
- 10.30 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'हिंदुस्तान'** में त्रुटि की है|
- 12.37 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'क्रान्ति'** में त्रुटि की है|
- 10.30 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'महीना'** में त्रुटि की है|
- 8.24 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'क्रान्ति'** में त्रुटि की है|
- 22.68 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'पीढ़ी'** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'क्या'** में त्रुटि की है|
- 27.83 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'पढ़ा'** में त्रुटि की है|
- 2.06 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'देश'** में त्रुटि की है|
- 10.30 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'गाँव'** में त्रुटि की है|
- 7.21 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'कन्धों'** में त्रुटि की है|
- 5.15 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'प्यारे'** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'बात'** में त्रुटि की है|
- 9.27 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'अंग्रेजी'** में त्रुटि की है|
- 13.40 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'जनमानस'** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'जूझते'** में त्रुटि की है|
- 14.43 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'घटनाएँ'** में त्रुटि की है|
- 13.40 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'संघर्ष'** में त्रुटि की है|
- 5.15 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'डॉ.'** में त्रुटि की है|

- 14.43 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'चाहिए'** में त्रुटि की है|
- 3.09 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'कि'** में त्रुटि की है|
- 9.27 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'महीने'** में त्रुटि की है|
- 8.24 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'भव्य'** में त्रुटि की है|
- 4.12 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'मुक्ति'** में त्रुटि की है|
- 5.15 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'अली'** में त्रुटि की है|
- 2.06 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'असहयोग'** में त्रुटि की है|
- 2.06 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'बहुत'** में त्रुटि की है|
- 2.06 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'प्रेरणा'** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'है'** में त्रुटि की है|
- 7.21 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'ने'** में त्रुटि की है|
- 7.21` प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'कन्धा'** में त्रुटि की है|
- 5.15 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'पचहत्तरवीं'** में त्रुटि की है|
- 3.09 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'मनाने'** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'कोने'** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'प्रारम्भ'** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'झेलते'** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'सत्ता'** में त्रुटि की है|
- 2.06 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **'स्वतन्त्रता'** में त्रुटि की है|

- 2.06 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘सहज’** में त्रुटि की है|
- 8.24 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘तपस्या’** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘संकल्पित’** में त्रुटि की है|
- 5.15 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘दिया’** में त्रुटि की है|
- 3.09 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘आजादी’** में त्रुटि की है|
- 2.06 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘भारतीय’** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘महीना’** में त्रुटि की है|
- 6.18 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘मेहर’** में त्रुटि की है|
- 2.06 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘में’** में त्रुटि की है|
- 2.06 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘की’** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘की’** में त्रुटि की है|
- 1.03 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने शब्द **‘आजाद’** में त्रुटि की है|
- 85.56 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने **‘विराम चिहन(|)’** में त्रुटि की है|
- 65.97 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने **‘विराम चिहन (|)’** में त्रुटि की है|
- 55.67 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने **‘विराम चिहन (|)’** में त्रुटि की है|
- 77.31 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने **‘विराम चिहन (,)’** में त्रुटि की है|
- 65.97 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने **‘विराम चिहन (,)’** में त्रुटि की है|
- 53.60 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने **‘विराम चिहन(,)’** में त्रुटि की है|

4.2 परिकल्पनाओं का परीक्षण-

सांख्यिकीय विश्लेषण ने विश्लेषण भाग में प्रमुख भूमिका निभाई है| यह परिकल्पना को सिद्ध करता है और अध्ययन के परिणाम को सामने लाता है| सांख्यिकीय विश्लेषण, मीन, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात की मदद से किया गया है|

परिकल्पना प्रथम- प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं के लेखन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है|

श्रेणी	N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात गणनामान	स्वतंत्रांश (df)	क्रान्तिक अनुपात सारणीमान	सार्थकता स्तर	परिणाम

प्रशिक्षु अध्यापक	45	15.97778	7.840712	1.965171	95	1.984	0.05	सार्थक अंतर नहीं है
प्रशिक्षु अध्यापिकाएँ	52	13.46154	9.084487					

प्रशिक्षु अध्यापक एवं अध्यापिकाओं द्वारा की गई अशुद्धियों का अध्ययन

तालिका संख्या- 4.3

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्रशिक्षु अध्यापकों का मध्यमान 15.97778 तथा प्रशिक्षु अध्यापिकाओं का मध्यमान 13.46154 है तथा परिगणित क्रांतिक अनुपात मान 1.965171 है जो कि स्वतंत्रांश 95 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर क्रांतिक अनुपात के सारणी मान 1.984 से कम है| अतः शून्य परिकल्पना प्रशिक्षु अध्यापकों एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं के लेखन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है,0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है|

परिकल्पना परीक्षण में प्रशिक्षु अध्यापक एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाएँ लेखन कौशल में समान पाये गए|
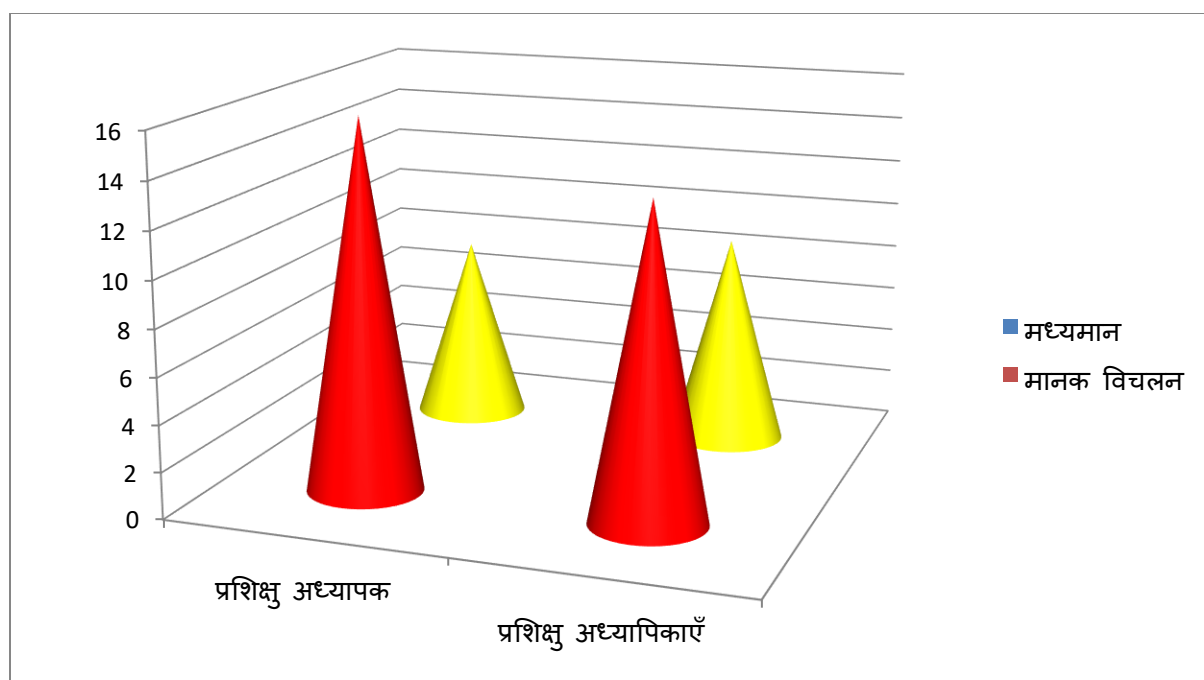
प्रशिक्षु अध्यापक एवं प्रशिक्षु अध्यापिकाओं में लेखन कौशल त्रुटियों का मध्यमान एवं मानक विचलन

चित्र संख्या- 4.85

द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण-

श्रेणी	(N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात गणनामान	स्वतंत्रांश (df)	क्रान्तिक अनुपात सारणीमान	सार्थकता स्तर	परिणाम
ग्रामीण प्रशिक्षु	50	16.26	8.817446	1.46421133	95	1.984	0.05	सार्थक अंतर नहीं है
शहरी प्रशिक्षु	47	12.89362	8.052097					

ग्रामीण तथा शहरी प्रशिक्षुओं की त्रुटियों का अध्ययन

तालिका संख्या- 4.4

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण प्रशिक्षुओं का मध्यमान 16.26 तथा शहरी प्रशिक्षुओं का मध्यमान 12.89362 है तथा परिगणित क्रांतिक अनुपात 1.46421133 है जो कि स्वतंत्रांश 95 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर क्रांतिक अनुपात के सारणी मान 1.984 से कम है| अतः शून्य परिकल्पना ग्रामीण तथा शहरी प्रशिक्षुओं के लेखन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है, 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है| परिकल्पना परीक्षण में ग्रामीण एवं शहरी प्रशिक्षु लेखन कौशल में समान पाये गए|
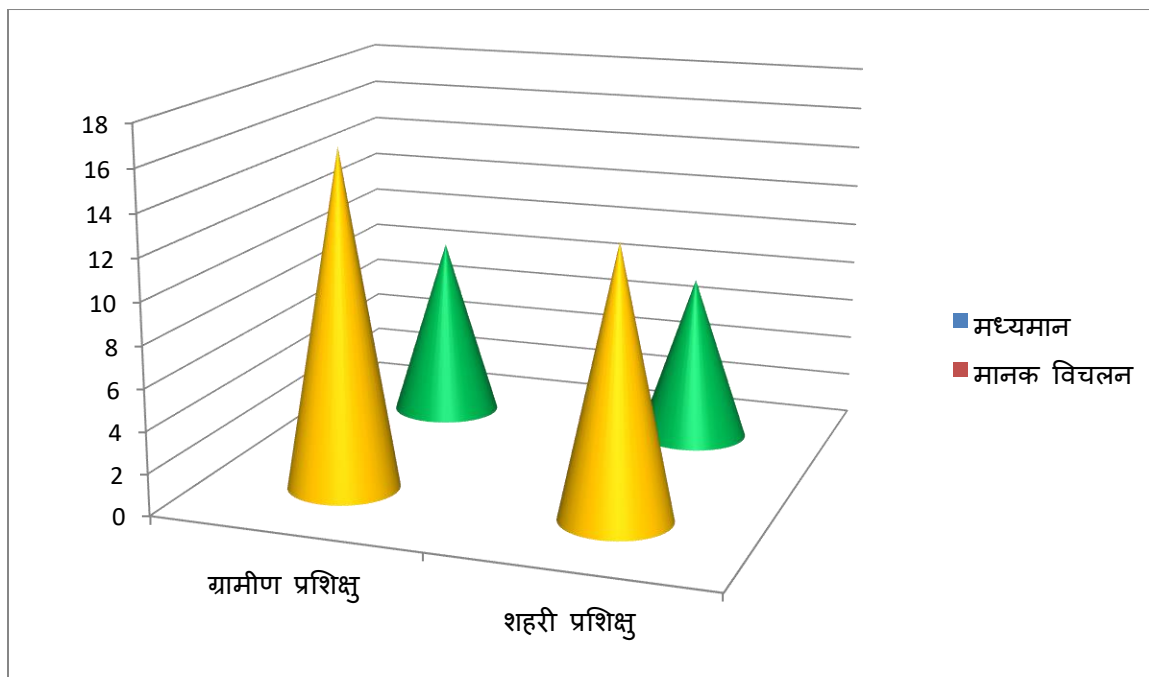
ग्रामीण एवं शहरी प्रशिक्षुओं में लेखन कौशल त्रुटियों का मध्यमान एवं मानक विचलन

चित्र संख्या- 4.86

पंचम अध्याय

निष्कर्ष, उपादेयता एवं सुझाव

5.1 शोध अध्ययन के निष्कर्ष-

"प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में)" शीर्षक वाले इस अध्ययन में प्रभावों के आधार पर अपने उद्देश्यों को सिद्ध किया है| इस अध्ययन में प्रशिक्षुओं से एक श्रुतलेख लिखवाया गया जिसके आधार पर चरों की भूमिका की पहचान की गई है| यह अध्याय अध्ययन में निष्कर्षों को दर्शाता है| यह शोध प्रशिक्षु अध्यापकों में हिंदी लेखन कौशल का परीक्षण करने तथा भविष्य के अध्ययन के लिए दिशा दिखाता है| हिंदी के लेखन कौशल को विभिन्न संरचनाओं (वर्तनी के नियम, वर्तनी की अशुद्धियां, विराम चिहन) को सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया गया है|

- 90 प्रतिशत प्रशिक्षुओं द्वारा किसी ना किसी प्रकार की त्रुटि की गई है|
- लगभग 20 प्रतिशत प्रशिक्षु श्रुतलेख लेखन में अधिक कमजोर हैं|
- लगभग 60 प्रतिशत प्रशिक्षुओं ने अनुस्वार संबंधी त्रुटियां की हैं| वहीं कुछ प्रशिक्षु अनुस्वार और अनुनासिक में भेद नहीं कर पाए |
- विराम चिहन में 90 प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षुओं द्वारा त्रुटियां की गई|
- 70 प्रतिशत प्रशिक्षुओं का हस्त लेख अच्छा नहीं है|
- ज्यादातर विद्यार्थी सामान्य गति के साथ सुंदर लेख नहीं लिख पाते हैं|
- कुछ शिक्षकों द्वारा शिरोरेखा का प्रयोग नहीं किया गया|
- प्रशिक्षओं द्वारा दीर्घ और ह्रस्व मात्रा संबंधी त्रुटि की गई है|
- ज्यादातर प्रशिक्षुओं द्वारा ब्रिटिश-राज शब्द में योजक चिहन संबंधी त्रुटि की गई|

- "हैं" शब्द में ज्यादातर प्रशिक्षुओं ने त्रुटियां कीं|
- ग्रामीण प्रशिक्षुओं द्वारा सर्वाधिक त्रुटियां की गई|
- "देशवासियों" शब्द को लिखने में लगभग आधे प्रशिक्षुओं द्वारा गलतियां की गई|
- कुछ शब्द एक से अधिक बार प्रयोग किए गए जिनमें प्रशिक्षुओं द्वारा एक बार अशुद्ध और एक बार शुद्ध लिखा गया परंतु कुछ प्रशिक्षुओं द्वारा दोनों बाद ही अशुद्ध लिखा गया|

5.2 शैक्षिक उपयोगिता

किसी भी शोध का मुख्य उद्देश्य उस शोध के परिणामों का शिक्षा जगत में व्यावहारिक प्रयोग है| शैक्षिक जगत का आशय है शिक्षक, छात्र, शिक्षा व्यवस्था और समाज| इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध के परिणामों को शिक्षा जगत में अमल में लाया जाए तो लेखन कौशल में आशातीत सुधार की संभावना बनती हैं| वर्तमान में अध्यापक जिन प्रविधियों की सहायता से भाषाई कौशल को विकसित कर रहे हैं में सुधार की आवश्यकता है| लेखन कौशल विकसित करने की विधियां तो हैं पर उनका ज्ञान या तो अध्यापकों नहीं है अथवा उनका प्रयोग नहीं करते| जहां तक शुद्धऔर स्पष्ट लेखन की बात है यह योग्यता तो अनेक डिग्रीधारियों के पास भी नहीं है| इसका मुख्य कारण लेखन सिखाते समय अद्धेता और शिक्षक में जागरूकता की कमी है|

हालांकि प्रस्तुत शोध सम्पूर्ण भाषाई कौशलों के सन्दर्भ में नहीं है| शोधार्थी ने लेखन कौशल को परीक्षण के रूप में लिया है| इसके निष्कर्ष यह प्रमाणित करते हैं कि भाषा अद्धेता और भाषा अध्यापक को इस दृष्टि से सचेत और जागरूक हो जाना चाहिए|

5.3 प्रस्तुत शोध अध्ययन के सुझाव-

किसी क्षेत्र में किया गया कोई भी शोध कार्य तब तक व्यर्थ है, जब तक उससे प्राप्त परिणाम उस क्षेत्र में कम न आ सके| शोधकर्ता ने अपना शोध कार्य प्रशिक्षु शिक्षकों में लेखन कौशल विषय पर बाँदा जिले के विशेष सन्दर्भ में किया है| अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि प्रशिक्षु अध्यापकों द्वारा काफी अधिक मात्रा में त्रुटियाँ की गई| लेखन कौशल को बेहतर बनाने के लिए निम्नलिखित आदर्श सुझाव हैं-

5.3.1 शिक्षकों हेतु सुझाव-

- शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को पढ़ाते समय आने वाले अधिक कठिन शब्दों के विषय में बताया जाना चाहिए|

- शिक्षकों को भाषा ज्ञान के लेखन से संबंधित समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करानी चाहिए|
- प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए जिससे उसका मनोबल बढ़े और अन्य विद्यार्थी भी प्रेरित हो सकें|
- परीक्षकों द्वारा परीक्षा मूल्यांकन में अशुद्धियों को भी अंक देने का आधार बनाना चाहिए|
- शिक्षकों द्वारा पाठ्यपुस्तकों में आने वाली त्रुटियों एवं अशुद्ध बोलने पर उसका उच्चारण सही करना चाहिए|
- हिन्दी में जैसे बोला जाता है वैसे ही लिखा जाता है अतः बोलकर लिखवाने का अधिक प्रयास किया जाना चाहिए|
- कक्षा में लेखन के समय शिक्षक को सभी विद्यार्थियों पर नजर रखनी चाहिए की वह अशुद्ध न लिखे|
- फाउंटेन पैन से लेखन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे सुंदर लेख लिखा जा सके|

5.3.2 विद्यार्थियों हेतु सुझाव

- विद्यार्थियों को भाषाई कौशल विकास पर बल देना चाहिए|
- विद्यार्थियों को शुद्ध लेखन को अधिक महत्व देना चाहिए|
- विद्यार्थियों द्वारा नियमित रूप से लेखन एवं वाचन किया जाना चाहिए| जिससे वह अधिकाधिक शब्दों से परिचित हो सकें|
- विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से लेखन कौशल सम्बन्धी प्रतियोगिताओं में भाग लेना चाहिए|
- विद्यार्थियों को लेखन कौशल के साथ व्याकरण का भी नियमित अभ्यास करना चाहिए| जिससे विराम चिह्नों सम्बन्धी अशुद्धियों को ठीक किया जा सके|

5.3.3 शासन हेतु सुझाव

- परीक्षाओं में अशुद्ध लिखने पर एक तिहाई अंक कटे जाने का प्रावधान किया जाना चाहिए|
- सुंदर एवं शुद्ध लेखन हेतु प्रतियोगिताएं आयोजित कराई जानी चाहिए|
- अच्छे लेखन हेतु विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे अन्य विद्यार्थी भी सुंदर एवं शुद्ध लेखन हेतु प्रोत्साहित किए जा सकें|
- प्रारम्भ से ही फाउंटेन पैन का प्रयोग अनिवार्य किया जाना चाहिए|

- हिन्दी वर्णमाला एवं व्याकरण को विशेष प्रश्नपत्र के रूप में अनिवार्य किया जाना चाहिए|
- सरकार को हिन्दी कम्प्यूटिंग को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, आज इन्टरनेट पर हिन्दी में सामग्री कम होने के साथ-साथ गलत भी रहती है| जिस कारण आज अधिकतर विद्यार्थी गलत लिखने के आदी हो रहे हैं|

5.3.4 अविभावकों हेतु सुझाव

- माता-पिता द्वारा प्रारम्भ से ही बच्चे को सही एवं सुंदर लेखन का अभ्यास कराना चाहिए, जिससे वह अशुद्ध लिखने की समस्या का शिकार न हो सके|
- बालक के शिक्षा ग्रहण करने के साथ ही उसे वर्णमाला का पूर्ण ज्ञान कराया जाना चाहिए|
- अविभावक शुरू से ही बच्चों को सुंदर लेकन का महत्त्व बताएं जिससे कि वह इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम जैसी महत्वपूर्ण स्थान पर पहुँचने के बाद इस प्रकार की गलतियाँ न करें|

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव-

प्रस्तुत शोध सीमित क्षेत्र को लेकर किया गया कार्य है| भविष्य में इस विषय पर शोध की अनेक संभावनाएं बन सकती हैं| जो निम्नवत हैं –

- प्रस्तुत शोध प्रशिक्षण महाविद्यालयों पर किया गया है| इस प्रकार का अध्ययन सामान्य महाविद्यालयों पर किया जा सकता है|
- प्रस्तुत अध्ययन प्रशिक्षु अध्यापकों पर किया गया है| इस प्रकार का अध्ययन प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित विद्यार्थियों पर तुलनात्मक रूप से किया जा सकता है|
- यह अध्ययन पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं पर किया गया है| यह अध्ययन विभिन्न वर्गो(सामान्य तथा अन्य पिछड़ा वर्ग) पर भी किया जा सकता है|
- यह अध्ययन हिन्दी माध्यम के प्रशिक्षुओं पर किया गया है| आगामी शोध अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है|

- यह अध्ययन बी. एड. , डी. एल. एड. , बी. एल. एड. एवं एम. एड. के सम्मिलित प्रशिक्षुओं पर किया गया है| आगामी शोध इनपर अलग-अलग एवं तुलनात्मक रूप से भी किया जा सकता है|
- प्रस्तुत अध्ययन केवल दिवा प्रशिक्षुओं पर किया गया है| भावी शोध आवासीय प्रशिक्षुओं पर किया जा सकता है|
- प्रस्तुत शोध समान्यतः सभी प्रकार के प्रशिक्षुओं पर किया गया है| भावी शोध सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े प्रशिक्षुओं पर भी किया जा सकता है|
- प्रस्तुत शोध प्रशिक्षुओं पर किया गया है| भावी शोध प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है|
- प्रस्तुत शोध अध्ययन हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों तक सीमित है| भावी शोध अंग्रेजी माध्यम, संस्कृत माध्यम एवं उर्दू माध्यम के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है|

संदर्भ ग्रंथ सूची

- कौल लोकेश (2006), शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड|
- गुप्ता, एस. पी. (2017), अनुसंधान संदर्शिका संप्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन|
- सिंह, अरुण कुमार (2015) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास |
- पाण्डेय, पृथ्वीनाथ (2012), प्रामाणिक सामान्य हिन्दी, यूनीक पब्लिकेशन्स सकरपुर दिल्ली |
- बाहरी, हरदेव(2012) हिन्दी भाषा, अभिव्यक्ति प्रकाशन इलाहाबाद|
- प्रसाद, वासुदेव नन्दन(2013), आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, भारती भवन पब्लिकेशन्स पटना|
- चतुर्वेदी, श्रीमती शिखा(2008), हिन्दी शिक्षण (भाषा एवं साहित्य शिक्षण) आर। लाल बुक डिपो, मेरठ|
- शंकर, विवेक, आधुनिक भाषा-विज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी|
- बाहरी, हरदेव, हिन्दी भाषा शब्द-अर्थ प्रयोग, अभिव्यक्ति प्रकाशन इलाहाबाद|
- पाण्डेय, गोविंद,(2014) हिन्दी भाषा एवं साहित्य का इतिहास, अभिव्यक्ति प्रकाशन इलाहाबाद|
- कुमारी, मंजू (2005) मलिन बस्तियों में निवास करने वाले विशिष्ट जाति समूह की लड़कियों का शैक्षिक व्यावसायिक स्तर तथा उनकी शिक्षा के प्रति अभिभावकों का अभिमत. पी०एच०डी०(शिक्षा शास्त्र) शोध- प्रबन्ध दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग आगरा

  < http://hdl.handle.net/10603/207595 >

- मलिक, स्वप्ना,(2009) दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा के कौशल शिक्षण के संदर्भ में प्रचलित वर्तमान प्रविधियाँ: आलोचनात्मक अध्ययन

< https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/24600 >

- दास, राम (2004), उच्च शिक्षा स्तर शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं विषय सजगता के सन्दर्भ में कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट अनुप्रयोग सम्बन्धी कौशलों का अध्ययन. पी०एच०डी० (शिक्षा शास्त्र) शोध-प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

  < http://hdl.handle.net/10603/42968 >

- चरण,श्याम,(2012), हरियाणा राज्य में प्राथमिक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के हिन्दी विषय में सीखने के न्यूनतम स्तर को प्राप्त करने वाली बाधाओं के स्वरूप एवं कारणों का अध्ययन|

  < http://hdl.handle.net/10603/35762 >

- यादव, शिशिर कुमार (2013) बी.एड. के हिन्दी छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण मे सुधार हेतु कार्यक्रमों की रचना एवं उसकी प्रभावशीलता का अध्ययन|

  http://hdl.handle.net/10603/123568 >

- दराडे, श्रीहरी दशरथ(2017), कक्षा 9वीं के छात्रों को हिन्दी विषय के निबंध लेखन में पारंपरिक एवं सृजनशीलता प्रतिमान पद्धति से अध्यापन: एक तुलनात्मक अभ्यास

  http://hdl.handle.net/10603/203352 >

- http://hdl.handle.net/10603/51437 >
- दशरथ, नंदाला बालमणि(2016) स्वामी रामानन्द तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय अंतर्गत आने वाले अध्यापक महाविद्यालयों के छात्र अध्यापकों का हिन्दी भाषा सम्प्रेषण कौशल- एक अध्ययन| http://hdl.handle.net/10603/186340 >

परिशिष्ट- एक

बाँदा जनपद का मानचित्र

परिशिष्ट – दो

श्रुतलेख पत्रक

मेरे प्यारे देशवासियों, अगस्त महीना क्रांति का महीना होता है। सहज रूप से ये बात हम बचपन से सुनते आए हैं और उसका कारण है, 1 अगस्त, 1920 – 'असहयोग आन्दोलन' प्रारंभ हुआ। 9 अगस्त, 1942 – 'भारत छोड़ो आन्दोलन' प्रारंभ हुआ, जिसे 'अगस्त क्रांति' के रूप में जाना जाता है और 15 अगस्त, 1947 – देश आज़ाद हुआ। एक प्रकार से अगस्त महीने में अनेक घटनायें आज़ादी की तवारीख़ के साथ विशेष रूप से जुड़ी हुई हैं। इस वर्ष हम 'भारत छोड़ो' 'Quit India Movement' इस आन्दोलन की 75वीं वर्षगाँठ मनाने जा रहे हैं। लेकिन बहुत कम लोग इस बात को जानते हैं कि 'भारत छोड़ो' – ये नारा डॉ. यूसुफ़ मेहर अली ने दिया था। हमारी नयी पीढ़ी को जानना चाहिए कि 9 अगस्त, 1942 को क्या हुआ था। 1857 से 1942 तक जो आज़ादी की ललक के साथ देशवासी जुड़ते रहे, जूझते रहे, झेलते रहे, इतिहास के पन्ने भव्य भारत के निर्माण के लिए हमारी प्रेरणा हैं। हमारे आज़ादी के वीरों ने त्याग, तपस्या, बलिदान दिए हैं, उससे बड़ी प्रेरणा क्या हो सकती है। 'भारत छोड़ो आन्दोलन' भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण संघर्ष था। इसी आन्दोलन ने ब्रिटिश-राज से मुक्ति के लिये पूरे देश को संकल्पित कर दिया था। ये वो समय था, जब अंग्रेज़ी सत्ता के विरोध में भारतीय जनमानस हिंदुस्तान के हर कोने में, गाँव हो, शहर हो, पढ़ा हो, अनपढ़ हो, ग़रीब हो, अमीर हो, हर कोई कंधे-से-कंधा मिला करके 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का हिस्सा बन गया था। जन-आक्रोश अपनी चरम सीमा पर था। महात्मा गाँधी के आह्वान पर लाखों भारतवासी 'करो या मरो' के मंत्र के साथ अपने जीवन को संघर्ष में झोंक रहे थे। देश के लाखों नौजवानों ने

परिशिष्ट तीन

प्रदत्त संकलन चित्रावली

परिशिष्ट-चार : पूरक परिशिष्ट विवरणिका

प्रदत्त संकलन विवरणिका

श्रुतलेख पत्रकों का संकलन

महाविद्यालय का नाम	प्रशिक्षुओं की संख्या
1. अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा	44
2. मन्नू लाल संस्कृत महाविद्यालय, अतर्रा	32
3. चंद्रशेखर पाण्डेय महाविद्यालय, अतर्रा	21

परिशिष्ट – पाँच

बाँदा जनपद के प्रशिक्षण महाविद्यालयों की सूची

- पं. जवाहर लाल नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा
- अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अतर्रा, बाँदा
- श्री शुकदेव सिंह लवकुश महाविद्यालय, बबेरू बाँदा
- स्व. कामता प्रसाद शास्त्री महाविद्यालय, बदौसा, बाँदा
- एकलव्य महाविद्यालय, दुरैडी रोड, बाँदा
- सीताराम समर्पण महाविद्यालय, बाँदा
- शिवदर्शन महाविद्यालय, कल्यानपुर तिंदवारी, बाँदा
- महर्षि गौतम बुद्ध महिला महाविद्यालय, बबेरू, बाँदा
- राजा देवी डिग्री कालेज, बाँदा
- स्व. गया प्रसाद महाविद्यालय, भभुआ बाँदा
- स्व. श्री प्रहलाद सिंह स्मारक महाविद्यालय, गौरी कलां, जसपुरा बाँदा
- बालाजी महाराज महाविद्यालय, खटपटिहा कलां, बाँदा

- डा. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय, बाँदा
- डा. कमरूद्दीन डिग्री कॉलेज, अकबरपुर, सेवढ़ा, बाँदा
- पं. केदारनाथ राजाराम महाविद्यालय, कमासिन, बाँदा
- गुलाब रानी महाविद्यालय, बदौसा, बाँदा
- राजीव गांधी डी.ए.वी. कॉलेज, बाँदा
- मन्नू लाल संस्कृत महाविद्यालय, अतर्रा, बाँदा
- चन्द्रशेखर पाण्डेय महाविद्यालय, अतर्रा , बाँदा

अच्छा लिखने के लिए अच्छा पढ़ना जरूरी है